



॥ओ३म्॥

● प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं प्रेषित

वैदिक संसार

हिन्दी
मासिक

● वर्ष : ८ ● अंक : ५

● मार्च २०१९

● मूल्य : २५/-

वैदिक संसार अपना शीश झुका नमन करता है, पुलवामा में घटित नृशंस हत्याकाण्ड तथा राष्ट्र धर्म व मानवता की रक्षार्थ आहूत हुए समस्त वीर अमर बलिदानियों को...। परमपिता परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था से प्रदत्त भारत माता के सपूत शूरवीरों को प्राप्त अदम्य शौर्य, वीरता को छीनने की शक्ति किसमें है? असमय काल कवलित हुए जवानों! तुम अपने शेष जाति, आयु, भोग भोगने अवश्य वापसी इस धरा पर आओगे और अपने राष्ट्र धर्म के दायित्वों को पुनः निभाओगे, ठीक उसी तरह जिस अटल विश्वास के साथ पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने अंग्रेज जेलर को फाँसी के तख्ते पर पहुँचने से पूर्व दो टूक उत्तर दिया था। इतिहास साक्षी है, पदे-पदे मानवता की जीत तथा दानवता की हार हुई है। यही ईश्वरीय न्यायकारी व्यवस्था है, वैदिक कर्मफल पुनर्जन्म व्यवस्था है।



पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गुँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली! उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

- माखनलाल चतुर्वेदी



क्षत्र धर्म के योद्धा
वीर अभिनन्दन का
वैदिक संसार परिवार
अभिनन्दन करता है...

आओ! लोकतंत्र के महायज्ञ में आहुति दें

आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि लोकसभा चुनाव में अपने-अपने संसदीय क्षेत्र से जो बन्धु चुनाव लड़ने के इच्छुक हों, उन्हें राष्ट्र निर्माण पार्टी अपने चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़वाएगी। चुनाव लड़ने के इच्छुक आर्यजन पार्टी के दिल्ली कार्यालय में शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

ठाकुर विक्रमसिंह, अध्यक्ष : राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

फोन : ०११-४५७९११५२, २९८४२५२७

मो. ९५९९१०७२०७, ९२९३९५६३६०

सादर आमंत्रण

वैदिक परिणयोत्सव

समज्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।

सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ॥ -ऋग्वेद १०/८५/४७

हे संसार के भद्र महापुरुषों! जैसे नदी, सरोवर, कूप आदि भिन्न-भिन्न स्रोतों से एकत्र किया गया जल मिला देने पर एक हो जाता है, उसमें कोई भेद नहीं रहता; ठीक इसी प्रकार हम दोनों के हृदय जल के समान पवित्र तथा एक होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्दिष्ट वेदोक्त संस्कार विधि विधान से परिणय सूत्र में बँधने जा रहे हैं। हम दोनों का प्राण वा ईश्वर सम्यक धारण करे, जगत् का धारक ईश्वर भले प्रकार धारण करे। आप हमें शुभाशीष प्रदान कर अनुगृहीत करें।

मान्यवर, परम पिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा से विनम्र अनुरोध है कि



सौ.कां. प्रीतिका

सुपौत्री : श्रीमती शान्तिदेवीजी जांगिड
श्री अमरचन्दजी जांगिड
सुपुत्री : श्रीमती दमयन्तिदेवीजी जांगिड
श्री भँवरलालजी जांगिड
ब्यावर (राजस्थान)

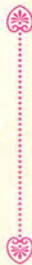


संग



चि. रोहित कुमार

सुपौत्र : श्रीमती कल्पना जी जांगिड
आर्य किशनलाल जी जांगिड
सुपुत्र : श्रीमती सुमन जी शर्मा
श्री राकेश जी शर्मा



सौ.कां. स्तुति

सुपौत्री : स्व. श्रीमती नर्मदा जी शर्मा
स्व. किशनलाल जी शर्मा 'बादशाह'
सुपुत्री : श्रीमती प्रमिला जी शर्मा
स्व. जुगलकिशोर जी शर्मा



संग



चि. अक्षय कुमार

सुपौत्र : श्रीमती कल्पना जी जांगिड
आर्य किशनलाल जी जांगिड
ब्यावर, जनपद : अजमेर (राज.)
सुपुत्र : श्रीमती सुमन जी शर्मा
श्री राकेश जी शर्मा
बानमोर, जनपद : मुरैना (उ.प्र.)

के पाणिग्रहण संस्कार अवसर पर आयोजित

कार्यक्रम

दिनांक : १७ मई (शुक्रवार)

आदर्श गृहस्थी कैसे बने? विषय पर मार्गदर्शन तथा आशीर्वाचन
आचार्य सोमदेवजी आर्य के मुखारविंद से दोप. १ से ४ तक
वैदिक भजन संध्या : रात्रि ७.३० बजे से १० बजे तक
भजनोपदेशक : पं. अमरसिंह विद्या वाचस्पति (ब्यावर)
आ. अंकितजी शास्त्री (दिल्ली), पं. बंशीलालजी आर्य (मन्दसौर)



दिनांक : १८ मई (शनिवार)

विवाह संस्कार : प्रातः ८.०० बजे से
(पं. सत्येन्द्र जी आर्य, पिपलिया मण्डी के पौरोहित्य में)
प्रीतिभोज : प्रातः १२.३० बजे से आपके आगमन तक
स्थान : विश्वकर्मा भवन, ब्रह्मानन्द मार्ग
मेवाड़ी गेट के बाहर, ब्यावर (राज.)

उपरोक्त मांगलिक प्रसंग पर समस्त स्नेही महानुभावों की उपस्थिति सपरिवार सादर प्रार्थनीय है।

विनम्र अनुरोधकर्ता

वधु पक्ष

गिरधारीलाल शर्मा (ताऊजी), श्रीमती प्रमिला शर्मा (माता)
जवाहर शर्मा, महेन्द्र कुमार शर्मा (काकाजी)
एवं समस्त खण्डेलवाल परिवार
फर्म : किशनलाल एण्ड सन्स, सेन्धवा (म.प्र.)

विशेष विनम्र आग्रह : सुखदेव शर्मा (स्तुति के मामा), प्रकाशक : वैदिक संसार, इन्दौर (म.प्र.)

वधु पक्ष

अमरचन्द जांगिड
भँवरलाल जांगिड
मनोहरलाल जांगिड
एवं समस्त देपड़ा परिवार

वर पक्ष

माँगीलाल जांगिड, किशनलाल जांगिड
नेमीचन्द जांगिड, राकेश शर्मा,
अमरचन्द जांगिड एवं समस्त किंजा परिवार
फर्म : प्रेम इन्टरप्राइजेस

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी



वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन

२०१२/४५०६९

डाक पंजीयन : एमपी/आईडीसी/२०१८-२०

वर्ष : ८, अंक : ०५

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मार्च, २०१९

आर्ष तिथि : चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी

सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२९

शक सम्वत् : १९४९

विक्रम सम्वत् : २०७६, दयानन्दाब्द : १९६

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक

सुखदेव शर्मा, इन्दौर ०९४२५०६९४९९
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक

गजेश शास्त्री, इन्दौर (म.प्र.)

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता

१२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष) :	२५,०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष) :	२५,००/-
पंचवार्षिक सहयोग :	११,००/-
त्रैवार्षिक सहयोग :	७००/-
वार्षिक सहयोग :	३००/-
एक प्रति :	२५/-
अन्य सहयोग :	स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक- वैदिक संसार

भारतीय स्टेट बैंक

शाखा : ओल्ड पलासिया, इन्दौर

चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९

आईएफएससी : एसबीआईएन०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : 'वैदिक संसार'

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
वेद मन्त्र : भावार्थ एवं वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व-दिवस, जयन्तियाँ-पुण्यतिथियाँ	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
कार्य दोजख के और सपने जन्नत के...	सम्पादकीय	०५
हमारी महान विभूति- महात्मा हंसराज	आ. चन्द्रशेखर शास्त्री	०९
महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार ऋग्वेद ज्ञानागार ...	पं. सत्यपाल शर्मार्थ	१०
मुक्तक	राधेश्याम गोयल	११
मोदी कीर्ति चालीसा	अम्बालाल विश्वकमार्य	११
ईश्वर समर्पण से मोक्ष प्राप्ति	महात्मा चैतन्य मुनि	१२
देवपुरुष श्रीराम और अत्याचारी बाबर	पं. नन्दलाल निर्भय	१७
आर्य समाज में आईये	ओमप्रकाश आर्य	१७
जीवन खो नहीं	रीना गुप्ता	१७
ज्ञान और आनन्द	डॉ. सत्यदेव सिंह	१४
जीवन में संस्कारों की आवश्यकता	पं. हरिशंकर अग्निहोत्री	१९
ज्योतिष पाठ धारावाहिक (भाग-२)	आ. दार्शनिय लोको	१८
आर्य समाज के नियमों में वेद	डॉ. अशोक आर्य	२१
सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये	सुमन कुमार वैदिक	२३
महाभारत के पश्चात् का यथार्थ दर्शन,.....	स्वामी हरिश्चरानन्द सरस्वती	२४
आपातकालीन हृदयगति रुकने पर प्रथम उपचार	डॉ. प्रेमनारायण शर्मा	२७
अमरूद (अमृत फल)	हरिश्चन्द्र आर्य	२७
भारत का विभाजन और कश्मीर का सच	वरसिंह सोनी	२८
सुख का आधार : गृहस्थ आश्रम	डॉ. अशोक आर्य	२९
सैद्धान्तिक चर्चा (भाग-३)	पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्री	३१
शुभाशीर्वाद	मोहनलाल दशोरा	३१
केन्द्रीय विद्यालयों में परमात्मा की प्रार्थना पर रोक	आ. श्रुति भास्कर	३३
परम पिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा...	सुखदेव शर्मा	३४
संरक्षक सदस्य श्री ओमप्रकाशजी शर्मा	सुखदेव शर्मा	३५
पाकिस्तान दिवस विशेष एवं कर्नाटक में शिवभक्त	इन्द्रदेव गुलाटी	३७
मुँह तोड़ जवाब देना है हमको पाजी पापीस्तान को	डॉ. लक्ष्मीनिधि	३७
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	३८
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	३९
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	४०
शोक सूचनाएँ	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् इन्द्रेहि मत्स्यन्दसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महौ अभिष्टिरोजसा।। - ऋ. १.१.१

भावार्थ : जैसे ईश्वर इस संसार के परमाणु-परमाणु में व्याप्त होकर सब की रक्षा निरन्तर करता है, वैसे ही सूर्य भी सब लोकों से बड़ा होने से अपने सम्मुख हुए पदार्थों को आकर्षण वा प्रकाश करके अच्छे प्रकार स्थापन करता है।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त के माह अप्रैल २०१९ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

११ गते माधव मास १९४१ शक सं.	चैत्र कृष्ण द्वादशी २०७६	०१ अप्रैल	गुरुतेग बहादुर जयन्ति
१३ गते माधव मास १९४१ शक सं.	चैत्र कृष्ण त्रयोदशी २०७६	०३ अप्रैल	छत्रपति शिवाजी पुण्यतिथि
१६ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा २०७६	०६ अप्रैल	पंचक समाप्त- २६:४१, आर्य समाज स्थापना दिवस
१७ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७६	०७ अप्रैल	विश्व स्वास्थ्य दिवस
१८ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल तृतीया २०७६	०८ अप्रैल	परशुराम जयन्ति, मंगल पाण्डे तथा बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय पुण्यतिथि
२० गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल पंचमी २०७६	१० अप्रैल	आदि शंकराचार्य जयन्ति, मोरारजी देसाई पुण्यतिथि
२१ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल षष्ठी २०७६	११ अप्रैल	महात्मा ज्योतिबा फूले जयन्ति
२४ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल नवमी २०७६	१४ अप्रैल	रमण महर्षि पुण्यतिथि
२५ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल दशमी २०७६	१५ अप्रैल	क्षय तिथि एकादशी- २८:२८, परशुराम द्वादशी, गुरु नानक व अर्जनदेव जयन्ति, दानवीर भामाशाह जयन्ति
२६ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल द्वादशी २०७६	१६ अप्रैल	पूर्वाफाल्गुन- २७:४०
२७ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी २०७६	१७ अप्रैल	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पुण्यतिथि
२८ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी २०७६	१८ अप्रैल	विश्व धरोहर दिवस
२९ गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा २०७६	१९ अप्रैल	चित्रा- ०९:०५, आदि शंकराचार्य पुण्यतिथि, बुद्ध जयन्ति, म. हसराम जयन्ति
३० गते माधव मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा २०७६	२० अप्रैल	नारद जयन्ति, वृषभ सक्क्रान्ति- १४:२६
०१ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण द्वितीया २०७६	२१ अप्रैल	महात्मा हंसराज पुण्यतिथि
०२ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण तृतीया २०७६	२२ अप्रैल	विश्व पृथ्वी दिवस
०४ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण पंचमी २०७६	२४ अप्रैल	पूर्वाषाढ़- २८:४१, रामधारीसिंह दिनकर पुण्यतिथि, राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस
०६ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण सप्तमी २०७६	२६ अप्रैल	गुरुदत्त विद्यार्थी जयन्ति, श्रीनिवास
रामानुज पुण्यतिथि			
०७ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण अष्टमी २०७६	२७ अप्रैल	पंचक प्रारम्भ- २४:३२
०८ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण नवमी २०७६	२८ अप्रैल	सुभाषचन्द्र बोस पुण्यतिथि
०९ गते शुक्र मास १९४१ शक सं.	वैशाख कृष्ण दशमी २०७६	२९ अप्रैल	पं. मदनमोहन मालवीय पुण्यतिथि

भारत के
एकमात्र वैदिक
पंचांग से

नवीन पंचांग छप चुका है,
अतिशीघ्र मँगवाएँ,
लाभ उठाएँ

किसी भी शंका-समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनिक लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्रोतों से प्राप्त अप्रैल माह के कुछ विशेष दिवस

- ०१ वित्तीय वर्ष प्रारम्भ
- ०३ स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी पुण्यतिथि
- ०६ महाशय राजपाल बलिदान दिवस
- ०७ अन्ध रोग निवारण दिवस
- ०८ विश्व बंजारा दिवस
- १० डॉ. हेनीमेन जयन्ति
- १३ 'जलियावाला बाग' नृशंस हत्याकाण्ड दिवस
- १४ अग्नि शामक दिवस
- १४ डॉ. अम्बेडकर जयन्ती
- १८ तात्या टोपे बलिदान दिवस
- १८ पुरातत्व संरक्षण दिवस
- २३ विश्व क्षय रोग निवारण दिवस
- २६ सिक्किम राज्य स्थापना दिवस

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि-मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्त्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल
- सद-साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

कार्य दोजख के और सपने जन्नत के...

दिनांक १४ फरवरी को जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. ४४ पर पुलवामा जिले के अवन्तिपोरा के निकट लेथपोरा क्षेत्र में सी.आर.पी.एफ. के काफिले पर कायराना हमला कर नृशंस हत्याकाण्ड के द्वारा उन ४४ सैनिकों के प्राणों को हर लिया गया और लगभग ३० शूरवीरों को मृत्यु के दरवाजे की ओर धकेल दिया जो अपने घर-परिवार से कोसों दूर दुर्गम क्षेत्र में, मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उफ़ तक न करते हुए भूख-प्यास का वरण कर एक तपस्या कर रहे थे। वह तपस्या भी बगैर किसी जाति, मत-पन्थ, सम्प्रदाय तथा विचारधारा के भेदभाव से ऊपर उठकर लगभग १३५ करोड़ देशवासियों और इस देश में दुनिया के कोने-कोने से पधारे अतिथियों की सुरक्षा की। इन निर्भिक शूरवीरों की तपस्या का ही प्रतिफल है कि इस देश का प्रत्येक मनुष्य और इस देश में अन्यत्र स्थानों से पधारे अतिथि निश्चिन्तता के साथ चैन की नींद सोते हैं। और ये वे शूरवीर हैं जिन्होंने अपने क्षत्रिय धर्म के पालनार्थ अपने प्राण होम कर दिए अथवा अपने शरीरों को क्षत-विक्षत करवा डाला। ये शूरवीर जवान जियो और जिने दो के अटल विश्वासी थे। इन्होंने अपने क्षत्रिय धर्म का पालन पूर्ण निष्ठा तथा मर्यादा में रहकर निर्लिप्त भाव से किया। इन्होंने जन्नत तथा स्वर्ग के झूठे स्वप्न नहीं देखे। इन्होंने अपने देश की सीमा से बाहर जाकर शत्रुता का भाव रखने वाले अन्यत्र देश के प्राणियों और सुरक्षा बलों पर छद्म कायराना हमला करना तो दूर, कभी इस विषय की खरपतवार को उपजने भी नहीं दिया। अन्यत्र देश-स्थानों के तो ठीक इस पुण्य-पवित्र भूमि के अन्न-जल का सेवन कर दूषित विचारधारा में पलने वाले संपोलों के विरुद्ध भी बगैर किसी उकसावे की कार्रवाई के अपनी मनोभूमि में कोई शत्रु भाव अंकुरित नहीं होने दिया। ऐसे क्षात्र धर्म के योद्धाओं को अकारण केवल और केवल जन्नत के झूठे सब्जबाग से ग्रसित हो मौत के मुँह में धकेल देना अत्यन्त घृणित, कायराना तथा निन्दनीय कर्म है जिसकी जितनी निन्दा की जाए कम है।

उपरोक्त नृशंस हत्याकाण्ड करवाने का श्रेय इस्लाम के पैरोकार संगठन जैश ए मोहम्मद ने लिया है तथा इस संगठन के कायर सदस्य वकास उर्फ आदिल अहमद डार का एक वीडियो सन्देश सामने आया है। जो इस अमानवीय संगठन जैश ए मोहम्मद के झण्डे तले विध्वंसकारी सामग्री के साथ बैठा कह रहा है कि 'जब तक यह सन्देश तुम्हारे पास पहुँचेगा मैं जन्नत में मजे लूट रहा होंगा।'

अरे जन्नत में जाना चाहते हो, खुदा के प्यारे बनना चाहते हो, खुदा के नुमाइंदे बन खुदा का कार्य कर रहे हो तो कायरों की तरह छुपकर निरिह, निर्दोष, निहत्थे, लोगों के ऊपर हमले क्यों कर रहे हो तथा मोद में छुपकर हमले क्यों कर पा रहे हो? छाती ठोककर सामने मैदान में आकर ताल ठोककर सामना करो, छठी का दूध और नानी-दादी का स्मरण न हो जाए तो हमारे जाँबाजों श्रीराम, श्रीकृष्ण, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, पृथ्वीराज चौहान के वंशज मत कहना जिन्होंने रावण, कंस, अकबर, अफजल खां, मोहम्मद गौरी जैसे दुष्ट दुराचारियों को फाड़कर रख दिया तथा उनकी नींद उड़ाकर उनके स्वप्न धुल धुसरित कर दिए।

अरे घर के भेदिये लंका ढहाने वालो! परमपिता परमात्मा ने मनुष्य योनि में उत्पन्न किया है, बुद्धि नाम का तत्व दिया है, मननशीलता का गुण दिया है इन सबका थोड़ा सा भी उपयोग कर विचार करो धर्म-अधर्म

क्या है? जिसे तुम खुदा कहते हो उस परमपिता परमात्मा की राह क्या है? दोजख और जन्नत क्या है और ये कैसे मिलते हैं? परमपिता परमात्मा ने तुम्हें मनुष्य उत्पन्न किया अथवा मुसलमान? यह पृथ्वी परमपिता परमात्मा ने आर्यों को दी है अथवा मुसलमानों को? इस्लाम का जन्म आर्यावर्त की सुवर्ण भूमि पर हुआ अथवा अरब की रेतीली बियावान भूमि पर? इस्लाम के पैरोकारों तुम्हारे पूर्वज आर्य थे अथवा मुसलमान?

धर्म-अधर्म क्या है? जिस-जिस कार्य को करने में प्रत्येक मनुष्य को अपने अन्तरमन में प्रसन्नता, उत्साह, साहस उत्पन्न होता है वह कार्य धर्म कहलाता है। ऐसे कार्यों को करने में भय, लज्जा, संकोच उत्पन्न नहीं होता अपितु आत्मबल की वृद्धि होती है। सुरक्षा कर्मियों द्वारा किया जाने वाला कार्य धर्म है और बगैर किसी कारण के छुपकर, निरिह, निर्दोष, निहत्थे व्यक्ति पर प्राणघातक वार करना, अपनी बुद्धि का उपयोग न कर किसी अन्य के बहकावे में बहक जाना तथा अपनी अज्ञानता को दूसरों पर थोपने का दिवास्वप्न देखना और उसके लिए बलात् प्रयास करना जिनको करने में भय, लज्जा, संकोच उत्पन्न होते हैं ऐसे कार्य अधर्म कहाते हैं।

जिसे तुम खुदा कहते हो, उस परम पिता परमात्मा की राह क्या है? जियो और जीने दो परमपिता परमात्मा की राह है। जन्म-मृत्यु का प्रदाता परमपिता परमात्मा है। जीवन उसने प्रदान किया है तो प्रत्येक प्राणी के जीवन का अन्त उसकी व्यवस्थानुसार निश्चित है। जब आप किसी को जीवन दे नहीं सकते तो उसे लेने का आपको क्या अधिकार है? जियो और जीने दो का सिद्धान्त मानवतावादी है और परमात्मा की व्यवस्था के अनुकूल है जबकि अपनी विचारधारा को स्वैच्छानुसर स्वीकार नहीं करें तब भी बलात् अपनी विचारधारा में चलाने तथा अपनी विचारधारा का साम्राज्य सम्पूर्ण पृथ्वी पर स्थापित करने का दृष्टिकोण अमानवीय और परमपिता परमात्मा की व्यवस्था के प्रतिकूल है क्योंकि जब परमपिता परमात्मा किसी भी जीवात्मा की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं कर अपनी दबंगई नहीं थोपता तो तुम कौन होते हो यह दबंगई थोपने वाले कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर इस्लाम का साम्राज्य और शरियत का ही कानून हो तथा जो इस्लाम की विचारधारा में विश्वास न लाए उसे जीने का अधिकार नहीं।

दोजख और जन्नत क्या है तथा कैसे मिलते हैं? जहाँ तक सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास के आलोक में हमने इस मत की सर्वमान्य खुदाई पुस्तक कुरान में उल्लेखित शिक्षा तथा जन्नत की सैर की है वह इस प्रकार है-

६०-और अपने हाथों को न रोके तो उनको पकड़ लो और जहाँ पाओ मार डालो। मुसलमान का मुसलमान को मारना योग्य नहीं जो कोई अनजाने में मार डाले बस एक गर्दन मुसलमान का छोड़ना है और खून बहा उन लोगों की ओर सौपी हुई जो उस कौम से होवे, और तुम्हारे लिये दान कर देवे, जो दुश्मन की कौम से। और जो कोई मुसलमान को जानकर मार डाले वह सदैव काल दोजख में रहेगा, उस पर अल्लाह का क्रोध और लानत है। म.१, सि.५, सू. ४, आ. ९१/९२/९३

६३- निश्चय अल्लाह बुरे लोगों और काफिरों को जमा करेगा दोजख में। निश्चय बुरे लोग धोखा देते हैं अल्लाह को और उनको वह धोखा देता है। ऐ इमान वालों! मुसलमानों को छोड़ काफिरों को मित्र मत बनाओ। म.१, सि.५, सू.४, आ. १४०/१४२/१४४

८९- ऐ लोगों जो इमान लाये हो लड़ो उन लोगों से कि पास तुम्हारे है काफिरों से और चाहिये कि पावे बीच तुम्हारे दृढ़ता॥ क्या नहीं देखते यह कि वे बलाओं में डाले जाते हैं बीच हर वर्ष के एक बार वा दो बार॥ फिर वे नहीं तौबा करते हैं और न वे शिक्षा पकड़ते हैं॥ म. २, सि. ११, सू. ९, आ. १२३/१२४

१४२- बस जब मिलो उन लोगों से कि काफिर हुए बस मारो गर्दन उनकी यहाँ तक कि जब चूर कर दो उनको बस दृढ़ करो कैद करना॥ और बहुत बस्तियाँ हैं कि वे बहुत कठिन थी शक्ति में बस्ती तेरी से, जिसने निकाल दिया तुझको मारा हमने उनको, बस न कोई हुआ सहाय देने वाला उनका॥ तारिफ उस बहिश्त की कि प्रतिज्ञा किए गए हैं परहेजगार, बीच उसके नहरें हैं बिन बिगड़े पानी की और नहरें हैं दूध की कि नहीं बदला मजा उनका, और नहरें हैं शराब का मजा देने वाली वास्ते पीने वालों के और नहरें हैं शहद साफ किए गए की और वास्ते उनके बीच उसके मेवे हैं प्रत्येक प्रकार से दान मालिक उनके से॥ म. ६, सि. २६, सू. ४७, आ. ४/१३/१५

१४३- जबकि हिलाई जावेगी पृथिवी हिलाए जाने कर॥ और उड़ाये जावेगे पहाड़ उड़ाये जाने कर॥ बस हो जावेगे भुनगे टुकड़े-टुकड़े॥ बस साहब दाहिनी ओर वाले क्या है साहब दाहिनी ओर के॥ और बाई ओर वाले क्या है बाई ओर के॥ उपर पलङ्ग सोने के तारों से बुने हुए हैं॥ तकिए किए हुए हैं ऊपर उनके आमने-सामने॥ और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के सदा रहने वाले। साथ आबखोरों के और आफताबों के और प्यालों के शराब साफ से॥ नहीं माथा दुखाये जावेगे उससे और न विरुद्ध बोलेंगे॥ और मेवे उस किस्म से कि पसन्द करें॥ और वास्ते उनके औरतें हैं अच्छी आँखों वाली॥ मानिन्द मोतियों छिपाये हुआ की॥ और बिछोने बड़े॥ निश्चय हमने उत्पन्न किया है औरतों को एक प्रकार का उत्पन्न करना है॥ बस किया है हमने उनको कुमारी॥ सुहाग वालियाँ॥ बस भरने वाले हो उस पेटों को॥ बस कसम खाता हूँ मैं साथ गिरते तारों के॥ म. ७, सि. २७, सू. ५६, आ. ४/५/६/८/९/१५/१६/१७/१८/१९/२०/२१/२२/२३/३३/३४/३५/३६/३७/३८/५३

परमपिता परमात्मा ने मनुष्य बनाया अथवा मुसलमान? यह प्रश्न अति विचारणीय है। परमपिता परमात्मा ने असंख्य प्राणियों में एकमात्र मानव नाम प्राणी को उत्पन्न किया, इसे मननशीलता का गुण प्रदान किया, मननशील होने से यह मनुष्य कहाया। मननशीलता का उपयोग कर मानव जाति में उत्पन्न प्राणी यह निर्णय कर सकता है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं? जो-जो कर्म उसके हित के साथ अन्य प्राणियों को भी सुख-सन्तुष्टिकारक है, वे अच्छे और अच्छे होने से धर्म की श्रेणी में आते हैं जबकि जो कर्म चाहे स्वयं का हित साधने वाले हो तथा स्वयं को सन्तुष्टि प्रदान करते हो किन्तु औरों को दारुण दुःख देते हो अथवा असन्तोष प्रदान करते हो वे सभी कर्म अधर्म कहाते हैं। इस प्रकार अपने कर्मों के आधार पर एकमात्र मानव जाति का प्राणी ही अपनी मननशीलता का उपयोग कर धर्म-अधर्म का निर्णय कर सकता है और ऐसा प्राणी एक समान शारीरिक संरचना अनुसार उत्पन्न होता है न कि कोई अन्य। मुसलमान व्यक्ति उत्पन्न नहीं होता बल्कि बनता है। परमपिता परमात्मा की व्यवस्थानुसार उसकी आज्ञाओं पर चलने वाला उसका श्रेष्ठ अनुयायी अगर मुसलमान पैदा होता है तो मुसलमान से इतर अन्य मनुष्य को परमपिता परमात्मा ने मुसलमानों से भिन्न टेढ़े-मेढ़े, आधे-अधूरे बनाना चाहिए और अगर ऐसा नहीं है तो स्वयं सिद्ध है कि परमपिता परमात्मा ने मानव उत्पन्न किया है जिसे मननशीलता दी है जो मननशीलता के आधार पर श्रेष्ठ कर्म को कर मनुष्य

कहाये अन्यथा वह मानव होते हुए भी पशु के समान ही है।

यह पृथ्वी परमपिता परमात्मा ने आर्यों को दी है अथवा मुसलमानों को? संसार की सबसे प्राचीन सर्वमान्य प्रथम पुस्तक ऋग्वेद के चौथे मण्डल के छबिसवें सूक्त का द्वितीय मन्त्र कहता है- **अहं भूमिमददामार्याय...** अर्थात् मैंने यह भूमि आर्यों को दी है। आर्य गुण वाचक नाम है और यह पशुओं को नहीं, केवल और केवल मनुष्य को प्रदान किया जाता है। जो मनुष्य गुण-कर्म-स्वभाव से श्रेष्ठ है वह आर्य है। दूसरे शब्दों में मानवीय गुणों से युक्त आर्य है तथा इसके विपरीत अनार्य है। इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि जिसमें मानवीयता नहीं है अथवा जो मानवीय धर्म (मूल्यों) का पालन नहीं कर रहा वह अनार्य है। दूसरे शब्दों में वह शरीर से तो मनुष्य है किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से पशु ही है। परमपिता परमात्मा ने यह भूमि आर्यों को दी तो प्रश्न उपस्थित होता है क्या परमपिता परमात्मा ने पशुओं और पशु रूप अनार्यों को यह भूमि नहीं दी जबकि इसका सर्वाधिक उपभोग वे भी करते हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा ने इन्हें भी इस पृथ्वी पर उत्पन्न किया है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ये प्राणी भोग तो कर रहे हैं किन्तु दण्ड रूपी भोग भोग रहे हैं न कि अपवर्ग की प्राप्ति कर रहे हैं अर्थात् अपने जीवन का सदुपयोग, इस जीवन का सदुपयोग मानव जाति में उत्पन्न श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव का प्राणी ही कर परमपिता परमात्मा के आनन्द की प्राप्ति कर सकता है, अच्छी आँखों वाली स्त्रियाँ, लौण्डे और शराब की नदिया बहने वाली जन्नत भोगने का आसक्त व्यक्ति नहीं! परमपिता परमात्मा के आनन्द की प्राप्ति का एकमात्र स्रोत वैदिक स्वर्ग की प्राप्ति सांसारिक भोगों से ऊपर उठ चुका व्यक्ति ही कर सकता है अज्ञानता से ग्रसित तथा भोगों में लिप्त व्यक्ति नहीं!!

ब्राह्मण ग्रन्थों में आर्य-अनार्यों के मध्य इस भूमि विवाद को अत्यन्त सुन्दर रीति से सुलझाया गया है। वहाँ लिखा है- एक बार देवों तथा असुरों में भूमि के सम्बन्ध में झगड़ा हुआ। सारी भूमि पर असुरों ने अधिकार कर लिया। देवों ने यज्ञ को आगे किया और असुरों से कहा- हमें यज्ञ के लिए भूमि दो। यज्ञ तो बहुत छोटा था। असुरों ने भूमि दे दी। बस, फिर क्या था। यज्ञ बहुत बढ़ गया। सारी भूमि पर आर्यों का अधिकार हो गया। वहाँ लिखा है- असुरों की हार का कारण स्वार्थ और देवों की विजय का मूल था- स्वार्थ त्याग। कहा भी गया है, यज्ञों वै विष्णु अर्थात् यज्ञ सर्वव्यापक है। संसार के समस्त परोपकारी कार्य यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। यज्ञशील बनो अर्थात् परोपकारी बनो।

सुन्दर स्त्रियों, लड़कों को भोगना, शराब का सेवन करना, झूलों पर झूलना, सूखे मेवों को खाना, सोने के तारों से बने पलंग तथा गद्दों पर सोना आदि कार्य आत्मा (रूह) नहीं करती। ये कार्य तो शरीर से ही सम्भव है और शरीर का धारण तो पृथ्वी पर ही किया जाता है अर्थात् इस्लामिक जन्नत और पृथ्वी में कोई अन्तर नहीं है। जन्नत के विपरीत दोजख है अर्थात् दुःख, अभाव ये भी शारीरिक इन्द्रियों के माध्यम से आत्मा द्वारा अनुभूत किए जाने वाले भोग हैं जब शरीर ही नहीं तो काहे की सुख-सुविधा, विलासिता तथा काहे का दुःख, काहे की पीड़ा, काहे का अभाव इससे सिद्ध है कि इस्लामिक विचारधारा पर आधारित जन्नत और दोजख इस पृथ्वी पर ही भोगे जाने वाली परिकल्पनाएँ हैं जो शारीरिक रूप से ही सम्भव है जबकि वैदिक स्वर्ग इससे कहीं श्रेष्ठतम मानव जीवन का सदुपयोग कर सांसारिक भोगों से ऊपर उठकर परमपिता परमात्मा के आनन्द में जीवात्मा का निःमग्न हो जाने वाला सोपान है। इससे सिद्ध है कि इस पृथ्वी का श्रेष्ठतम सदुपयोग कोई करता है तो वह श्रेष्ठ गुण-कर्म स्वभाव युक्त मानव जाति में उत्पन्न प्राणी ही है जिसे वेदानुसार आर्य नाम

से सम्बोधित किया गया है।

इस्लाम का जन्म आर्यावर्त की सुवर्ण भूमि पर हुआ अथवा अरब की रेतीली बियाबान भूमि पर? यह पावन भूमि आर्यों का निवास स्थान होने से आर्यावर्त नाम से सुविख्यात थी। वेद, आर्य और आर्यावर्त मानव जाति के वे गौरवमयी नाम हैं जब इस पृथ्वी पर मानव जाति की उत्पत्ति हुई थी और सहस्रों नहीं अपितु लगभग दो अरब वर्षों तक सम्पूर्ण पृथ्वी पर अन्य किसी भी विचारधारा का जन्म भी नहीं हुआ था जिसमें से इस्लाम भी एक है। प्रारम्भ से जो काबिज होता है उसका अधिकार होता है और जो बाद में आकर अधिकार जमाता है या जमाने का प्रयास करता है वह अतिक्रामक, अतिक्रमणकर्ता कहलाता है। संसार की प्रथम सर्वमान्य पुस्तक अनुसार परमपिता परमात्मा ने यह भूमि आर्यों को दी है। इतिहास में भी स्पष्ट रूप से अंकित है कि यह तथाकथित हिन्दुस्तान, खण्ड-खण्ड भारत देश का पूर्व नाम आर्यावर्त है अतः इसके वास्तविक उत्तराधिकारी हैं तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव के मानव न कि अन्य कोई और। अगर कोई अपना आधिपत्य जमाने अथवा जताने का प्रयास करता है तो वह अतिक्रामक है, अतिक्रमणकर्ता है, अनार्य है, अमानवीय है, अधर्मी है, दोख (नर्क) गामी है। समुद्र के मध्य, अनुपजाऊ, रेतीले क्षेत्र अरब के नंगे-भूखे, मानवीय सभ्यता से कोसों दूर जंगली लोगों को सभ्य बनाने के उद्देश्य से प्रस्फुटित मानव जनित विचारधारा जिसका इतिहास ही 'खूनी इतिहास' रहा है। इस विचारधारा का नाम इस्लाम है यह धर्म नहीं विचारधारा है अर्थात् दृष्टिकोण है, मत है। इसे स्वीकारने वाले इसके मतानुयायी हो सकते हैं, धार्मिक नहीं क्योंकि धर्म किसी विचारधारा विशेष का न होकर मनुष्य मात्र पर स्वतः लागू होता है, इसके कुछ आवश्यक नियम होते हैं जिनका पालन प्रत्येक मनुष्य को आवश्यक रूप से करना होता है। जो पालन करता है वह धार्मिक और जो पालन नहीं करता वह अधार्मिक होता है जबकि इस्लाम मत का मतानुयायी मुसलमान कहलाता है तो कहलाता ही है वह नमाज पढ़े या न पढ़े, वह चोरी करे, शराब पिये, किसी को प्रताड़ित करे तब भी मुसलमान ही कहलाएगा और इस्लाम को त्यागकर ईसाई विचारधारा को अपना लेगा तो ईसाई कहलाने लग जाएगा और ईसाइयत को छोड़ हिन्दू बन जाएगा तो हिन्दू कहलाने लग जाएगा किन्तु ऐसा व्यक्ति अपने विचारों और कार्य में परिवर्तन नहीं लाता वह आर्य नहीं हो सकता, आर्य तो वही है जिसके गुण-कर्म-स्वभाव श्रेष्ठ हैं। इसके लिए आवश्यक नहीं कि वह किस विचारधारा से है। आर्य मुसलमान भी हो सकता है, आर्य ईसाई भी हो सकता है, आर्य हिन्दू भी हो सकता है, जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि किसी भी विचारधारा का व्यक्ति अपने दोष-दुर्गुणों को त्यागकर तथा श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव को आत्मसात कर आर्य बन सकता है अर्थात् प्रामाणिक धार्मिक बन सकता है और जो अधार्मिक है अर्थात् जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म नहीं है, मानवीय गुणों-सिद्धान्तों का स्थान नहीं है वह अनार्य है।

आर्यावर्त की सुवर्ण भूमि पर इस्लाम के मानने वालों का क्या अधिकार? लगभग १४४० वर्ष पूर्व अरब के क्षेत्र से प्रस्फुटित यह विचारधारा, इस विचारधारा के जन्म से ही सन् ६३६ से छुटपुट घुसपैठ, लूटपाट, मारकाट भारत में प्रारम्भ हुई। जिसमें अबीसीनिया, इराक, ईरान, अफगानिस्तान, कजाकिस्तान, टर्की, उजबेकिस्तान, गजनी आदि के बलपूर्वक बनाए गए मुसलमानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सन् ६३६ से सन् ७११ तक ७५ वर्षों में लगभग ७-८ हमले मुंबई समीप थाणा, बरौच, कराची, कीकण (सिन्ध), अलहवार (मुल्तान), अफगानिस्तान,

कुकण आदि क्षेत्रों में हुए। ये हमले दक्षिण के खलिफाओं ने बगदाद के शासकों से मिलकर भारत सीमा में अलग-अलग स्थानों पर लूटपाट, इस्लामीकरण आदि के लिए करवाए। इन नरपिशाचों का नायक लूट का १/५ भाग अपने पास रखता तथा ४/५ भाग अरब भेजता था जिसका बंटवारा इराक के शासक तथा दक्षिण के खलिफा के बीच होता था। इन हमलों के आक्रान्ता भारत की सुरक्षा पंक्ति को अधिक नहीं भेद पाए और सबके सब भारतीय सीमा में मार डाले गए। इनकी कार्य पद्धति एक समान थी। नगरों पर धावा बोलना, मनुष्यों को मार डालना, खड़ी फसल तथा गाँवों को जला देना तथा नष्ट कर देना, पुलों को तोड़ देना, स्त्रियों का अपहरण कर लेना, बच्चों को उड़ा लाना, सारी सम्पत्ति छीन लेना, मन्दिरों को मस्जिद बना देना और यथासम्भव क्रूरता व अत्याचार से लोगों को मुसलमान बना देना। स्त्री व बच्चों को गुलाम बनाकर दक्षिण के बाजारों में बेच देना आदि कार्य इनके प्रमुख थे।

सन् ६३६ से ७११ तक ७५ वर्षों की लूट-खसोट अरब के खलिफाओं और शासकों को सन्तुष्ट नहीं कर पा रही थी तथा भारत की समृद्धि उन्हें अधिकाधिक लूट-खसोट के लिए ललचा रही थी। उसी समय बगदाद की गद्दी पर हज्जाज नामक क्रूर, आततायी, अविवेकी, कामुक, विलासी नर-पिशाच बैठा। जिसने दक्षिण के खलिफा के साथ मिलकर मोहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सन् ७११ में सिन्ध क्षेत्र पर आक्रमण के लिए पैदल तथा घुड़सवारों की विशाल सेना को भेजा उस समय सिन्ध में ७० शासक शासन करते थे। तीन वर्ष के खूनी इतिहास में ७० शासक मार डाले गए। इतिहासकारों के माध्यम से पता चलता है लगभग एक लाख बीस हजार व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया गया। समस्त मन्दिरों की मूर्तियाँ तोड़कर वहाँ मंच तथा मिनार बनाकर मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया गया। मन्दिर के पुजारियों को कोड़े मार-मारकर कुरान पढ़ने को विवश कर उन्हें मुल्ला बना दिया गया। धन-सम्पत्ति लूट ली गई। गुलामों के काफिले के काफिले इराक-अरब भेजे गए। बालकों को ट्रेनिंग देकर आक्रान्ता बनाकर भारतीयों पर हमलों के लिए भारतीयों की फौज तैयार की गई। इस प्रकार इस क्रूर अधर्मी, अमानवीय विचारधारा का साम्राज्य आर्यों की निवास स्थान पवित्र भूमि आर्यावर्त पर थोपा गया।

इस विचारधारा के पलने-बढ़ने के मूल में जितनी निर्दयता, क्रूरता रही। वही सहायक के रूप में महाभारत युद्ध के पश्चात उपजी जन्मना जातिवाद, धर्म के नाम पर वेद विरुद्ध अन्धविश्वास-पाखण्ड तथा जैन-बौद्ध मतों के द्वारा उपजी अनिश्चरवादिता तथा एक पक्षीय अहिंसा बनी। कोटि-कोटि धन्यवाद है आद्य शंकराचार्यजी को जिन्होंने इन मतों की आंधी को रोका और इस देश से उत्पन्न होकर सर्वत्र फैले बौद्ध मत से इस देश को बचाकर वैदिक धर्म-संस्कृति को आगे बढ़ाया अन्यथा यह देश भी बौद्धिष्ठ हो जाता। और अगर यह देश बौद्धिष्ठ हो जाता तो लगभग एक हजार वर्षों तक आक्रान्ता इस्लाम का सामना करने वाले महाराणा प्रताप तथा छत्रपति शिवाजी जैसे शूरवीर यहाँ नहीं मिलते और यह सम्पूर्ण देश सहर्ष इस्लामिक देश बन जाता। जन्म से ब्राह्मण का प्रमाण-पत्र साथ लाने वाले मूर्खों ने थोड़ा सा भी बुद्धि का उपयोग किया होता और बलात् मुस्लिम बनाए गए भाइयों को गले लगा लिया होता तो आज इस पवित्र भूमि पर दो-तीन इस्लामिक देशों का जन्म नहीं होता तथा यहाँ का अन्न-जल सेवन कर इस्लाम के गीत गाने वाले यहाँ दूँडे नहीं मिलते।

इस्लाम के पैरोकारों तुम्हारे पूर्वज आर्य थे अथवा मुसलमान? मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा मुसलमान बनाए जाने के लिए अपनाए जाने

वाले हथकण्डे अत्यन्त नृशंस तथा क्रूर थे। यथा माता-पिता की उपस्थिति में ही उनके बच्चों की हत्या, उनकी युवा पुत्रियों के साथ सामूहिक बलात्कार, मृत बच्चों की कलेजी आदि भुनकर उनके माता-पिता के मुँह में ठूस देना, गो-मांस को लोगों की नाक के सामने बाँध देना, जीवितों की खाल उतार लेना आदि आदि। इस प्रकार मुसलमान बनाए गए धर्म परिवर्तितों को अपने ही आर्य भाइयों से लड़वाना अन्यथा उन नए मुसलमानों की हत्या की धमकी देना। इन विवशतावश मुसलमान बने निरिह मनुष्यों के एक ओर कुआँ तथा दूसरी ओर खाई थी या तो अपने स्वधर्मियों के विरुद्ध हथियार उठा आतताइयों का सहयोग करें अन्यथा दुष्टों द्वारा मार डाले जाएँ। मृत्यु भय से विवश हो उन्हें अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार उठाना पड़े। इस प्रकार बलात् धर्मच्युत कर इस्लाम मतानुयायी बनाए गए भारतीय मुस्लिम धीरे-धीरे बढ़ते रहे और विदेशी आक्रान्ताओं से अति घृणा के उपरान्त भी साथ देने में विवश हो गए। कालान्तर में इनके सामने कोई राह न होने से इस्लाम की क्रूर ट्रेनिंग लेते-लेते ये भी अति क्रूर हो गए और अस्तित्व रक्षा तथा आर्थिक लोभ में पड़कर अपने भाइयों को मारने लगे। इस प्रकार इस्लाम फैलता चला गया। जिसमें आग में घी का सहयोग यहाँ के धर्म के ठेकेदारों के दकियानुसी, मूर्खतापूर्ण कार्यों ने किया। इन बलात् बनाए गए मुसलमान लोगों के लिए पुनः अपने धर्म में वापसी के द्वार बन्द करके अव्यवहारिक तथा गैर जिम्मेदाराना कृत्य तथा घृणित छुआछूतवादी, भेदभावपूर्ण जन्मना जातिवादी व्यवस्था ने किया, जो आज भी जारी ही नहीं अपितु चरम पर है। धड़ल्ले से शोषित-पीड़ित तबके के राम-कृष्ण के वंशज मोहम्मद तथा ईसा के गीत गाने वाले बन रहे हैं। जिसे वर्तमान वोटों की राजनीति अम्मा भरपूर खाद-पानी दे रही है।

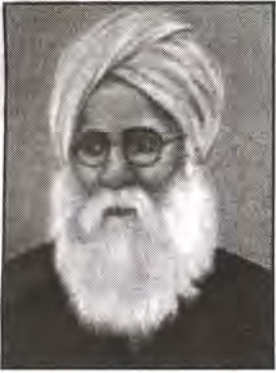
इन समस्त तथ्यों को सूक्ष्मता से जाना-समझा मेरे ऋषि, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने और इन मतों तथा इनकी खुदाई पुस्तकों और वैदिक धर्म के स्थान पर फैले अवैदिक मत-पन्थों, सम्प्रदायों की समीक्षा अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में की तथा बलात्, विवशतावश अन्य मतों में गए भाइयों की स्वधर्म में वापसी का मार्ग शुद्धि के द्वारा खोला और अल्लारखा नामक व्यक्ति की देहरादून में सर्वप्रथम शुद्धि कर उसे आर्य नाम दिया। आपके इस कार्य को शुद्धि आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाया आपके ज्येष्ठ शिष्य स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती ने तथा लाखों भाइयों की शुद्धि कर वैदिक धर्म को सुदृढ़ता प्रदान की तथा इस्लामिक आंधी के वेग को कम किया। जिसमें अडंगा डाला इस देश के तथाकथित उदारवादी महात्मा ने। जिस कारण स्वामी श्रद्धानन्दजी का असमय बलिदान हुआ। शुद्धि अर्थात् वैदिक धर्म से विमुख हुए भाइयों की पुनः स्वधर्म में वापसी तथा सत्यार्थ प्रकाश समस्त मानव जाति के अमोघ शस्त्र है जो मानव मात्र को मानव जीवन की सफलता, वैदिक स्वर्ग की प्राप्ति हेतु अज्ञानता का नाश करने हेतु परमपिता परमात्मा के ज्ञान वेद के अनुगामी बना सकते हैं।

अन्यथा जन्नत की झूठी चाह में वकास उर्फ आदिल अहमद डार जैसे अज्ञानता से ग्रसित भटके हुए युवा असमय मौत के मुँह में जाएँगे ही अन्यो को भी मौत के मुँह में धकेल संसार में दुःख-अशान्ति को फैलाने के सहायक बनेंगे। इस निःकृष्ट, जघन्य हत्याकाण्ड का फल वेदानुकूल कर्मफल व्यवस्थानुसार जन्नत तो दूर, मानव जीवन भी पुनः प्राप्त होना दूभर है। ऐसी वेद ज्ञान से विहिन आत्माओं को निश्चित रूप से जड़ जड़म योनियों में जन्म-जन्मान्तरों तक दारुण दुःख भोगना

होगा। कैसा, किस प्रकार यह तो भलिभाँति वह परमपिता परमात्मा ही जानता है। वकास उर्फ आदिल कितना अज्ञानी और भटका हुआ व्यक्ति था इसका प्रमाण उसका सन्देश है कि वह कहता है मेरा सन्देश जब तक आप तक पहुँचेगा मैं जन्नत के मजे लूट रहा होऊँगा। मृत्यु के तत्काल बाद फल की प्राप्ति तो वैदिक कर्मफल व्यवस्था का सिद्धान्त है जबकि इस्लाम की विचारधारा का सिद्धान्त तो व्यक्ति के कर्मों का फैसला कयामत के दिन होना है तो आदिल को कैसे मरने के बाद तत्काल जन्नत प्राप्त हो जाएगी? आदिल समय रहते अगर समझ लेता कि मेरे कर्मों का फैसला मेरा खुदा कयामत के दिन अर्थात् जब यह सृष्टि भी नहीं रहेगी तब करेगा तो सम्भवतः आदिल यह कदम नहीं उठाता क्योंकि उसे पता चल जाता कि कयामत के दिन तक कब्र में पड़े-पड़े सड़ना होगा, इससे तो अच्छा है जो मानव जीवन मिला है उसके ही मजे लूटो। यह भी हो सकता हो कि आदिल को जन्नत के सब्जबाग दिखाने वाले मौलाना मसूद अजहर ने खुदा की जन्नत की फ्रेन्चाइजी ले रखी हो और आदिल को जन्नत का वी.वी.आई.पी. बीजा बनाकर दे दिया हो। अगर ऐसा भी हो तो उस मूर्ख व्यक्ति आदिल को थोड़ा सा परमपिता परमात्मा प्रदत्त बुद्धि का उपयोग कर विचार करना चाहिए था कि उसके आका मौलाना मसूद अजहर जैसे लोग उसके जैसे असंख्य युवाओं को जन्नत भेज रहे हैं किन्तु स्वयं जाने से परहेज करते हैं और भारतीय सेना तथा भारत सरकार से उनकी ऐसी फटती है कि इधर-उधर दुबकते फिरते हैं। हो सकता हो इन्हें जन्नत की असलियत पता हो या फिर इन्हें डर हो कि इनके खुदा पर भी भारत सरकार व भारतीय सेना भारी पड़ेगी और जन्नत से लाकर भी खूँटा ठोक देगी इसीलिए अपनी माँद में छुपे पड़े मूर्खों का कन्धा उपयोग करते रहते हैं।

उस अज्ञानी भटके हुए वेद ज्ञान विहिन आततायी को यह भी समझ में नहीं आई कि उसके खुदा ने उसे जन्म क्यों दिया? क्या इस्लाम पर इमान नहीं लाने वाले काफिरों और काफिरों को सुरक्षा प्रदान करने वाले सुरक्षाकर्मियों को मारने के लिए ही दिया था? तो उसके खुदा क्या सर्वशक्तिमान नहीं है जो पैदा तो कर देता है किन्तु उसके द्वारा दिए गए ज्ञान पर, कुरान पर तथा उस ज्ञान पर आधारित दीन इस्लाम पर जो इमान नहीं लाता उस व्यक्ति को मार नहीं सकता तथा ऐसे व्यक्ति जो खुदा पर और खुदा के दीन इस्लाम पर इमान नहीं लाते उन्हें मारने के लिए वकास उर्फ आदिल जैसे लोगों की मदद की आवश्यकता उसे होती है। इन साधारण सी बातों को वह अज्ञानी, भटका हुआ व्यक्ति अगर समय रहते अपनी मननशीलता का उपयोग कर लेता तो व्यर्थ मानव जीवन नष्ट होने से बचा लेता और अनेक प्राणियों के जीवन को हरने, स्वयं के परिवार तथा असमय काल कवलित हुए सुरक्षाकर्मियों के परिवारों को दारुण दुःख पहुँचाने के पाप का भागी नहीं बनता।

मानव जाति में प्रचलित इन अवैज्ञानिक, अधार्मिक, मानव जाति में परस्पर अपने-पराये का भेदभाव उत्पन्न करने वाली शिक्षाओं के प्रति समस्त मानव जाति को तथा शासन व्यवस्था में संलग्न राज्याधिकारियों, शिक्षाविदों, विधि विशेषज्ञों, राजनेताओं आदि प्रमुख गणमान्य महानुभावों को समय रहते सचेत होना होगा तथा महर्षि दयानन्दजी सरस्वती के सन्देश 'वेदों की ओर लौटो' को जानना-समझना और स्वीकार करना होना अन्यथा मानव जाति यूँ ही काल कवलित हो काल के गाल में समा भय, शोक, अशान्ति, दारुण दुःखों को भोगती रहेगी। इति शमा। ■



आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र महात्मा हंसराज

आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र,
महान ईश्वर भक्त, त्यागी, तपस्वी,
कर्मयोगी, समाज सुधारक, ऋषि भक्त,
डी.ए.वी. के सर्जक, महान शिक्षाविद्
महात्मा हंसराजजी स्थितप्रज्ञ महापुरुष थे।

**भवति दिवस-वृत्तिः सप्तसप्ति स्तथोष्ठाः,
सतत-कलुष-मध्यो दीव्यन्तीन्दुः क्षमापाम्।
समजनि समवृत्तिः सर्वथा यो अकलंको,
जयतु स मुनि-नम्यो हंसराजो महात्मा॥**

सूर्य केवल दिन में प्रकाश करता है तथा स्वभाव से उष्ण भी है, चन्द्रमा सकलंक है और रात में प्रकाशित होता है, किन्तु मुनियों द्वारा भी नमनीय महात्मा हंसराज सदा एक रस तथा निष्कलंक थे, अर्थात् सूर्य-चन्द्र से भी श्रेष्ठ थे, अतः उनकी जय हो।

वे एक ऐसे कमल थे जो स्वगुणश्रवण की रात्रि में संकुचित हो जाते थे और परगुण कथन के दिवस में विस्तृत। एक बार की बात है कि किसी ने महात्मा हंसराजजी को कहा कि अमुक आदमी ने पाप से खूब पैसा कमाया है, इस पर महात्माजी कहने लगे- मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कालिज के लिए २५०० रुपया दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराजजी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई को कठिनाई नहीं समझता। क्योंकि कठिनाई को कठिनाई समझना ही बहुत बड़ी कठिनाई है। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वे एक सच्चे सन्त पुरुष थे। महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज पर सन् १६११ में लार्ड हार्डिंग पर बम फैकने के षड्यंत्र में शामिल होने के आरोप में मुकदमा चला और अन्त में काले पानी की सजा हुई। जिस दिन अदालत में निर्णय सुनाया जाना था उसी दिन महात्मा जी को जालन्धर में आर्य समाज के उत्सव पर जाना था। महात्माजी अदालत में गए, फैसला सुना और वहाँ से सीधा स्टेशन पहुँचकर जालन्धर रवाना हो गए। जालन्धर में उन्होंने किसी से उस सजा की चर्चा तक नहीं की, सारा आर्यजगत् इस अभियोग के परिणाम की बड़ी उत्पुक्ता और चिन्ता से प्रतीक्षा कर रहा था। अगले दिन लोगों ने जब अखबारों में क्रान्तिकारी बलराज को कालेपानी की सजा का समाचार पढ़ा, तब सभी हतप्रभ रह गए। हतप्रभ केवल सजा की भयंकरता पर ही नहीं बल्कि महात्माजी की अद्भुत स्थितप्रज्ञता पर भी। धन्य हैं त्यागमूर्ति महात्मा हंसराजजी।

महात्मा हंसराज आर्य समाज के प्रमुख आर्य नेता एवं महान समाजसेवी थे। केवल २२ वर्ष की आयु में ही डी.ए.वी. स्कूल लाहौर के प्रधानाचार्य बने। महात्मा हंसराज जी पर निम्नलिखित पंक्तियाँ चरितार्थ

● आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

प्रधान सम्पादक- अध्यात्म पथ
पूर्ति अपार्टमेंट, विकासपुरी, नई दिल्ली
चलभाष : ९८१००८४८०६



होती हैं-

**अपने दुःख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आँसू बहाना सीख ले।।
जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले।।
वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे।
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले।।**

महात्मा हंसराज जी का कथन है कि प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्रों वर्षों के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है। यदि हमारे कर्म ऊँचे होंगे तो हम मुक्ति पाएँगे, अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।

महात्माजी कहा करते थे कि कोई जाति (समाज) अच्छी अवस्था में नहीं रह सकती, जिसके अन्दर सद्भाव न हो। सद्भावों का संचार जातीय उन्नति के लिए प्रथम बात है। कितनी गहरी बात है। **उठता है विचार तो उठता है आदमी, गिरता है विचार तो गिरता है आदमी।** मेरा मानना है कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है मनुष्य की चेतना को जगाना। याद रखें आज तक जो कुछ भी समाज में श्रेष्ठ आया है वह सद्विचारों से ही आया है। विचारों की ऊँचाइयों से आया है। आपके भीतर किसी दीन हीन दुःखियों, गरीब या मरीज की सेवा करने का भाव यदि आता है तो वह भी किसी विचार बीज के पैदा होने से ही आता है। वेद का संदेश है- **आनो भद्राः क्रतयो यन्तु।**

हो कर्म नेक तो दुनियां में इंसान अच्छा है।

समय जो प्रभु याद में गुजरे, तो वह वक्त अच्छा है।

हक के जुड़ जाए अगर दिल की तार, तो दिल अच्छा है।

अगर साफ कर ले तो दिल को, तो यही घर स्वर्ग से अच्छा है।

महात्मा हंसराजजी महान कर्मयोगी थे। समाजसेवा, साहित्य सृजन, अध्यापन, लोकमंगल में सदा संलग्न थे। मेरा मानना है कि सच का सामना हमें सामने आकर करना चाहिए, पीछे से नहीं। सच वह दर्पण है जो अपना चेहरा हमें दिखाता है और वह हमारा भी चेहरा ही देखना चाहता है, पीठ नहीं। (शेष भाग पृष्ठ ३० पर)



ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार— ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

गतांक से आगे...

अथ ऋग्वेद षष्ठम् मण्डलम्

सूक्त मन्त्र क्र.

विषय

- १४ १ अब मनुष्यों को क्या करना चाहिए
२ व ३ अब मनुष्य क्या करते हैं
४ व ५ फिर उत्तम मनुष्य क्या करता है
६ फिर विद्वानों को प्रतिदिन क्या करना चाहिए
१५ १ से ३ तक अब मनुष्यों को क्या करना चाहिए
४ फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिए
५ से ७ तक फिर मनुष्यों को क्या प्रकाशित करना चाहिए
८ मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिए
९ फिर वह उपासित ईश्वर क्या करता है
१० व ११ फिर उसका ज्ञान और उपासना आवश्यक है
१२ व १३ फिर ईश्वर किस निमित्त उपासना करने योग्य है
१४ फिर वह जगदीश्वर कैसा है
१५ व १६ फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिए
१७ फिर बिजुली को किससे निकाले
१८ मनुष्यों को सृष्टि से कौन-कौन उपकार ग्रहण करना चाहिए
१९ फिर गृहस्थ कैसा हो
१६. १, २, ६, अब विद्वान क्या करे
१०, १४
व २६
३ कौन उपदेश देने योग्य होवे
४ व ७ मनुष्यों को क्या करना चाहिए
५ मनुष्य किसका सत्कार करे
८ अध्यापक और पढ़ने वाले परस्पर कैसा वर्ताव करें
९ राजा प्रजाओं में कैसा वर्ताव करे
११ व १२ फिर मनुष्य परस्पर क्या करे
१३ मनुष्य किस बिजुली का ग्रहण करे
१५, १६, फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिए
२१, २२,
२४, २७,
३६, ३९ से
४१ व ४५
१७ मनुष्यों को कहाँ मन स्थित करना चाहिए
१८ मनुष्यों की किस प्रकार से इच्छा सिद्ध होती है
१९, २० अब अग्नि कैसा है
व २३
२५ उत्तम जन का व्यवहार व संग निष्फल नहीं होता
२८ फिर राजा को क्या करना चाहिए

- २९ व ३२ फिर राजा को क्या करना चाहिए
से ३४ तक
३० फिर राजा और विद्वान क्या करे
३१ फिर न्यायाधीश क्या करे
३५ ईश्वर कैसा है
३७ मनुष्य कैसी वाणी का प्रयुक्त करे
३८ व ४१ मनुष्यों को क्या प्राप्त करने योग्य है
४२ व ४३ विद्वानों को चाहिए कि श्रेष्ठ गृहस्थों का सत्कार करें
४४ मनुष्यों को किसका सत्कार करना चाहिए
४६ व ४७ मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिए
४८ अब ईश्वर विषय को कहते हैं
१७ १ से ३ व फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिए
६, ७, ९
४, ५ व १३ राजा प्रजाजन परस्पर कैसा वर्ताव करें
८ मनुष्यों को कौन उपासना करने योग्य है
१० व ११ राज पुरुष कैसा वर्ताव करें
१२, १४ राजादि क्या करें
व १५
१८ १ से ३ व फिर राजा क्या करे
६, ७, ९, १०,
११, १३
४ राजा कैसा होवे
५ व ८ फिर मनुष्यों को परस्पर कैसा वर्ताव करना चाहिए
१२ फिर कौन शत्रु वाला होता है
१४ फिर विद्वान जन क्या करें
१५ फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिए
१९ १ अब सूर्य कैसा है
२ मनुष्यों को किस प्रकार से उन्नति करना चाहिए
३ फिर राजा कैसा होवे
४ व ५ फिर मनुष्य कैसा होवे
६ से ८ तक फिर राजा क्या करे
९ फिर सम्पूर्णजनों को क्या करना चाहिए
१० से १३ फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिए
तक

(शेष भाग आगामी अंक में)

● पं. सत्यपाल शर्मा

आर्य समाज देहरी, जिला मन्दासौर (म.प्र.)

चलभाष : ८४३४७४६४७४



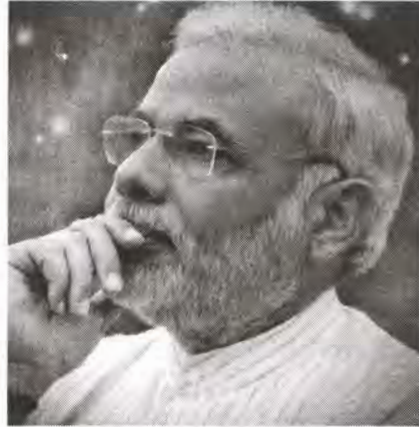
॥ राष्ट्राय नमः ॥

नमो राष्ट्र मुद मंगल कारी।
 विकट काल में ध्वजा संवारी।
 भारत माँ का परम पुजारी।
 राष्ट्र सेवा अमूल्य व्रत धारी।
 राष्ट्र भव भय संकट हारी।
 राष्ट्र भक्त इस पर वारी।।
 मानवता का अति हितकारी।
 दानवता इससे कांपे सारी।।
 भारत स्वाधीनता सबसे प्यारी।
 राष्ट्र रक्षा की अहर्नीश तैयारी।।
 पुरुषार्थ प्रगति का सहचारी।
 विकसित होगी स्वदेशी फुलवारी।।
 नमो राष्ट्र जनसेवक भारी।
 दीन दुःखी निर्बल हितकारी।।
 लूट गये राष्ट्र को भ्रष्टाचारी।
 निडर हो गये सब दुराचारी।।
 खा गये लूटकर संपत्ति सारी।
 वायसराय के सब उत्तराधिकारी।।
 छल गये देश को दुष्टाचारी।
 वाचाल वंचक कुटिल विचारी।।
 मिटा रहे सभ्यता संस्कृति हमारी।
 दुष्ट लम्पट अश्लील विचारी।।
 राष्ट्र नैया डुबाने लगे बैरी।
 दुश्मनों के दलाल दुष्ट मक्कारि।।
 कांपे, कामचोर कंटक अत्याचारी।
 भयभीत मोदी से अतिचारी।।
 भ्रष्टाचार रोकने की करो तैयारी।
 मोदी को दो शक्ति बलकारी।।
 राष्ट्र भक्त मोदी पर बलिहारी।
 हृदय कमल के अधिकारी।।
 नमो नाम महा मंत्रधारी।
 अटल आडवाणी का अनुचारी।।
 शांतिदूत मानव हितकारी।
 विश्व बंधु पद अधिकारी।।
 विश्व स्वास्थ्य हितमन विचारी।
 यू.एन. में योग बताया हितकारी।।
 नमो निर्मल निष्पक्ष न्यायकारी।
 सम्प्रदाय सद्भाव समता धारी।।
 मोदी गुण गरिमा यशकारी।
 राष्ट्र गौरव रक्षक है भारी।।

॥ कीर्ति यस्य बलम् ॥

मोदी अहं रहित है सुविचारी।
 मर्यादित सुचरित संयमधारी।।
 अशक्त हो गई भारत माँ बेचारी।
 दलों के दल दल में फँसी भारी।।
 मतदाताओं मिल करो रखवारी।
 राष्ट्र धर्म की है अब बारी।।
 राष्ट्र को डुबाने मिटाने हारी।
 आपस की यह फूट हमारी।।
 जागो संगठन की आई बारी।
 राष्ट्र बचाने की करो तैयारी।।
 राष्ट्र भक्ति हो सबसे प्यारी।
 भारत गुण गरिमा जग से न्यारी।।
 विश्व प्रेम सौहार्द बंधुत्व कारी।
 विश्व शांति का बरसाती वारी।।
 सब मिल गौरवगान करो भारी।
 संगठित होकर राष्ट्र नर नारी।।
 विश्व गुरु था भारत विद्या धारी।
 बुद्धि बल बढ़ाओ छोड़ो लाचारी।।
 'आर्य विश्वकर्मा' कहे सुविचारी।
 भारतीय संस्कृति विश्व हितकारी।।
 मोदी विश्व शांति का अटल पुजारी।
 भारत का मान बढ़ाया भारी।।
 अच्छे दिन का संकेत बलकारी।
 बिना मान जीवन होता धिक्कारी।।
 स्वच्छता लक्ष अति लाभकारी।
 स्वस्थ सुखी रहे सब नरनारी।।
 मोदी के मन की बात गुणकारी।
 खिलाती है अमन की फुलवारी।।
 नमो राष्ट्र भक्त है चमत्कारी।
 डूबते भारत का है पतवारी।।
 कृतज्ञ राष्ट्र इस पर वारी।
 मिटाने की थी पूर्ण तैयारी।।
 बना राष्ट्र का संबल भारी।
 कदम बढ़ाया समय देख हितकारी।।
 नकली नोट पर चोट मारी।
 राष्ट्र डूबने से दिया तारी।।
 नमो ने बढ़ाया कदम क्रांतिकारी।
 आतंकियों पर पड़ा अतिभारी।।
 राष्ट्र की प्रगति हो गुणकारी।
 मोदी इसका समर्थक है भारी।। ■

मोदी कीर्ति चालीसा

● अम्बालाल
विश्वकर्मा

पिपलिया मण्डी, मन्दसौर
 चलभाष :
 ८९८९५३२४१३

मुक्तक

दुम हिलाने वालों की कोई औकात नहीं होती,
 चमचों चाटूकारों की कोई जात नहीं होती।
 नेक लोगों को दंश लगाना इनकी फितरत है,
 जज्बात इनके लिए कोई बात नहीं होती।

● राधेश्याम गोयल

जानकर नित जहर पिये जा रहे हैं हम,
 हर जुल्म को स्वीकार किये जा रहे हैं हम।
 मजबूरियों में फटे जिन्दगी के दामन को,
 बेबसी में नित सिये जा रहे हैं हम।

न चाहकर भी कर्ज लिये जा रहे हैं हम,
 ये सोच अपना फर्ज किये जा रहे हैं हम।
 तंगहाल जीवन हो खुशहाल ऐसी चाहत में,
 अनचाहा बोझ लिये जा रहे हैं हम।

आँसू आने पर भी प्याज खाये जा रहे हैं हम,
 हर जखम पर मरहम लगाये जा रहे हैं हम।
 दरियादिली ऐसी कि सब कुछ लुटा कर भी 'श्याम',
 धोखे पे धोखा अपनों से खाये जा रहे हैं हम।

जहर घुल गया फिजा में ऐसी चली हवा,
 छूट अपनो का गया साथ ऐसी चली हवा।
 सपने सभी बिखर के चकनाचूर हो गये,
 हो गये भीड़ में भी तन्हा ऐसी चली हवा।

चमकी किस्मत उनकी जो सत्ता पे आसीन हुए।

राष्ट्र प्रेम में जीने वाले वतन पे कुर्बान हुए।

समय चक्र में सभी पिस गये जिनके धरा पर नाम हुए।

पर याद उन्हें ही करती दुनिया जो कर्मों से महान हुए।

न्यू कॉलोनी, कोदरिया (महू), चलभाष : ९६१७५९७९१०

ईश्वर समर्पण से मोक्ष प्राप्ति

महर्षि पंतजलि द्वारा निर्देशित क्रियायोग का अन्तिम चरण है 'ईश्वर-प्रणिधान।' मुख्य रूप से इसका भाव है मन, वचन और कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित रहना। ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय न करने के कारण आज व्यक्ति अनेक प्रकार के पाखण्डों में फँस गया है। समर्पण भी आज परमात्मा के प्रति नहीं बल्कि मनुष्यों के प्रति हो रहा है। आज प्रतिदिन पैदा होने वाले तथाकथित गुरुओं ने पाखण्ड का ऐसा जाल फैला रखा है कि व्यक्ति को परमात्मा से बहुत दूर ले जाकर भटका दिया है। ये गुरु सर्वप्रथम व्यक्ति को प्राचीन ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय से उपराम कर देते हैं और फिर जी भर कर अपने पाखण्ड को फैलाते हैं। वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन के अभाव में आजकल के अधिकतम गुरु स्वयं तो अज्ञानी हैं ही मगर अपने शिष्यों को भी उसी अज्ञानता के गर्त में युगों-युगों तक भटकने के लिए छोड़ देते हैं। हमारा यह मानना है कि जो गुरु अपने चेलों को प्राचीनतम वैदिक तथा महर्षियों की परम्पराओं से हटाकर नया मत चलाता है, नई उपासना पद्धति तथा गुरुमन्त्र देता है वह निश्चित रूप से पाखण्डी है। हमारा इतिहास बताता है कि योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज तक किसी भी नई परम्परा को प्रश्रय नहीं मिला। वे सभी योगी तथा ऋषि-मुनि एक स्वर से वैदिक मान्यताओं को सत्य मानकर एक ही गायत्री महामन्त्र तथा परमात्मा के नाम ओम् का जाप करने की प्रेरणा देते रहे मगर महाभारत काल के बाद इस आर्यवर्त का इतना अधिक पतन हुआ कि आज तक पहुँचते-पहुँचते हजारों ही नए-नए मन्त्रादि देने वाले तथाकथित गुरु पैदा हो गए हैं। दीक्षा देने के नाम पर भी बहुत पाखण्ड और आडम्बर किया जाता है तथा अकल के अन्धे और गाँठ के पूरे लोगों से मनमानी धनराशि प्राप्त करते हैं। मानों आज यह एक अच्छा-खासा व्यापार ही हो गया है। हमने देखा है कि कुछ तथाकथित गुरु कार्यक्रम देने के लिए एक निश्चित राशि की माँग करते हैं और यदि जनता से अधिक पैसा एकत्रित हो जाए तो वह आयोजकों को दे दिया जाता है। इससे ये गुरु महाराज के प्रवचन के बाद दीक्षा देने के लिए गुरु के एजेंटों द्वारा लोगों को ऐसे पकड़-पकड़ कर लाया जाता है जैसे बड़ी-बड़ी दुकानों के नौकर ग्राहकों को पकड़कर लाते हैं।

हमने देखा है कि प्रत्येक नए मत का गुरु अपने शिष्यों को नया ही मन्त्र देता है क्योंकि यदि पुराना दे दिया जाए तो उनकी दाल कैसे गलेगी। जैसा कि हमने पहले कहा उपनिषदों आदि के ब्रह्मदेवता ऋषियों ने अपनी कोई भी नई परम्परा नहीं चलाई है। बल्कि वे कुछ बात जिज्ञासुओं से कहते भी थे तो साथ ही यह बात भी कह देते थे कि ऐसा हमने अपने से पूर्व आचार्यों से सुना है... कितनी विनम्रता थी उन लोगों में... मगर आज यदि कोई गुरुमन्त्र देता है तो साथ ही कह देता है कि यह किसी और को न बताना नहीं तो इसका असर कम हो जाएगा। यहाँ तक भी कह दिया जाता है कि गुरु की निन्दा नहीं सुननी है अन्यथा इससे बहुत बड़ा पाप लगेगा। इस प्रकार ये लोग पूरी तरह से व्यक्ति के स्वतन्त्र चिन्तन को कुण्ठित कर देते हैं तथा अपना गुलाम बना देते हैं। उस बेचारे चले की प्रगति ही रुक

● महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षि दयानन्द धाम, महादेव,
सुन्दरनगर, जि. मण्डी (हि.प्र.)



जाती है क्योंकि अब वह किसी के पास भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं जाएगा और न ही गुरु की निन्दा सुनेगा... न ही किसी प्रकार का तर्क करेगा...। गुरु इस प्रकार का प्रतिबन्ध या भय इसलिए दे देते हैं ताकि उनके अज्ञान की पोल न खुल जाए... या वह व्यक्ति किसी और को गुरु न बना ले... और यदि दूसरे को मन्त्र बता दिया तो गुरु की अपनी महता कम हो जाएगी। यह भी एक आश्चर्य की बात है कि गुरु उस पर ही कृपा करता है जो उसका विधिवत चेला बन जाए बाकियों पर वह कृपा क्यों नहीं करता है...? उन तथाकथित गुरुओं से पूछा जाना चाहिए कि वे ऐसा मन्त्र देते ही क्यों हैं जो इतना कमजोर है कि किसी को बताने मात्र से ही उसकी शक्ति समाप्त हो जाए। ऐसे अपने चेलों को सत्य से दूर ले जाने वाले तथा लालची तथाकथित गुरुओं को वास्तव में ही घोर नरक की यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। शिष्य को वास्तविक आत्मज्ञान देने की योग्यता न हो तब तक किसी को चेला नहीं बनाना चाहिए अन्यथा कहा गया है कि जो तथाकथित गुरु अपने चेलों से धनादि तो ले लेता है मगर उसे अमरत्व प्रदान करके उसके शोकादि दूर नहीं करता है ऐसा गुरु घोर नरक में जाता है।

आजकल अधिकतर ऐसा ही हो रहा है। मानो गुरु चेलों को अपनी कैद में कर लेता है। अतः उस चले के आत्मिक विकास के सभी दरवाजे बन्द हो जाते हैं। यह एक बहुत बड़ा अपराध हो रहा है। पाप का तो प्रायश्चित्त भी है मगर अपराध से मुक्ति पाना कठिन है। जो व्यक्ति अपने चेलों को सत्यज्ञान और सत्य उपासना से दूर ले जाता है तथा तत्त्वज्ञान नहीं करा पाता है वह गुरु कहलाने के ही योग्य नहीं है। आज कुछ गुरु इतने पतित हैं कि गत दिनों हमें एक कार्यक्रम में ऐसी कन्या मिली जो एक गुरु के चक्कर में आकर बहुत परेशान थी। मैंने जब उसकी परेशानी का कारण जानना चाहा तो उसने बड़े विस्तार से अपने तथाकथित गुरु की नीचता सुनाई मगर उसने मुझसे पूछा कि क्या गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना चाहिए। मैंने पूछा कि तुम किस सन्दर्भ में यह बात पूछ रही हो। उसने जो बात कही मुझे तो जैसे अपने कानों पर ही विश्वास नहीं हुआ। वह बोली कि गुरु जी मेरे साथ सम्भोग करना चाहते हैं और कहते हैं कि यदि मैंने ऐसा नहीं किया तो गुरु आज्ञा का उल्लंघन करने के दोष के कारण मुझे घोर नरक की यातनाएँ भोगनी पड़ेंगी...। वह बेचारी मानसिक रूप से बहुत ही अधिक परेशान थी। हमने उसे कई प्रकार के तर्क देकर समझाया कि ऐसे दुराचारी गुरु के पास जाने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं है तथा उसकी आज्ञा न मानने पर तुम्हें किसी प्रकार का पाप नहीं लगेगा... विगत दिनों हिसार में किसी ऐसे ही तथाकथित गुरु के डेरे

में क्या कुछ व्यभिचार आदि होता रहता है इसकी पोल किसी संवाददाता ने खोली थी तथा बाद में उस संवाददाता की ही हत्या करवा दी गई... दूरदर्शन में कितने ही ऐसे समाचार सुनने को मिलते हैं कि धन और देह के लालची कितने ऐसे तथाकथित गुरुओं ने लोगों की हत्याएँ करवाई हैं। किसी ऐसे गुरु का भी मत चल पड़ा है जिसका कहना है कि आपका चरित्र चाहे जैसा भी हो... आपका खान-पान चाहे कैसा भी हो... आप चाहे जिस ढंग से भी धन कमाते हो... मुझे इतना प्रतिशत भेंट चढ़ा दो बस तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा...। एक मत की पुस्तक में लिखा है कि गुरु के चरण धोकर उसे पीना, पीप को पीना, परमात्मा के समान गुरु को मानना, हुक्का पीने के लिए देना तथा तन, मन और धन सब कुछ अर्पण कर देना आदि...। भला इन प्रक्रियाओं से परमात्मा की उपासना का क्या सम्बन्ध है...? अविद्या के कारण अष्टांगयोग आदि की परम्पराएँ तो लुप्त कर दी गई हैं मगर बस गुरु के चरण दबाने, हुक्का भरने, जूठा खाने, आरती उतरवाने आदि की परम्पराएँ चल पड़ी हैं। हमने कई ऐसे लोगों के तथाकथित सत्संगों में जाकर देखा है कि परमात्मा के स्थान पर अधिकतम समय में गुरु की प्रशंसा और महिमा के ही गीत गाए जाते हैं। परमात्मा के नाम पर कवियों द्वारा लिखे गए भजनों को भी गुरु पर घटाने का कुप्रयास किया जाता है। बहुत से लोगों ने विधिवत अपने एजेंट रख छोड़े हैं जो ऐसे सत्संग आयोजित कराके गुरुओं की तरह-तरह की चमत्कार की बातें बताते हैं तथा अनपढ़ लोगों की तो बात ही छोड़ दें तथाकथित पढ़े-लिखे लोग भी उन बे-सिर-पैर की बातों को बड़ी श्रद्धा के साथ सुनते हैं।

एक बात यह कही जाती है कि 'गुरु बिन गति नहीं'। इस वाक्य ने लोगों को इतना भ्रमित किया है कि इसी के आधार पर यह सारा पाखण्ड चला हुआ है। इसका भाव लोगों को यह बताया जाता है कि गुरु बना लेने से ही मरने के बाद व्यक्ति की सद्गति होती है। व्यक्ति चाहे कितना ही पाप करे गुरु उनका उद्धार कर देता है... आदि आदि। अब आज कौन व्यक्ति ऐसा होगा जो बुरे काम करके उसके फल से बचना न चाहेगा। तथाकथित गुरुओं ने ऐसी ही दुकानें खोल ली हैं। वैदिक सिद्धान्त यह है कि परमात्मा की न्याय व्यवस्था में व्यक्ति को बुरे कर्म के लिए दण्डित होना पड़ता है और अच्छे कार्य के लिए परमात्मा उसे पुरस्कृत करता है। कोई भी गुरु या पैगम्बर इसमें जरा सा भी हेर-फेर नहीं कर सकता है। इस सिद्धान्त को मानने से ही दुनिया से बुराई दूर हो सकती है मगर जब लोगों के हाथ बुरे कर्मों के फल से बचने का गुरुरूपी नुस्खा मिल जाता है तो भला व्यक्ति पाप क्यों नहीं करेगा...? यह बात भी सत्य है कि जब तक व्यक्ति अपने आप ऋषियों द्वारा अनुमोदित योग-ध्यान नहीं करेगा तब तक कोई भी उसे मुक्ति नहीं दिला सकता है। हाँ गुरु बिन गति नहीं का इतना सा भाव है कि हमें जो कुछ भी सीखना हो वह किसी ज्ञानी तथा अनुभवी गुरु से ही सीखा जा सकता है। मरने के बाद की गति से इसका कोई लेना-देना नहीं है, वह गति तो अपने-अपने कर्मों के आधार पर ही होगी मगर आपने संस्कृत सीखनी हो, योग-ध्यान सीखना हो, प्राणायाम सीखना हो, क्रिकेट सीखना हो, गणित सीखना हो या कैमिस्ट्री सीखनी हो तो किसी योग्य गुरु के सिखाए बिना उसमें गति अर्थात् प्रोग्रेस नहीं हो सकती है। एक बात और कही जाती है—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दीयो मिलाय।

इन पंक्तियों को आश्रय देकर भी गुरु की महिमा को परमात्मा से अधिक बताया जाता है मगर वास्तविकता यह नहीं है। यहाँ पर भी गुरु की महिमा केवल इस बात पर निर्भर करती है कि यदि वह परमात्मा को मिला दे तभी उस पर बलिहारी हुआ जा सकता है। मगर बड़ा तो परमात्मा ही हुआ क्योंकि उसकी प्राप्ति मुख्य है। परमात्मा के स्थान पर यदि कोई गुरु स्वयं को या कोई चेला गुरु को बड़ा बताता है तो यह बहुत ही अनर्थकारी तथा नरकगामी बात होगी। ऐसा ही भ्रमित करने वाला एक निम्नलिखित श्लोक कहा जाता है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

इसका भाव लिया जाता है कि गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है तथा गुरु ही महादेव है। गुरु ही परब्रह्म है ऐसे उस गुरु को नमस्कार हो... अब सोचने की बात यह है कि क्या गुरु सृष्टि का सृजन करने वाला, पालन करने वाला और इसका संहार करने वाला हो सकता है? क्या कोई गुरु एक फूल या पत्ता भी बना सकता है? क्या जन्म-मरण आदि की व्यवस्था गुरु के अधीन है? क्या गुरु के माँ-बाप को गुरु ने पैदा किया? ये सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र, ग्रह-उपग्रह क्या किसी गुरु ने बनाए हैं? क्या वही इनका संचालन आदि कर रहा है? यदि ऐसा नहीं है तो किसी भी गुरु को परब्रह्म कहना मूर्खता और छलावे के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस श्लोक का अर्थ होना चाहिए कि सृष्टि को बनाने वाला सर्वव्यापक कल्याणकारी परमात्मा ही गुरु है।

गुरु शब्द की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के पहले ही समुल्लास में लिखते हैं— 'गृ शब्दे' इस धातु से गुरु शब्द बना है। 'यो धर्म्यान् शब्दान् गृणात्युपदिशति स गुरुः' 'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' योग। जो सत्यधर्म प्रतिपादक, सकल विद्यायुक्त वेदों का उपदेश करता, सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि गुरुओं का भी गुरु और जिसका नाश कभी नहीं होता, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'गुरु' है। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास में लिखते हैं— 'जैसे वर्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़कर के विद्वान होते हैं, वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का गुरु अर्थात् पढ़ाने हारा है। क्योंकि जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलय में ज्ञानरहित हो जाते हैं, वैसे परमेश्वर नहीं होता। उसका ज्ञान नित्य है। इसलिए यह निश्चित जानना चाहिए कि बिना निमित्त से नैमित्तिक अर्थ सिद्ध कभी नहीं होता।' परमात्मा को ही परम गुरु मानने के बारे में वे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखते हैं— '...जो कि प्राचीन अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि पुरुष सृष्टि की आदि में उत्पन्न हुए थे, उन से लेकर हम लोग पर्यन्त और हम से आगे जो होने वाले हैं, इन सबका गुरु परमेश्वर ही है, क्योंकि वेद द्वारा सत्य अर्थों का उपदेश करने से परमेश्वर का नाम गुरु है।' इसलिए जहाँ तक ईश्वर प्रणिधान समर्पण की बात है, यह समर्पण उस परमगुरु परमात्मा के ही प्रति होना चाहिए न कि किसी व्यक्ति के प्रति। इस सम्बन्ध में बहुत साफ कहा गया है—

ईश्वरप्रणिधानं सर्वक्रियाणां परमगुरावर्पणं तत्फलसंन्यासो वा।।
(यो.द. २-१) अर्थात् सब क्रियाओं का परमगुरु परमात्मा में अर्पण तथा उनके फल की इच्छा न करना ईश्वरप्रणिधान कहलाता है। इस सूत्र के बारे में महर्षि दयानन्द जी ने भी स्पष्ट किया है— '**...सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन के प्रेमभाव से आत्मादि द्रव्यों का ईश्वर के लिए समर्पण करना।**'

ईश्वरप्रणिधान के द्वारा ही व्यक्ति समाधि को प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस सम्बन्ध में लिखते हैं— '**तथा उस समाधि के योग होने का यह भी साधन है कि (ईश्वर प्र.) ईश्वर में विशेष भक्ति होने से मन का समाधान होकर मनुष्य समाधियोग को शीघ्र प्राप्त हो जाता है। ... (ईश्वरप्रणिधानम्) अर्थात् सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन के प्रेम भाव से आत्मादि द्रव्यों का ईश्वर के लिए समर्पण करना।**' साधनपाद में भी कहा गया है—

समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणीधानात्।। (२-४५) महर्षि दयानन्द जी भी ऐसा ही भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं— '**(समाधि.) पूर्वोक्तो प्रणिधान से उपासक मनुष्य सुगमता से समाधि को प्राप्त होता है।** (ऋ.भा.भू.उपा.) 'इस प्रकार हम देखते हैं कि उपासक के जीवन में ईश्वर प्रणिधान का अत्यधिक विशेष महत्व है। इससे व्यक्ति को उपासना काल में परमात्मा की मित्रता व सहयोग मिलता है, उपासक को साहस, बल और आत्मविश्वास मिलता है तथा उसे कदम-कदम पर यह अनुभूति होती रहती है कि उसकी सहायता के लिए कोई परमशक्ति सदा उसके अंग-संग है। उसके अविद्यादि क्लेश दूर होते हैं, उसे प्रज्ञा प्राप्त होती है तथा वह समस्त ऐषणाओं, मल-विक्षेप-आवरण और सभी विषय-वासनाओं से मुक्त होकर स्वयं में स्थित हो जाता है। स्वयं में स्थित होते ही उसका परिचय अपने आप से होता है... स्वयं से परिचित होने पर उसे समाधि प्राप्त हो जाती है... वह अपने स्वरूप को प्राप्त हो जाता है...। ■

ज्ञान और आनन्द

पूर्व आलेख में बतलाया था कि ज्ञान-रश्मियों से ही जगत् का निर्माण होता है ये रश्मियाँ जिस स्थान से निकलती हैं, उस केन्द्रस्थ ज्ञानधन का, ज्ञानकन्दल का, नाम ही आनन्द है। उसी ज्ञानकन्दल में से दीपवत् चारों ओर ज्ञान-रश्मियाँ निकलकर फैलती हैं। जो रश्मि-संचारक केन्द्रस्थ भाव है, जिसका जीव-ज्ञान और ईश्वर-ज्ञान अंश है, वही अंशी आनन्द नाम से व्यवहृत है। उदाहरणार्थ सूर्यबिम्ब आनन्द है और उस बिम्ब में से चारों ओर निकलने वाली रश्मियाँ ज्ञान हैं। केन्द्रस्थ ज्ञानधन, ज्ञान न कहलाकर, उत्तरोत्तर केन्द्र को न छोड़कर बढ़ते रहने के कारण, आनन्द कहलाता है एवं अनन्तानन्त विषयों को उत्पन्न करने के कारण वे बाहर निकलती हुई रश्मियाँ '**ज्ञान**' नाम से व्यवहृत होती हैं। इस प्रकार एक ही ज्ञान, कन्दल और रश्मि स्वरूपेण आनन्द और ज्ञान इन दो स्वरूपों में परिणत हो जाता है। केन्द्रस्थ अंशी भाव '**आनन्द**' है, केन्द्र से निकलकर रश्मिरूप से चारों ओर वितरित होने वाला ज्ञानांश ही '**ज्ञान**' है। यह आनन्द और ज्ञान का विभाग जीवेश्वर में समान है। इस विश्व का जो केन्द्रस्थ ज्ञानकन्दल है, वह आनन्द है एवं जहाँ तक इसकी रश्मियों का प्रसार है, वे फैली हुई रश्मियाँ ही ज्ञान हैं। एवमेव हमारे केन्द्र में स्थित जो ज्ञानकन्दल है, उस केन्द्र में से चारों ओर फैलने वाली जो ज्ञान-रश्मियाँ हैं, जिनमें कि हमारा अन्तर्जगत प्रतिष्ठित रहता है, वही ज्ञान है। एक ही चीज की दो अवस्थाओं का नाम आनन्द और विज्ञान है।

जीवेश्वरभेदेन, यह आनन्द समष्टि और व्यष्टि-इन दो स्वरूपों में परिणत हो जाता है। जीवानन्द को व्यष्ट्यानन्द कहते हैं, ईश्वरानन्द को समष्ट्यानन्द कहते हैं। आनन्द ही की तरह ज्ञान और सत्ता के भी दो प्रकार हैं। जो हमारी आनन्द विज्ञान सत्ता है, वह विशेष है एवं ईश्वर की आनन्द विज्ञान सत्ता सामान्य है। जो सबसे छोटा आनन्द है, वही विशेष कहलाता है। इस विशेष को आप उत्तरोत्तर बढ़ाते चले जाइए। आखिर कहीं-न-कहीं इसकी समाप्ति माननी ही पड़ेगी। एवमेव सत्ता और ज्ञान की भी

● डॉ. सत्यदेव सिंह

५०७, गोदावरी ब्लॉक,
अशोका सिटी, गोवर्धन चौक, कृष्णा नगर,
मथुरा-३८१००४ (उ.प्र.)



कोई-न-कोई परासीमा माननी ही पड़ेगी, बस उस अन्तिम निर्विशोषानन्द विज्ञान सत्ता को हम सामान्य आनन्द-ज्ञान सत्ता कहने के लिए तैयार हैं, यही ईश्वरीय सत्ता, चेतना, आनन्द है। इसी का नाम समष्टि है एवं इस समष्टि के पेट में व्यष्टि-स्वरूप जो जीवानन्द है, वही व्यष्ट्यानन्द नाम से प्रसिद्ध है।

परम सत्ता, परम ज्ञान, परम आनन्द- इन तीनों की समष्टि का नाम ही परमेश्वर है एवं इन परमसत्तादि के पेट में जो-जो अवम सत्तादि हैं, उनकी समष्टि का नाम ही जीव है। कहना इससे हमें यही है कि उस सम-षट्यानन्द की, अर्थात् ईश्वर की, चारों ओर फैलने वाली जो ज्ञान-रश्मियाँ हैं, वे ही जब प्रतिफलित होती हैं, तो विषय-स्वरूप में परिणत हो जाती हैं। बस, उसी का नाम '**बहिर्जगत्**' है। चारों ओर से वितरित होती हुई ज्ञान-रश्मियाँ, प्रतिफलन क्रिया से जिन पदार्थों को बनाती हैं, उन पदार्थों को ही सत्ता कहते हैं। बस, वही बाह्य जगत् का स्वरूप है।

ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय- इन तीनों में से ज्ञान और ज्ञाता के अर्थात् आनन्द और ज्ञान के विषय में तो कोई विवाद नहीं है। ज्ञाता ही रश्मि रूप से बाहर निकलकर ज्ञान बन जाता है। आनन्द ही विज्ञान बन जाता है बाकी बचता है ज्ञेय। इस ज्ञान में प्रतिभासित होने वाले घटपटादि ज्ञान से वह विजातीय है अथवा सजातीय, इस विषय में अनेक विवाद हैं। विवादों के अनन्तर सिद्ध यही होता है कि जैसे मिट्टी ही घड़ा बन जाती है, सूत ही कपड़ा बन जाता है, तद्वत् ज्ञान ही ज्ञान बन जाता है। ज्ञान में पृथक् बैठा

हुआ जो जगत् है, ज्ञानसत्ता से ही सत् है। मृत्तिका की सत्ता से ही घट 'अस्ति' का अधिकारी बनता है। जैसे आत्मा, बिना आत्मन्वी के कोई वस्तु नहीं तद्वत् ज्ञान बिना, ज्ञेय जगत् कोई वस्तु नहीं। ज्ञान ही जगत् का प्रभव है, ज्ञान ही जगत् की प्रतिष्ठा है, ज्ञान ही जगत् का परायण है। भला, ऐसी हालत में जगत् ज्ञान से भिन्न क्यों कर हो सकता है? ज्ञान ही तो ज्ञेय का स्वरूप है। जो प्रकाशी पदार्थ होते हैं, वे ग्राहक और ग्राह्य इन दो स्वरूपों में परिणत होकर ही अपनी स्थिति कायम करते हैं। इसीलिए तो— **'ग्राह्यत्वं ग्राहकत्वं च द्वे शक्ती तेजसोमते'**— यह कहा जाता है। जिसे आप घड़ा है, वस्त्र है, पर्वत है, सूर्य है, यह कह रहे हैं, वह ज्ञान ही की तो सत्ता है।

कहने का तात्पर्य यही है कि जो मेरा अन्तर्जगत है, वह मेरा ज्ञान ही है, मेरा ज्ञान ही अन्तर्जगत बना हुआ है। मैं जो कुछ जानता हूँ वह मेरे ज्ञान से बना हुआ है एवं वह ज्ञान ही 'अहं' है। ज्ञान ही तो अहं का स्वरूप है। इस प्रकार ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय—कहने को तीन हैं, वास्तव में तीनों एक हैं। केन्द्रस्थ ज्ञानकन्दल का नाम ज्ञाता है, वही आनन्द है एवं रश्मिरूप में परिणत ज्ञान, ज्ञान है, परवर्तित ज्ञान ज्ञेय है। तीनों ज्ञान ही हैं। तात्त्विक दृष्टि से विचार करने पर त्रित्व सर्वता मिथ्या है। व्यवहार के लिए तीनों तीन हैं, वास्तव में तीनों एकरूप हैं।

हमारे अन्तर्जगत का निर्माण हमारे ही ज्ञान से होता है। कल्पना कर लीजिए १० आदमी बैठे-बैठे अपने मस्तिष्क से कल्पनाएँ कर रहे हैं। सब अपना स्वतंत्र खयाली जगत् बना रहे हैं। हम आप से पूछते हैं कि क्या आप बतला सकते हैं कि दूसरा मनुष्य किस जगत् को अपने ज्ञान से बना रहा है? आपको सिवाय नहीं के, और कोई उत्तर नहीं मिलेगा। तो बस, जब अन्य मनुष्य के अन्तर्जगत को आप नहीं देख सकते, जो आपके सामने बैठा हुआ है, तो फिर सर्वथा परोक्ष उस ईश्वर के अन्तर्जगत को, जो कि आपकी अपेक्षा बहिर्जगत है, आप क्यों कर देख सकते हैं? इससे मानना पड़ता है कि हम जो-कुछ देखते हैं, वह सब हमारे ज्ञान की ही वस्तु है। ईश्वरीय बहिर्जगत का हमारे से कोई सम्बन्ध नहीं है। एवमेव जगत्त्व—सादृश्यात् बहिर्जगत को भी जो कि ईश्वर का अन्तर्जगत है, ईश्वर के ज्ञान से बना मानना पड़ेगा।

कहने का तात्पर्य यही है कि समष्ट्यानन्द, अर्थात् ईश्वर के चारों ओर वितत जो ज्ञान-रश्मियाँ हैं, वे ही विषयरूपों को बनाती हैं एवं ज्ञान से निर्मित जो पदार्थ हैं उन्हीं का नाम सत्ता है। ज्ञान ही सत्ता बना हुआ है। बस, ईश्वरीयज्ञान विनिर्मित पदार्थों को ही सत्ता कहते हैं एवं वही बहिर्जगत कहलाता है। सूर्यचन्द्रादि युक्त जो एक महाविशाल विश्व दिखलाई पड़ रहा है वह इसी ईश्वर का अन्तर्जगत है— यह सारा जगत् जिसे कि सत्ता कहते हैं, जो कि सत्ता, मनप्राणवाङ्मय है— ईश्वर के ज्ञान से निर्मित है। बस, ठीक यही बात व्यष्ट्यानन्द में अर्थात् जीव में समझनी चाहिए। व्यष्ट्यानन्द के चारों ओर वितत जो ज्ञान रश्मियाँ हैं, वे ही घटपटादि विषय रूपों को बनाकर सत्ता कहलाने लगती हैं। वही हमारा अन्तर्जगत है। इस प्रकार आनन्द अंशी है, ज्ञान और ज्ञेय उसी आनन्द के अंश हैं। भला, अंश और अंशी में भी कभी भेद हुआ है? हर्गिज नहीं, ज्ञान ही सत्ता है, सत्ता ही ज्ञान है।

इस प्रकार यह एक ही भाव, एक ही ब्रह्म पदार्थ, सत्ता—चेतना—आनन्द इन तीन भावों से व्यवहृत किया जाता है। वस्तुतः तीन नहीं हैं अपितु तीनों एक ही हैं। हम ज्ञानस्वरूप हैं एवं हमारा अन्तर्जगत चूँकि हमारे ज्ञान से ही बना है अतएव वह भी, ज्ञानस्वरूप ही है। जबकि ज्ञान से ही बना हुआ हमारा अन्तर्जगत है, तो वह हमारे से अभिन्न है। हमारा अन्तर्जगत वस्तुतः हम ही हैं। एवमेव जिस महाज्ञान के अंश हम जीव हैं, उसके ज्ञानस्वरूप में तो कहना ही क्या है? एवमेव ईश्वर के ज्ञान से बना हुआ जगत् है, वह भी जगत्त्व सादृश्यात्, उसके मान से ही बना हुआ मानना पड़ेगा, जब बहिर्जगत ईश्वर के ज्ञान से बना हुआ है तो सुतरां दोनों का अभेद सिद्ध हो गया। इस प्रकार जीव और उसका अंतर्जगत अभिन्न है एवं ईश्वर और बहिर्जगत अभिन्न है एवं हम उसी के अंश हैं, अतएव जीव और ईश्वर में अभेद है। बतलाइए, क्या अब भी आपकी दृष्टि में भेदभाव रहा? कदाचित् कहो कि अच्छा साहब आपके कहने से थोड़ी देर के लिए जीवेश्वर में अभेद मान भी लेते हैं, तो भी मन-प्राण-वाक् जगत् के जो ये तीन भाव हैं, इनको आप कैसे छुपा सकते हैं? यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर हो गया, तथापि आप नहीं समझे हैं तो और समझ लीजिए। मन-प्राण-वाक् ये आपने तीन पदार्थ समझ रखे होंगे। बड़ा भ्रम है। बड़ा अज्ञान है। कृपानिधान, प्राण से वाक् बनती है एवं मन से प्राण बनता है। एक ही तत्त्व है। उसके कारण स्थूल-सूक्ष्म अवस्था का नाम ही मन-प्राण-वाक् है। यदि घड़ा और मिट्टी दो हैं, तो मन-प्राण-वाक् भी तीन चीजें हो सकती हैं। बस, इस विषय में अधिक न कह कर हमें केवल यही कहना है कि तीनपना (त्रैत) कुछ भी नहीं है, वास्तव में एक ही ब्रह्म है। जब ब्रह्म ही सब कुछ है, तो जगत् को सच्चिदानन्द की लीक से अलग कैसे बतलाया जा सकता है?

'एवमेवद्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन'— यही हमारा अन्तिम सिद्धान्त है।

इस जगत्-ब्रह्म का आश्रय सत्ता है, अर्थात् कर्म-ब्रह्म का आश्रय मन-प्राण-वाक् समष्टि रूप सत्ता है। सत्ता ही को कहते हैं सत्या। अतएव यह जगत् भी सत्य अर्थात् नित्य शब्देन व्यवहृत होता है। सम्पूर्ण कथन का सारांश यही हुआ कि यह विश्व चूँकि उसी परमात्मा के ज्ञान से बना हुआ है और फलतः उससे अभिन्न है अतएव उस कारणवत् यह कार्य-विश्व भी सच्चिदानन्दवत् ही है।

एक ही रस, एक ही सत्य मायावच्छेदेन सृष्ट, सृष्टानुप्रविष्ट एवं प्रविक्त इन तीन स्वरूपों में परिणत हो जाता है। रस और बल का सम्बन्ध अनन्त प्रकार का है, उन अनन्त सम्बन्धों में से हमारा सम्बन्ध केवल तीन सम्बन्धों से ही है। विभूति, योग और बन्ध यही तीन सम्बन्ध प्रकृत से सम्बद्ध हैं। सूर्य की रश्मियाँ ही सुवर्ण बनाती हैं। रस, उपरस, धातु, उपधातु, विष उपविष, इत्यादि सारे पदार्थ सूर्य से रश्मि रूप में परिणत होकर हर वक्त जमीन पर गिरा करते हैं, परन्तु साथ ही ऊपर उसी में चले भी जाया करते हैं। इन धातु आदि पदार्थों के ग्राहक प्राण भिन्न-भिन्न हुआ करते हैं। ऊपर से आती हुई सुवर्ण-रश्मियों का प्राण भिन्न प्रकार का है। विष को ग्रहण करने वाला, प्राण भिन्न प्रकार है, तांबे को ग्रहण करने वाला प्राण जुदा है। गरज यह कि सबके ग्राहक प्राण

सर्वथा पृथक्-पृथक् है। सब प्राण सर्वत्र नहीं हैं। कहीं कोई प्राण अधिक है, कहीं दूसरा अधिक है, कहीं एक प्राण की सत्ता है, तो कहीं दूसरे का अभाव है। यही कारण है, कहीं सोने की खान है, कहीं चाँदी की खान है तो कहीं कोयले की खान है। जबकि सारे पदार्थ समान रूप से सूर्य में से जमीन पर गिरते हैं तो फिर क्यों न सब जगह सब चीजें बन जातीं? इस प्रश्न का वही पूर्वोक्त उत्तर है। वास्तव में सूर्य में सारे पदार्थ पृथ्वी पर समान रूप से ही आते हैं, परन्तु सर्वत्र उनकी गति नहीं रहती। जिस वस्तु का जो ग्राहक प्राण पृथ्वी के जिस भाग में होगा, वहीं वह आता हुआ पदार्थ उस प्राण की पकड़ में आकर अपनी सत्ता कायम करेगा, बाकी बचा हुआ वापस सूर्य में ही चला जाएगा। परन्तु इस प्राण में भी एक विशेषता है। वह विशेषता यही है कि प्राण भी बिना भूत के नहीं रह सकता है। मँटर बिना प्राण के नहीं रह सकता, प्राण बिना मँटर के नहीं रहता। दोनों लाजिमो मलजूम हैं। मिट्टी बगैर भूतों के आश्रय से ही ये सौर पदार्थ ग्राहक प्राण रहते हैं। बस, मिट्टी-पाषाण आदि के विजातीय होने का भी प्रधान कारण यही है। प्राण चूँकि विजातीय है अतः उसके आश्रयभूत भूत भी विजातीय हो जाते हैं। इसीलिए एक ही मिट्टी ६४ तरह की हो जाती है, एक ही वायु ४९ तरह का हो जाता है। इन ६४ मिट्टियों में से एक मिट्टी ऐसी है जो सूर्य में से आती हुई सुवर्ण रश्मियों को अपने में बद्ध कर लेती है। बस, उस प्राण में बद्ध रश्मि को ही सुवर्ण कहते हैं। सुवर्ण साक्षात् सूर्य की रश्मि है। हवा फिल्टर करना, दूषित वायु को नेस्तनाबूद करना, यह सूर्य का काम है, अतएव भारतीय धर्म में पवित्रता के लिए सुवर्ण को प्रधान माना है। यदि किसी का अपवित्र वस्तु से स्पर्श हो जाता है, तो आज भी स्त्रियाँ अपने सुवर्ण के आभूषणों से अंजलिस्थ जल के छींटे दिया करती हैं, इसका यही वैज्ञानिक रहस्य है। हमें इस प्रपंच से केवल यही बतलाना है कि जो सुवर्ण-रश्मियाँ प्राण की पकड़ में आ गई हैं, वही सुवर्ण नाम से व्यवहृत होने लगती है। बस, रश्मि का और प्राण का जो यह पारस्परिक सम्बन्ध है उसे हम बन्ध-सम्बन्ध कहेंगे। रश्मियाँ प्राण की पकड़ में बन्ध जाती हैं। जिस दिन ये रश्मियाँ इस पकड़ से छूट जाएँगी, उस दिन सुवर्ण ही न रहेगा, सुवर्ण का स्वरूप सम्पादन करने वाला जो सम्बन्ध है, उसी का नाम बन्ध-सम्बन्ध है। रश्मिबन्धनात् जब सुवर्ण बन जाता है, तो उसमें ऊपर से सुवर्ण-रश्मियाँ और प्रविष्ट हो जाती हैं। इन प्रविष्ट सूर्य-रश्मियों से सुवर्ण गरम हो जाता है। बस, यही योग-सम्बन्ध है। सुवर्ण के साथ रश्मियों का योग जरूर हो गया है, नहीं तो यह गरम कैसे होता? परन्तु थोड़ी देर में वह पुनः ठण्डा हो जाता है, अतएव इस द्वितीय सम्बन्ध को बन्ध-सम्बन्ध नहीं कह सकते। तीसरा सम्बन्ध है- विभूति सम्बन्ध। सारा सूर्य सब पदार्थों में घुसता है। परन्तु सर्वात्मना नहीं घुसता कुछ अंश में घुसता है, बाकी अवशिष्ट रहता है। कहने को अवशिष्ट रहता है, परन्तु वास्तव में देखा जाए तो वह ज़र्रे-ज़र्रे में अभिव्याप्त है, परन्तु याद रखिए कि रहता हुआ भी वह नहीं रहने के बराबर है, क्योंकि उसका चिपाव उस वस्तु के साथ नहीं रहता। बस, इसीलिए इस सम्बन्ध को विभूति-सम्बन्ध कहते हैं। इसी के लिए 'तिष्ठन्नपि न तिष्ठति' कहा गया है। इसी विभूति-सम्बन्ध को बतलाने के लिए भगवान् कहते हैं-

मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाह तेपूवस्थितः।

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्॥

और लीजिए जिस अग्नि ने पानी को तरल बना रखा है, जो अग्नि पानी का स्वरूप सम्पादन कर रहा है, वह अग्नि बन्ध-सम्बन्ध के चक्र में फंसा हुआ है। वही अग्नि, जल बना हुआ है। यदि उसमें से अग्नि को हटा लिया जाए तो जल, जल ही न रहे। उस जल में जो ऊपर से गर्मी घुसती है, जिससे कि जल गरम हो जाता है, वह अग्नि, योग-सम्बन्ध युक्त कहलाता है। जो गर्मी बाकी बची हुई है, वही विभूति-सम्बन्ध की अधिकारी है। बस, यही तीन सम्बन्ध रस-बल में होते हैं। रस-बल में तीन सम्बन्ध होते हैं, यह बात कहने मात्र के लिए है। वास्तव में बन्धनादि सम्बन्ध तो बलों से बलों का होता है। रस कभी बन्धन में आता थोड़े ही है? परन्तु बल चूँकि बिना रस के नहीं रहते, अतः बन्धन-सम्बन्ध युक्त बलों में रहने वाला जो रस है, उसे भी बन्ध की संज्ञा मिल जाती है। बस, जैसे रश्मियाँ सुवर्ण की आत्मा बन जाती हैं, तद्वत् यह रस उन बन्धयुक्त बलों में बन्धयुक्त में बंध कर उस बल-समष्टि का स्वरूप बन जाता है। जिसने अस्थि-मांस का स्वरूप बना रखा है, वही सृष्टब्रह्म है। शरीर में से जब प्रविष्टब्रह्म अर्थात् आत्मा निकल जाता है, तब भी हाड़-मांस मौजूद रहते हैं। बस, यही साक्षात् सृष्टब्रह्म है। जिस दिन सृष्टब्रह्म निकल जाएगा, उस दिन हाड़-मांस भी न रहेंगे। तात्पर्य यही है कि बन्धयुक्त बलों की पकड़ में आकर जो रस उनका स्वरूप बनाए रखता है, वही रस, वही ब्रह्म, सृष्टब्रह्म नाम से व्यवहृत होता है। एवमेव जो रस अपने थोड़े से अंश से सृष्ट रूप में परिणत हो जाता है, उससे बाकी बचा हुआ रस शरीर में प्रविष्ट हो जाता है, सारा ही प्रविष्ट नहीं होता है, अपितु एकांश में ही प्रविष्ट होता है। बस, इस प्रविष्ट ब्रह्म का नाम ही आत्मा है। यह आत्मा सृष्टबंध बंधन में नहीं है, परन्तु प्रविविक्त ब्रह्मवत् एकान्ततः मुक्त भी नहीं है अतएव इस सम्बन्ध को योग सम्बन्ध कहते हैं। जो रस, प्रविष्ट ब्रह्म से अतिरिक्त बच जाता है, वही प्रविविक्त ब्रह्म कहलाता है। यह जिस सम्बन्ध से पदार्थों में रहता है, उसी सम्बन्ध का नाम विभूति सम्बन्ध है। यदि जरा गौर से विचार करें, तो मालूम होगा कि यह प्रविविक्त ब्रह्म भी वास्तव में प्रविष्ट ही है। प्रविविक्त प्रविष्ट रहता हुआ भी असंग है, इसीलिए उसको प्रविविक्त शब्द से कहा जाता है। वास्तव में, वह तो ज़र्रे-ज़र्रे में प्रविष्ट हो रहा है। उससे एक बिन्दु भी खाली नहीं है। वह तो व्यापक है, भला व्यापक वस्तु का भी कहीं अभाव हुआ है? बस, यह प्रविष्ट ब्रह्म ही, जिसे कि प्रविविक्त कहा करते हैं। बल सम्बन्धों के तारतम्य से देहभिमानी और देहानभिमानी-इन दो स्वरूपों में परिणत हो जाता है। वही प्रविष्ट, सावच्छिन्न-अनवच्छिन्न इन दो भागों में विभक्त हो जाता है। योग सम्बन्ध की पकड़ में जो प्रविष्ट ब्रह्म आ जाता है, वही अहमस्मि इस प्रकार का अभिमान करने लगता है। यही प्रविष्ट नाम से व्यवहृत होता है, यही सावच्छिन्न है, इसे ही आत्मा कहा करते हैं, एवं जो योग-सम्बन्ध से अलग रहता है, वही प्रविविक्त ब्रह्म कहलाता है। यह अपरिच्छिन्न है, अनभिमानी है। ■

देव पुरुष श्री राम और

अत्याचारी बाबर

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रीराम थे न्यायकारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥
ईश्वर भक्त सदाचारी थे, धीर, वीर व्रतधारी थे।
दानवता के संहारक थे, योद्धा परोपकारी थे॥
सत्य अहिंसा सदाचार के, श्री राम प्रचारी थे।
माता-पिता के सच्चे सेवक, वे पत्नीव्रत भारी थे॥
त्यागी और तपस्वी थे वे, प्रजापालक थे भारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥
निर्बलों, विकलों संतजनों का, पूरा साथ निभाते थे।
स्वयं कष्ट भारी सहकर, दुखियों के कष्ट मिटाते थे॥
विघ्न और बाधाओं से वे, खुश होकर टकराते थे।
मानवता के हत्यारों से, कभी नहीं दहलते थे॥
श्री राम से विद्या, बल में, सारी दुनिया थी हारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥
बाबर दुष्ट विधर्मी था, भारत पर चढ़कर आया था।
मानवता का दुश्मन था वह, जुल्म दुष्ट ने ढाया था॥
पढ़कर के इतिहास देख लो, कल्लेआम कराया था।
नन्है, नन्है बच्चों पर भी, तरस उसे ना आया था॥
लाखों मन्दिर तुड़वाये थे, बाबर था अत्याचारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥
श्री राम मन्दिर का झगड़ा, कोर्ट नहीं सुलझाएगा।
दिख रहा है साफ हमें यह, झगड़ा बढ़ता जाएगा॥
मजिस्ट्रेट हैं डरे हुए सब, सुनवाई को टाल रहे।
अवसरवादी गन्दे नेता, चल नित गन्दी चाल रहे॥
'अध्यादेश' लाओ मोदी जी! समझो तुम जिम्मेदारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥
बन सरदार पटेल ठोस अब, कदम उठाओ मोदी जी।
श्री राम मन्दिर बनवाओ, धर्म निभाओ मोदी जी!!
राम भक्त हैं सब आपके, मत घबराओ मोदी जी!
देश-द्रोही गद्दारों को, मार भगाओ मोदी जी!!
अवसरवादी हत्यारों से, कभी नहीं करना यारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥
नरेन्द्र मोदी जी सुन लो अब, यदि तुम देर लगाओगे।
श्री राम का मन्दिर यदि तुम, जल्दी नहीं बनाओगे॥
जनता को जो वचन दिया था, अगर न वचन निभाओगे।
साथ छोड़ देगी सब जनता, तुम पीछे पछताओगे॥
'नन्दलाल' नादान बताएगी, तुमको दुनिया सारी।
श्रीराम के गुण गाओ सब, सकल विश्व के नर-नारी॥

भारद्वाज कुल गौरव

● पं. नन्दलाल निर्भय

बहिन, जनपद : पलवल, हरियाणा

चलभाष : ९८१३८४५७७४



जीवन खो नहीं

व्यर्थ तू चिन्तित हो नहीं
व्यर्थ तू जीवन खो नहीं
क्या लेकर तुम आये थे
जो आज तुम्हारा खो गया
अपना तुम्हारा था ही कौन
जो आज पराया हो गया
झूठे मोह में खो नहीं
व्यर्थ तू जीवन खो नहीं
जो हुआ अच्छा ही हुआ
जो हो रहा वह ठीक है
जो होगा अच्छा ही होगा
यही 'गीता' की सीख है
मन में कुछ लो नहीं
व्यर्थ तू जीवन खो नहीं
जीवन के हर सुख-दुख
हो प्रभु चरणों में अर्पित
तन, मन, धन क्या चीज है
कर दो तुम जीवन समर्पित

व्यर्थ गम में रो नहीं
व्यर्थ तू जीवन खो नहीं
किसी के प्यार की क्या जरूरत
प्रभु का प्यार जो मिल जाए
मन तेरा न कभी भटके कहीं
शांति का प्यार जो मिल जाए
दुःख किसी को दो नहीं
व्यर्थ तू जीवन खो नहीं
ज्ञान की तू अलख जलाकर
हर दिलों से अंधकार मिटा दे
प्यार की तू गंगा बहाकर
इंसानियत का भाव जगा दे
नफरत के बीज तू बो नहीं
व्यर्थ तू जीवन खो नहीं

● रीना गुप्ता

फौजा बगान ट्यूब

बारीडीह, जमशेदपुर (झारखंड)

चलभाष : ९४३०७२१०५८

आर्य समाज में आइए

आर्य समाज में आइए, जीवन धन्य बनाइए।
सत्यज्ञान को पाइए, मुक्तिपथ पर जाइए॥
यहाँ ढोंग-पाखंड नहीं है, तंत्र-मंत्र-गलगंड नहीं है,
अन्धकार का नाम नहीं है, बिना तर्क के काम नहीं है;
त्रैतवाद को जानिए, वेदसत्य को मानिए॥
तन-मन दोनों स्वस्थ रहेंगे, सच्चे ईश्वर भक्त बनेंगे,
भ्रम की गलियाँ नहीं मिलेंगी, दुष्प्रवृत्तियाँ नहीं खिलेंगी;
ऋषियों के गुण गाइए, आर्यावर्त पहचानिए॥
वैदिक संध्या-यज्ञ कीजिए, तीन ऋणों से मुक्ति लीजिए
संस्कार-सर्वोच्च व्यवस्था, शुद्ध सात्विक यही संस्था;
जाति-पांति मिटाइए, मानवता को खिलाइए॥
वैदिक ज्ञान का सूर्य मिलेगा, हृदय का उद्यान खिलेगा,
तम के बादल छंट जाएँगे, विद्वानों का संग पाएँगे;
मन स्वाध्यायी बनाइए, औरों से भी कराइए॥
सत्यस्वरूप ईश्वर का जाने, ज्ञानपूर्वक सबको माने,
राम-कृष्ण का सच्चरित्र था, उनका जीवन पूर्ण पवित्र था;
चरित्र ऊँचा उठाइए, दुर्गुण सारे भगाइए॥
जो आर्य समाज में आएगा, वही श्रेष्ठ बन जाएगा,
आर्य वही कहलाएगा, जो उच्चादर्श अपनाएगा;
भावना ऐसी जगाइए, आर्य समाज में आइए॥

● ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज रातवभाटा (राज.)

चलभाष : ९४६२३१३७९७



ज्योतिष पाठ : भाग-२

ग्रीष्म और ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु

अब आइये, अगली ऋतु के बारे में बात करें। प्रत्येक ऋतु २-२ मास की होती है। (द्विराशिनाथा ऋतवस्ततोऽपि शिशिरादयः।.... सू.सि. १४/१०) इस प्रकार ज्येष्ठ और आषाढ़ और क्रान्तिवृत्तीय भाषा में कहें तो वृषभार्क और मिथुनार्क महीने वर्ष की दूसरी अर्थात् ग्रीष्म ऋतु के होते हैं। जिस दिन सूर्य वृषभ राशि में प्रविष्ट होता है ठीक उसी दिन से ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होती है और जब तक सूर्य ९०° अंश के भोगांश तक नहीं पहुँच पाता तब तक ग्रीष्म ऋतु बनी रहती है। इस प्रकार वसन्त ऋतु के बाद ग्रीष्म और पुनः ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु का क्रम होता है।

अब अगली खास बात जानने की ये है कि **दक्षिणायन जो कि २१ या २२ जून होता है**, का प्रारम्भ बिन्दु ग्रीष्म और वर्षा नामक इन दो ऋतुओं का नियमन करता है। उनका निर्धारण तय करता है अर्थात् जिस दिन सूर्य का भोगांश ९०+ अंश का होता है, उस दिन ग्रीष्म ऋतु पूर्ण होती है और वर्षा ऋतु शुरू होती है। ९०°+ अंश का अर्थ है कि क्रान्ति वृत्त पर ९०वें अंश को पार करते ही जिसको हम मिथुन राशि को पार करते ही भी कह सकते हैं। इस दिन को श्रावण संक्रान्ति या वर्षा ऋतु की संक्रान्ति से भी जाना जाता है। अर्थात् इस दिन श्रावण का महीना, वर्षा ऋतु और दक्षिणायन शुरू होते हैं। यह दिन तीन संक्रान्तियों का दिन होता है अर्थात् श्रावण या कर्क (क्रान्ति वृत्त का चतुर्थ राशि खण्ड) नामक मास संक्रान्ति, ऋतु संक्रान्ति अर्थात् ग्रीष्म ऋतु की संक्रान्ति और अयन संक्रान्ति अर्थात् दक्षिणायन संक्रान्ति। ये दिन होता है जब सूर्य परम उत्तर क्रान्ति पर होता है तथा रात सबसे छोटी और दिन सबसे बड़ा होता है। यदि आप कर्क रेखा क्षेत्र पर हों तो उस दिन आपकी छाया दीर्घतमा होगी।

दक्षिणायन की या उत्तरायण की कुल अवधि ६-६ मास की होती है। सू.सि. १४/९ में कहा गया है— **‘भोनार्मकरसंक्रान्तेः षण्मासाः उत्तरायणम्। कर्कदिस्तु तथैव स्यात् षण्मासाः दक्षिणायनम्।** (अर्थ—सूर्य की जिस दिन मकर संक्रान्ति होती है और उस ही दिन से छः महीने उत्तरायण के होते हैं। ऐसे ही छः महीने कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन के होते हैं।) इस प्रकार ३ ऋतुएँ उत्तरायण की और ३ ऋतुएँ दक्षिणायन की होती हैं। क्रान्तिवृत्तीय भाषा में कहें तो एक परामक्रान्ति से अगली परामक्रान्ति तक का षड्मासीय अवधि एक अयन कहलाती है। दक्षिणायन के अन्तर्गत वर्षा ऋतु का समय—सूर्य, क्रान्ति वृत्त में ३०°+ अंश के भोगांश से १५०° अंश के भोगांश के बीच (श्रावण और भाद्रपद के द्विमास का समय) होता है। गणितीय तौर पर संवत्सर, अयन ऋतु, मासादि से लेकर कला विकलादि पर्यन्त के सम्पूर्ण विश्लेषण को समझने में क्रान्ति की भाषा का उपयोग है। वेद में कामना की गई है, **“ग्रीष्मो हेमन्त शिशिरो वसन्तः शरद वर्षाः स्वीते नो दद्यात्।”** (अ.वे. ६/५५/२)

खास बात ये है कि सम्पात (वसन्त ०° या शरद १८०° सम्पात में से कोई भी) एक ही ऋतु का मध्य बिन्दु होता है जबकि अयन (दो ऋतुओं का मध्य बिन्दु होता है। दक्षिणायन ९०° या उत्तरायण २७०° में से कोई

● आचार्य दार्शनिय लोकेश

सम्पादक : श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्

(एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)

सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा

दूरभाष : ०१२०-४२७१४१०



भी)। हमें ऋतुओं को यथावत् लेना ही वेद का मार्गदर्शन है। **ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवी नो दुहाताम्** और इसी मार्गदर्शन के न लेने से आज के प्रचलित पञ्चाङ्ग भ्रामक कहे जा सकते हैं। ऋग्वेद १/१५५/६— **“चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीरं वीविपत्।...”** में इस बात की प्राकृतिक व्यवस्था का मार्गदर्शन है कि चक्र के समान विद्यमान वृत्त (क्रान्तिवृत्त) नवति नवती के (९०°-९०° के) चार भागों से युक्त होता है।

और अन्त में एक प्रमुख सन्देश—

“ध्रुव तारे और सप्तऋषि तारा मण्डल की पहिचान”

ध्रुव की पहिचान— आकाश में नक्षत्रों की पहिचान लेना रोचक एवं आवश्यक है। ध्रुव की पहिचान हो जाने पर नक्षत्रों का उदय अस्त, क्रान्ति वृत्त और विषुवद वृत्त आदि समझ में आ जाएँगे।

जिस प्रकार पृथ्वी का उत्तर और दक्षिण ध्रुव है और जिस प्रकार पृथ्वी का झुकाव ध्रुव की ओर जमीन के धरातल से २३°१७' पर है उसी प्रकार आकाशीय उत्तर ध्रुव भी नीचे के धरातल से ऊपर उठा हुआ दिखता है। ध्रुव तारा के आसपास सप्त ऋषि तारामण्डल के ७ तारे हैं। वे ध्रुव की परिक्रमा करते रहते हैं जिससे ध्रुव तारे की पहिचान सरलता से हो सकती है। इसके लिए सप्त ऋषि तारामण्डल की पहिचानना आवश्यक है। सप्त ऋषि के पास ही लघुनक्षत्र के तारे भी हैं। कभी-कभी सप्त ऋषि तारागण नीचे रहने के कारण दिखते नहीं हैं। उस समय उनके विरुद्ध दिशा में और सीध में एक तारामण्डल है जो अंग्रेजी के अक्षर ‘एम’ के आकार के हैं। इन्हें महर्षि या कश्यप तारामण्डल कहते हैं। इनसे भी ध्रुव तारे की पहिचान हो सकती है।

सप्त ऋषि— यह ७ तारों का झुण्ड है। यह चौकोर मुंह वाले चम्मच जैसा दिखता है। इसमें ४ तारे खाट के चार पायों की तरह हैं जिनसे कुछ लम्बाई लिए एक चौकोना बनता है। इन चारों के नाम क्रमशः **अत्रि, क्रतु, पुलह एवं पुलस्त्य** हैं। इनके नीचे ३ और तारे हैं जो इस चौकोने के छोर से कुछ तिरछी पूंछ जैसे हैं। इनके नाम हैं **अंगिरा, वशिष्ठ व मारीचि** हैं। वशिष्ठ के एकदम पास एक हल्की सी चमक वाला तारा है जिसे अरुन्धती कहते हैं। अत्रि एवं क्रतु की सीध में यदि एक लकीर में देखेंगे तो साधारण प्रकाश का एक तारा दिखेगा। यदि लगातार देखते रहेंगे तो पाएँगे कि यह तारा कभी भी चलता नहीं है। यही ध्रुव धारा है। अभ्यास से सहज ही हो जाएगा। ■

जीवन में संस्कारों की आवश्यकता

- जिस क्रिया से शरीर, मन और आत्मा उत्तम हो उसे संस्कार कहते हैं।
- संस्कार शब्द से अनेक अर्थ लिए जाते हैं जैसे- पूर्ण करना, विशुद्धता, शिक्षा, अनुशीलन, प्रशिक्षण, तैयार करना, सजाना, अलंकार, अन्तःशुद्धि, पवित्रीकरण, छाप डालने की शक्ति, पुनीत कृत्य, मांजना, गुणी बनाना, निखारना अर्थात् आदर्श बनाना आदि।
- जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में तपाकर उसे शुद्ध बना देता है वैसे ही वैदिक संस्कृति में उत्पन्न होने वाले बालक को संस्कारों की भट्टी में डालकर उसके दुर्गुणों को निकालकर उसमें सदगुणों को डालने का प्रयास किया जाता है इसी प्रयत्न को संस्कार कहते हैं।
- महर्षि चरक ने कहा 'संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते' अर्थात् पहले के विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सदगुणों के आधान करने को संस्कार कहते हैं।
- **संस्कार :** सम् + कृ + धञ्
सम्पर्युपेभ्यः करोती भूषणे- जिससे शरीर आदि सुभूषित हो।
संस्करणं गुणान्तराधानं संस्कार : - अन्य गुणों के आधान को संस्कार कहते हैं।
- नहरें खोदते हैं, बाँध बाँधते हैं, सड़कें बनाते हैं, रेलें बिछाते हैं, ऊँची-ऊँची मीनारों का निर्माण हो रहा है, बड़े-बड़े बाजारों का निर्माण हो रहा है। वाहन, मकान, दुकान सभी वातानुकूलित तैयार किए जा रहे हैं परन्तु इन सबका उपभोग जो कर रहा है उस मनुष्य

● **पं. हरिशंकर अग्निहोत्री, वैदिक प्रवक्ता**
५, आनंद ब्रादर्स, बल्केश्वर, आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९८९७०६०८२२



का निर्माण नहीं हो रहा है।

- मनुष्य ने शेर को अग्नि में से निकलना सिखा दिया, रीछ व बन्दर को नाचना सिखा दिया, हाथी से मनचाहा करवाया, घोड़े की सवारी की, खतरनाक जीवों को काबू में कर लिया लेकिन स्वयं की सन्तान बिगड़ गई। कहना नहीं मानती, क्यों? संस्कारों के अभाव में।
- पहली बार चोरी की डरते-डरते, चोरी के मार्ग पर पहली बार चला था इसलिए भय तो लगा था, परन्तु चोरी कर डाली, पकड़ा नहीं गया, इसीलिए चोरी का संस्कार पड़ गया। दूसरी बार कम भय लगा, तीसरी बार दिलेरी से की, चौथी बार पकड़ा गया... संस्कारों के जमा होते-होते यह नतीजा हुआ कि जेल की काल कोठरी में जा पहुँचा।
- पहली बार चोरी कर चुकने के बाद न पकड़े जाने पर वह समझना कि चोरी कर ली, फल से बच गए, गलत धारणा थी, क्योंकि अन्त में जाकर जो काल कोठरी में जा बैठे वह शुरू में की गई चोरी का ही संस्कार पर संस्कार पड़ते रहने पर जो जोड़ जमा हो गया उसी का यह प्रत्यक्ष परिणाम है।

संस्कारों के नाम व उनके करने का समय

- (१) **गर्भाधान संस्कार-** गृहाश्रमी होने पर संतान प्राप्ति के लिए वीर्य निषेचन द्वारा गर्भ स्थापना करना।
- (२) **पुंसवन संस्कार-** गर्भ स्थिति-ज्ञान हुए समय से दूसरे व तीसरे महीने में।
- (३) **सीमन्तोन्नयन संस्कार-** गर्भ-मास से चौथे, छठे या आठवें महीने के शुक्ल पक्ष में।
- (४) **जातकर्म संस्कार-** शिशु के जन्म समय में।
- (५) **नामकरण संस्कार-** जन्म से ११वें, १०१वें अथवा द्वितीय वर्ष में जिस दिन जन्म हुआ हो उस दिवस।
- (६) **निष्क्रमण संस्कार-** जन्म से तीसरे महीने के शुक्ल पक्ष में या चौथे महीने में जन्म तिथि को।
- (७) **अन्नप्रासन संस्कार-** छठे महीने में।
- (८) **चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार-** प्रथम व तीसरे वर्ष में।
- (९) **कर्णवेध संस्कार-** तीसरे या पाँचवें वर्ष में।
- (१०) **उपनयन (जनेऊ) संस्कार-** पाँचवें वर्ष से आगे सुविधानुसार।
- (११) **वेदारम्भ संस्कार-** उपनयन वाले दिन, दूसरे दिन या एक वर्ष

में सुविधानुसार।

- (१२) **समावर्तन संस्कार-** वेदादि, उत्तम आवश्यक शिक्षा पूर्ण करके गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़ते समय।
- (१३) **विवाह संस्कार-** पुरुष की आयु २५ वर्ष तथा स्त्री की आयु १८ वर्ष कम से कम होनी चाहिए।
- (१४) **वानप्रस्थ संस्कार-** संतानों के स्वावलम्बी एवं सन्तानों के सन्तान होने पर।
- (१५) **संन्यास संस्कार-** पूर्ण वैरागी होने पर।
- (१६) **अन्येष्टि संस्कार-** प्राणों के निकल जाने पर शरीर का दाह कर्म किया जाना।

संस्कारों के करने की विधि जानने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज द्वारा रचित **संस्कार विधि** नामक पुस्तक का अध्ययन करें तथा संस्कारों को कराने के लिए अथवा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- ९४११०८२३४०, ९८९७०६०८२२ अथवा निकटस्थ आर्य समाज में सम्पर्क करें। ■

- अन्नादि की अच्छी-अच्छी किस्म तैयार कर ली जो कि मात्रा और गुणों में अच्छी है, आप्रादि की गुणवत्ता में वृद्धि कर ली, गौ, अश्वदि की नस्लों में भी गुणाधान कर दिया लेकिन मनुष्य के गुणों में हास हो रहा है।
- किसान उत्तम बीज तैयार करता है। भूमि को उर्वरा बनाता है, सही ढंग से बुवाई करता है तथा समय से निराई-गुड़ाई-सिंचाई करता रहता है तब उत्तम फसल से उत्तम लाभ लेता है इसी प्रकार सन्तान निर्माण को भी गृहस्थों को समझना चाहिए।
- जिस प्रकार सुन्दर, आकर्षक बगीचे का निर्माण एक-एक पौधे को नियोजित ढंग से लगाया जाता है। समय-समय पर निराई-गुड़ाई, सिंचाई, कटाई-छंटाई होती रहती है, तब तैयार होता है। उसी प्रकार एक अच्छे परिवार-समाज के निर्माण के लिए हमें प्रत्येक बच्चे के साथ संस्कार रूपी नियोजित कार्यक्रम अपनाना चाहिए।
- बालक जब गर्भ में होता है तब माता-पिता के शरीर के अंश (रज + वीर्य) से बालक के शरीर का निर्माण होता है तथा बालक के मस्तिष्क में विचारों का संग्रह माता-पिता के विचारों से होता है।
- जब गर्भ में बालक रहता है तब माँ के जीवन का सारा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है, माँ के खान-पान, चाल-चलन, प्रत्येक क्रिया-कलाप का सारा प्रभाव बच्चे के मस्तिष्क पर पड़ता है। गर्भिणी जिस व्यवहार से प्रभावित होती है उसी व्यवहार से गर्भस्थ शिशु भी प्रभावित होता है।
- उत्तम संतान के निर्माण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं कि **माता-पिता को उचित है कि गर्भाधान से पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध, अण्डा, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़कर जो शक्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को प्राप्त कराएँ ऐसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रज-वीर्य भी दोषों से रहित होकर उत्कृष्ट गुण युक्त हों जिससे स्वस्थ एवं उत्तम गुण युक्त सन्तान जन्म लेगी।**
- जैसे भोजन (जो भी पदार्थ खाया है) शरीर का अंग बन जाता है। **अच्छा भोजन-अच्छा शरीर, खराब भोजन-खराब शरीर**, इसी प्रकार संस्कारों से मन में वैचारिक वातावरण तैयार होता है। अच्छे कर्म-अच्छे फल अर्थात् सुख पाने के लिए संस्कारों की महती आवश्यकता है।
- जब एक व्यक्ति बिगड़ता है तो हजारों को बिगाड़ देता है तथा जब एक व्यक्ति सुधरता है तो हजारों को सुधार देता है इसीलिए **संस्कारों की आवश्यकता है।**
- मार्ग पर दुर्घटनाओं से बचने के लिए नियम बनाए जाते हैं। इसी प्रकार जीवन को अच्छा बनाने के लिए संस्कारों की आवश्यकता है।
- अनुशासन ही जीवन को महान बनाता है। संस्कार हमें अनुशासन सिखाते हैं।
- संस्कारित बालक का खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, व्यवहार अच्छा होता है। वह माता-पिता व बड़ों का सम्मान करता है। दुःखी

व्यक्ति की सहायता करता है। प्रत्येक कार्य नियमित करता है। उसकी दिनचर्या व कार्यशैली ठीक होती है।

- बच्चों को संस्कारित करने के लिए बड़ों को भी संस्कारित होना पड़ता है।
- सुन्दर, बलवान, बुद्धिमान, धार्मिक आदि जिन गुणों से युक्त बनाना चाहे वैसा ही संतान का निर्माण संस्कारों के माध्यम से किया जा सकता है।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज संस्कारों का महत्व लिखते हैं- **जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकता है और संतान अत्यन्त योग्य होते हैं अतः संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।**
- प्रत्येक व्यक्ति पर जन्म लेते समय दो प्रकार के संस्कार प्रभावित करते हैं। एक प्रारम्भ के संस्कार अर्थात् पूर्व जन्मों के संस्कार तथा दूसरे वंशानुगत अर्थात् माता-पिता से प्राप्त संस्कार।
- बालक बालिकाओं के **'जन्म दिवस'** वैदिक रीति के अनुसार मना कर भी बच्चों में संस्कार डाले जा सकते हैं।
- प्रतिवर्ष आने वाला यह अवसर विशेष प्रेरणादायक होने से अन्यो के लिए भी मार्गदर्शन का कार्य कर सकता है।
- वर्तमान में पारिवारिक स्नेह और सौहार्द में जो कमी दिखाई देती है तथा स्वार्थ की भावना की प्रबलता के कारण पारिवारिक विघटन जैसी परिस्थितियाँ नित्य प्रति देखते हैं उसके मूल में संस्कारों की उपेक्षा ही है। जिस प्रकार किसी पात्र को माँजकर ही हम उसे प्रयोग में लाते हैं उसी प्रकार एक अबोध, अनगढ़ बालक को भी संस्कारित करने की आवश्यकता होती है। अन्यथा उसका संस्कारहीन हो जाना निश्चित है। संस्कारहीन जीवन पशु के समान ही होता है। अतः संस्कारों के महत्व को स्वीकार करना ही चाहिए।
- जीवन में अवगुणों को निकालने व सद्गुणों को डालने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने पूर्व ऋषियों के अनुभव के आधार पर वेदानुसार सोलह संस्कारों को करने-कराने के लिए उपदेश किया तथा **संस्कार विधि** नामक ग्रन्थ लिखा जिससे प्रत्येक गृहस्थ सरलता से संस्कारों के महत्व एवं विधि को समझ सकता है। ■

चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ एवं सम्पूर्ण जिले में वेद प्रचार दिनांक ७ मार्च से ७ अप्रैल तक

समापन दिनांक ५ से ७ अप्रैल को नागौर में

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नागौर (राज.) तथा परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में सम्पूर्ण नागौर जिले में आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के वेद प्रचार रथ के सहयोग से वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु वैदिक मूर्धन्य विद्वानों के मुखारविन्द से यज्ञ तथा सत्संग के द्वारा वैदिक ज्ञान गंगा स्थान- स्थान पर प्रवाहित होगी। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें तथा लाभ प्राप्त करें।

निवेदक- प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, नागौर

किशनाराम आर्य (प्रधान) चलभाष : ९९५०६०८६८०

यश मुनिजी (मन्त्री) चलभाष : ९८२९१३८७३८

आर्य समाज के नियमों में वेद

स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने वेद के महत्व को समझा और बताया कि वेद इस सृष्टि का आधार ग्रन्थ है, यह प्रभु की वाणी है। यह जीव मात्र को कल्याण के लिए परमपिता परमात्मा का हमारे लिए दिया हुआ अमूल्य उपहार है। इसलिए हम जीवन के आरम्भ से लेकर अन्त तक वेद को अपने साथ रखते हुए उसमें दिए आदेशों का पालन करें। जब स्वामीजी ने आर्य समाज की स्थापना की तो इस समाज के नियमों का संचय अन्य संस्थाओं के अनुरूप न कर इनका निर्माण वेद मन्त्रों के आधार पर ही किया। वेद में बहुत से मन्त्र यत्र-तत्र मिलते हैं, जो आर्य समाज के नियमों की व्याख्या कर रहे हैं। स्थानाभाव से हम सब मन्त्रों को तो यहाँ उद्धृत न कर सकेंगे हों। प्रत्येक नियम के साथ एक-एक मन्त्र देते हुए सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि आर्य समाज के नियम वेदादेश का पालन करते हुए ही बनाए गए हैं। यथा-

आर्य समाज के प्रथम नियम के आलोक में कहा गया है कि **“सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर हैं।”**

इस आधार पर दो विषयों की ओर इंगित किया गया है- (१) सब सत्य विद्या अर्थात् ब्रह्म विद्या में आता है तथा (२) पदार्थ विद्या के अन्तर्गत आता है अर्थात् सृष्टि विद्या, प्रकृति विद्या अथवा हमारे इस जगत के कारण की विद्या।

इस जगत् में जितनी भी विद्याएँ हैं, सब इन दो विद्याओं के अन्तर्गत ही आती हैं और परमपिता परमात्मा इन सब विद्याओं का आदि मूल है। इसका प्रमाण ऋग्वेद के मन्त्र संख्या १०.७१.१ में इस प्रकार दिया है-

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रेरत नामधेयं दधान्य।

यदेशां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीतोत्त्रेरणा तदेषां निहितं गुहावि।।

ऋग्वेद का यह मन्त्र आर्य समाज के प्रथम नियम सम्बन्धी चर्चा का ही आलोक कर रहा है। मन्त्र बताता है कि सृष्टि के आरम्भ में वेदवाणी चार ऋषियों के माध्यम से समस्त प्राणियों के अन्तःकरण में प्रकट हुई। इस व्यवस्था को मनु महाराज ने भी बड़े गौरव से स्वीकार किया है। अतः यह प्रथम नियम का मूल ऋग्वेद का यह मन्त्र ही है। इस सब से यह तथ्य सामने आता है कि वह परमात्मा आदि गुरु हैं, वह गुरुओं का भी गुरु होने के कारण प्रत्येक क्षण स्मरणीय है।

२. आर्य समाज के दूसरे नियम में कहा है कि **“ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करने योग्य है।”** इस प्रकार इस नियम के माध्यम से ईश्वर के गुणों का वर्णन करते हुए बताया है कि वह प्रभु ही सृष्टि की रचना करता है। प्रभु के यहाँ बीस नाम दिए हैं उन सबके लिए वेद में ही हमें अनेक मन्त्र मिलते हैं। यहाँ यदि इन सब बीस गुणात्मक नामों के लिए व्याख्या करें तो पूरी एक पुस्तक बन जाएगी। इसलिए सब नामों की चर्चा न कर केवल दो गुणात्मक नामों के लिए वेद मन्त्र की चर्चा करते हैं।

यजुर्वेद के मन्त्र संख्या ३६.५ में ईश्वर के एक नाम सच्चिदानन्दस्वरूप के सम्बन्ध में मन्त्र इस प्रकार उपदेश कर रहा है :

कस्त्वा सत्यो मदानां महिष्ठो मतस्वंधसः। दृढा चिदारुजे वसु।।

ईश्वर अनादि भोगों से मिलने वाले आनन्द से भी अधिक आनन्दकर

● डॉ. अशोक आर्य

१/१६ रामप्रस्थ ग्रीन वैशाली, गाजियाबाद (उ.प्र.)

चलभाष : ९७१८५२८०६८



और तीनों कालों में एक जैसा है।

हमारा प्रभु इस सृष्टि के कण-कण में व्यापक होने के साथ ऋग्वेद के मन्त्र १०.१२५.८ में आर्य समाज के इस दूसरे नियम के अन्तिम भाग की चर्चा इस प्रकार की है-

अहमेव वात इव प्र वाय्यारभमाना भुवनानि विश्वा।

परो दिवा पर एना पृथिव्येतावती महिना संखभूव।।

मन्त्र उपदेश कर रहा है कि वह परमपिता परमात्मा ही सबको गति देता, सब भुवनों को बनाता एवं नाश करता है। यह दृश्यमान दृष्टि उसकी महिमा व महती शक्ति से उत्पन्न हुई है।

इससे स्पष्ट होता है कि वह प्रभु सृष्टि करता तो है ही इसके साथ ही साथ वह इस सृष्टि का हास भी करता है।

३. वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना- पढ़ाना और सुनना- सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

इस नियम में दो बातों पर बल दिया गया है। प्रथम के अन्तर्गत वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है तथा दूसरे के अन्तर्गत वेद का पढ़ना- पढ़ाना और सुनना- सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। मनु महाराज ने धर्म के जो दस लक्षण बताए हैं, यह ही धर्म को प्रतिपादित करते हैं। इन धारणीय लक्षणों के अतिरिक्त पञ्च महायज्यों के नित्य करना भी धर्म के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है- सुनने के साथ सुनाने पर भी जोर दिया गया है। इसे केवल धर्म ही नहीं अपितु परमधर्म कहा गया है। इस प्रकार वेद के स्वाध्याय को परमधर्म माना गया है। अथर्ववेद में इस सम्बन्ध में मन्त्र संख्या १०.८.३२ में इस प्रकार कहा गया है-

देवस्य पश्य काव्यं ण ममार न जीर्यति।।

अर्थात् परमेश्वर के वेद रूपी काव्य को देख जो न कभी मरता है, न वह जीर्ण होता है। यह ज्ञान मानवमात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के आरम्भ में पिता ने दिया था अतः यह संहिता ज्ञान था, जिसे बाद में पुस्तक का रूप दिया गया। इसका स्वाध्याय प्रत्येक प्राणी के लिए आवश्यक है।

४. चतुर्थ नियम सत्य पर बल देता है यथा “सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।”

इसका भाव है कि जिससे हित हो सके वह सत्य है। सत्य शाश्वत होता है किसी काल में यह परिवर्तित नहीं होता। साधारण भाषा में हम कह सकते हैं कि सत्य को जानना, मानना, कहना तथा उसके अनुसार आचरण करना ही सत्य है। मनु महाराज ने जो धर्म के दस लक्षण बताए हैं उनमें सत्य भी एक है। विजय केवल सत्य की ही होती है **वचनं श्रेयः** अर्थात् सत्यवाणी ही श्रेष्ठ है।

यजुर्वेद १९.७७ के अन्तर्गत कहा गया है कि-

दृष्ट्वा रूपे व्याक्रोतु स्यान्निते प्रजापतिः।

अश्रद्धामन्त्रितेऽदधाच्च पञ्च सत्ये प्रजायाति।।

ईश्वर ने रूपों को जानकर सच और झूठ को अलग-अलग कर दिया है तथा सत्य में ईश्वर ने श्रद्धा को रखा है। ऋग्वेद ७.१०४.१२ में तो प्रभु ने बताया है कि सत्य को जानना सरल है।

५. आर्य समाज के पाँचवें नियम में धर्म पर बल दिया है। कहा है **“सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।”**

आर्य समाज का यह पंचम नियम हमें सब काम धर्मानुसार करने का आदेश देता है। धर्म क्या है, इसका वर्णन हम पीछे कर आए हैं। वास्तव में कर्तव्य पालन को ही हम धर्म कह सकते हैं। हमें स्वयं को बलवान व शरीर को स्वस्थ रखना हमारा धर्म है। यश प्राप्त करने वाले जितने भी कार्य हैं वह सब धर्म पर ही आधारित होते हैं। वेद, रीति पालन और जो आत्मा को प्रिय लगे वही धर्म है। जीवन में सोलह संस्कार भी धर्म का मार्ग है। पंच महायज्ञ भी धर्म का अंग है। महर्षि ने संस्कार विधि में भी गृहस्थ के गुणों तथा दिनचर्या का जो वर्णन किया है, यह धार्मिक व्यक्तियों के लक्षण ही तो हैं। मनुस्मृति तथा मुण्डकोपनिषद् में इस सम्बन्धी अनेक श्लोक मिलते हैं।

आर्य समाज का यह नियम किसी व्याख्या का मोहताज नहीं है। इसमें संसार के उपकार का आदेश देते हुए सकल संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाने का उत्तम उपदेश किया गया है। संसार का उपकार तभी सम्भव है जब हम शारीरिक रूप से उन्नत हों, आत्मिक रूप से भी उन्नत हों और समाज में भी हमें सम्मानित दृष्टि से देखा जाए। हम जानते हैं कि वेद में अनेक बार आर्य शब्द आया है। रामायण के राम माता सीताजी को आर्य कह कर पुकारते हैं तो सीता भी राम को आर्य पुत्र ही कहती हैं। जिस वेद को कुछ ब्राह्मणों ने अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बना लिया था, स्वामीजी ने उनका मार्ग सबके लिए खोलकर सबके उत्थान का मार्ग बना दिया। इस प्रकार वेद के आलोक में यह नियम सबकी उन्नति का मार्ग खोल देता है।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. आर्य समाज के सातवें नियम में **“सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए”** सम्बन्धी चर्चा की है।

छठे नियम में संसार का जो उपकार करने का आदेश दिया गया है उसका समाधान इस सातवें नियम में किया गया है। सातवें नियम में यथायोग्य बर्ताव करेंगे तो संसार का उपकार स्वतः हो जाएगा। अतः आर्य समाज सबके साथ प्रेमपूर्वक रहने का आदेश देता है। अथर्ववेद ३.३०.२ में कितना सुन्दर उपदेश दिया है—

अनुव्रता पितुः पुत्रो मात्रा भवन्तु समन्नाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वचन वदतु शंतिवाम्।।

पुत्र पिता का आज्ञाकारी तथा माता की इच्छा से चलने वाला तथा माता मधुरभाषी हो। इस प्रकार मैं मधुरता की मूर्ति बन जाऊँ। इस प्रकार यह सब से प्रीतिपूर्वक व्यवहार का सन्देश देता है।

८. आठवें नियम में विद्या को बढ़ाने के लिए उपदेश करते हुए कहा है **“अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।”**

वेद को विद्या का आदि स्रोत कहा गया है। इसलिए अविद्या का नाश करना है तो तथा विद्या की वृद्धि करनी है तो भी वेद की शरण में ही जाना होगा। यजुर्वेद ४०.१५ में इस प्रकार उपदेश किया गया है—

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय सह।

अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते।।

परमपिता उपदेश के माध्यम से कह रहे हैं कि जो विद्या और अविद्या दोनों को एक साथ जानता है भाव यह है कि जो ज्ञान और कर्म को एक साथ अपने जीवन की साधना में लाता है, न केवल ज्ञानपूर्वक ही कर्म को करता है अपितु सदा कर्तव्य कर्म युक्त ज्ञान की वृद्धि भी करता रहता है, वह अपने कर्तव्य कर्म से मृत्यु को भी हर कर विद्या से अमृत मोक्ष को प्राप्त होता है। इसलिए इस नियम में विद्या की वृद्धि का उपदेश किया गया है।

९. आर्य समाज का नवम नियम में सबकी उन्नति पर बल देते हुए कहा है कि **“प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।”**

आर्य समाज के इस नवम नियम के अन्तर्गत मनुष्य को स्वार्थ भाव के स्थान पर समग्र विश्व की उन्नति का आदेश दिया है। सबकी उन्नति इस नियम का ध्येय है। यजुर्वेद के ४०.२ मन्त्र के अन्तर्गत **कुर्वन्नेह कर्मणि...** के माध्यम से कहा गया है कि परम पुरुषार्थपूर्वक कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो तेरे लिए उद्धार का कोई अन्य मार्ग नहीं कर्तव्य कर्म से मनुष्य में दोष नहीं रहते। **इसके बिना उन्नति भी सम्भव नहीं।**

ऋग्वेद के मन्त्र ८.२.१८ में भी **इच्छति देवाः...** के अन्तर्गत वह (प्रभु) तो प्रमादी व आलसी को दण्डित करते हैं। अतः अपनी व सबकी उन्नति के लिए पुरुषार्थी बनो। अतः सब प्रकार की उन्नति के लिए ऋषि ने पुरुषार्थी बनने को इस नियम से आदेश दिया है।

मन्त्र के दूसरे भाग में कहा है कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। **सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुःखभागभवेत्।।** नियम का यह भाग सामाजिक संगठन पर बल देता है और सबके सुख की कामना के लिए भी पुरुषार्थ करने पर बल देता है। इस भावना में रहें तो कभी तथा कहीं भी युद्ध या टकराव का प्रश्न ही नहीं आता। भाव यह है कि हम अपना जीवन यज्ञमय बनाएँ।

१०. आर्य समाज का यह अन्तिम नियम विगत नियमों का सार ही कहा जा सकता है यथा **“सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।”**

आर्य समाज के दशम व अन्तिम नियम में आदेश दिया है कि अब लोग सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में राज्य के अधीन रहें अर्थात् जिन कर्मों से सबका लाभ हो इस प्रकार के काम करने की इच्छा न भी हो तो भी करें। यह निश्चित रूप से करनीय कर्म हैं। यह आर्य समाज के विगत नौ नियमों का निचोड़ कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त जो भी हितकारी नियम हैं उन्हें करने में सब स्वतन्त्र रहें। चाहे हमारा परिवार हो, चाहे समाज जब-जब भी इस नियम का विरोध कर व्यक्तिगत लाभ के लिए इस नियम का उल्लंघन हुआ है तब-तब ही लड़ाई- झगड़ा, कलह- क्लेश हुआ है। इसलिए स्वामीजी ने इस नियम को अत्यधिक महत्व दिया है, जिसके पाश में बंधकर हम समाज का कल्याण कर सकते हैं नियमों का सार बताते हुए इस पर चलना आवश्यक माना है।

यह सामाजिक नियम एक प्रकार से बन्धन है किन्तु इसके पाश से मुक्त होते ही हम न तो अपना भला कर पाते हैं और न ही दूसरों का। इसलिए स्वामीजी ने जिन दस नियमों को वेद की आज्ञाओं से बाँध कर समाज को दिया है, वह प्रभु आदेश से कम नहीं है। इन्हें मानना, इनके अनुरूप अपने जीवन को चलाना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। यही कल्याण का मार्ग है, यही सुख का साधन है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को वेद के अनुरूप कार्य करने के लिए स्वयं को आर्य समाज के दस नियमों के साथ बंधना होगा। ■

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ एक लाख रुपए

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

मुख्य कार्यालय : आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-२४४२२१

गत अठारह वर्षों से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अग्रणी 'आर्यावर्त केसरी' पाक्षिक पत्र के द्वारा सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है। प्रतिभागियों के उत्साहवर्द्धन के लिए आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे-

प्रथम पुरस्कार : एक लाख रुपए तथा स्मृति चिह्न

द्वितीय पुरस्कार : पचास हजार रुपए तथा स्मृति चिह्न

तृतीय पुरस्कार : पच्चीस हजार रुपए तथा स्मृति चिह्न

नामित पुरस्कार : इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिए जाएंगे।

सांत्वना पुरस्कार : एक-एक हजार के पच्चीस पुरस्कार।

कैसे बनेंगे विजेता :

(१) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।

(२) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।

(३) आर्यावर्त केसरी के २५ सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण निःशुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।

(४) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक ७ जुलाई २०१९ को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बंगलुरु, कोलकाता, चैन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़ा, अमहदाबाद, हरिद्वार, देहरादून, उदयपुर तथा कोटा आदि में संपन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा। पच्चीस से अधिक परीक्षार्थी होने पर ही केन्द्र बनाया जाएगा।

♦ रजिस्ट्रेशन शुल्क देने में अक्षम प्रतिभागियों के शुल्क में सहयोगी बनें।

♦ देशभर में केन्द्र संचालकों की आवश्यकता है, जो परीक्षा के केन्द्र अपने नगरों में बनवाने के लिए हमसे सम्पर्क और सहयोग करें।

♦ अपने प्रियजनों की स्मृति के पुरस्कार उनके नाम से नामित कराकर आप स्वयं दें।

विशेष :

१. जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।

२. जो भी धर्मनिष्ठ सज्जन अपनी ओर से कोई नामित पुरस्कार देना चाहेंगे, उनकी इच्छानुसार (स्वयं या किसी प्रियजन के नाम से, जैसा वे चाहें) उनके द्वारा पुरस्कार दिलवाया जाएगा।

♦ परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय पत्र की छायाप्रति के साथ १५० रुपए की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभाग को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी वार्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-३०४०४७२४००२ (आईएफएससी कोड एसबीआईएन ००००६१०) में रु. २०० (दो सौ रुपए केवल) जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक १ अक्टूबर से २०१८ से प्रारम्भ हो चुके हैं। अमरोहा कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराए जा सकते हैं।

नोट : गुरुकुल के आचार्य आयोजन समिति से सम्पर्क कर अपने गुरुकुल में परीक्षा-केंद्र बनवा सकते हैं तथा गुरुकुल से ही रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। आर्य समाज के प्रधान/मन्त्री भी अपने आर्य समाज में केन्द्र बनवा सकते हैं।

संरक्षकगण

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
प्रधान- अखिल भारतीय
गुरुकुल परिषद

ठा. विक्रम सिंह, दिल्ली
अध्यक्ष- वैदिक सिद्धांत रक्षक मंडल
एवं राष्ट्र निर्माण पार्टी

सुरेशचन्द्र आर्य, अहमदाबाद
प्रधान- सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

डॉ. सोमदेव शास्त्री
प्रधान- वैदिक मिशन,
मुंबई

आयोजन समिति

सुमन कुमार वैदिक-मुख्य संयोजक
निवास- जे-३८०, बीटा-II, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.),
चलभाष : ८३६८५०८३९५

डॉ. अनिल रायपुरिया-संयोजक
निवास- कोट बाजार, अमरोहा (उ.प्र.),
चलभाष : ९८३७४४२७७७

डॉ. अशोक कुमार आर्य
संपादक- आर्यावर्त केसरी
चलभाष : ९४१२१३९३३३

भाग-२

महाभारत के पश्चात का यथार्थ दर्शन, वर्तमान का दर्पण

श्री सत्यपाल पथिक के शब्दों में-

इधर हमारे घरों में ऐसी अविद्या फैली।
जिसके दागों से जीवन की चादर हो गई मैली।
वेद का पढ़ना और पढ़ाना छोड़ दिया था लोगों ने।
सब को घेरा छुआछूत और भेदभाव के रोगों ने।।
चहुँ ओर चल रही थी आंधी वहमों और पाखण्डों की।
लूट मची यजमानों की और तौदें भरती पण्डों की।।
गंगा में स्नान करो तो पाप सभी कट जाते थे।
मढ़ी, मसानों की पूजा में लोग ठोकरें खाते थे।।
पनप रहे थे खूब गुरुडम सेवक चेली चेलों से।
आँखों वाले अन्धे होते यहाँ रसीले खेलों से।।
फँसा जा रहा था जब सारा भारत वर्ष जलालतों में।
तभी अचानक चमक उठी एक किरण अंधेरी हालत में।।

उपरोक्त पद्यांशों से लेखक यह कहना चाहता है कि महाभारत युद्ध में सभी ज्ञानी, विज्ञानी, वेदान्ती, उपदेशक, निर्देशक, रथी, महारथी, बलवान, धनवान आदि सभी समाप्त हो गए तो भारत अज्ञान के अंधेरे में डूब गया। जब ज्ञान विज्ञान समाप्त हो गया तो ढोंगी, पाखण्डी, पण्डे, पुजारी और गुरुओं की बाढ़ आ गई जो आज तक भी चढ़ी हुई है। इन पाखण्डी पण्डे, पुजारी और गुरुओं ने शास्त्रोक्त ज्ञान रूप आँखों से कम दिखने वाले रोगियों को, अज्ञान रूपी काला चश्मा पहना दिया, तो जो थोड़ा बहुत दिखाई देता था वह भी दिखाई देना बंद हो गया। धर्म के मामले में आज हमारी हालत कुछ ऐसी ही हो गई है। यहाँ पर यह कहावत सही सिद्ध होती है कि “अंधों में काना राजा।” अंधे मानव समाज को ये ढोंगी, पाखण्डी जिधर नचाना चाहते हैं, तो अज्ञान वश समाज उधर ही नाचना शुरू कर देता है।

गीता में कहा गया है कि जब-जब धर्म की हानि होती है, तब- तब भगवान अवतार लेते हैं। इस श्लोक का भी पौराणिकों ने गलत अर्थ अपने स्वार्थ के लिए कर के समाज को भ्रम में डाल दिया है। गीता के उपरोक्त श्लोक को आधार मानकर, भारत में अनेक भगवान कुकरमुते की तरह पैदा हो गए हैं और होते ही जा रहे हैं। जिनका कोई अन्त दिखाई नहीं देता है। एक बात तो अन्य सम्प्रदायों में अच्छी हो गई है जैसे इस्लाम, ईसाई, सिख आदि सम्प्रदायों में पैगम्बर, गुरु आदि पैदा होने बंद हो गए हैं, अन्यथा हालत बड़ी खराब हो जाती। मगर हिन्दुओं की जगत जननी तो भगवान पैदा करती ही जा रही है। अवतार बाद की रोटी सेंककर ये पाखण्डी अपना पेट भर रहे हैं। इनको नर्क में भी ठिकाना नहीं मिलेगा। परमात्मा कभी भी अवतार नहीं लेता, अवतार हम जीव-जन्तु अपने-अपने कर्मानुसार जन्म लेते और मरते रहते हैं।

● स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती

८/५४, तेजेन्द्र नगर भाग-७,

चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात

चलभाष : ८१५५०५५२६०



ऐसे दिशा भ्रमित समाज को सही दिशा देने के लिए परमात्मा मुक्त एवं वेद संस्कारित आत्माओं को पृथ्वी पर जन्म देता है, जो वेदों की मर्यादाओं में रहकर परमात्मा की आज्ञा को शिरोधार्य कर के अपना जीवन-यापन करती है। तो स्वतः ही उनका जीवन एक आदर्श जीवन हो जाता है। जिन्हें हम आदर्श पुरुष कहते हैं और ऐसी महान आत्माओं को हम अपने अज्ञान वश अवतार मान बैठते हैं। ऐसी महान आत्माएँ ही समय-समय पर जन्म लेती रहती हैं जो अज्ञानियों को वेद रूपी ज्ञान का अमृतपान कराती हैं। जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगी राज श्री कृष्ण ने वेद मर्यादाओं में रहकर अपना जीवन-यापन किया। ये दोनों महापुरुष परमात्मा नहीं थे क्योंकि परमात्मा तो जन्म-मरण रहित है।

उपरोक्त प्रकार की ऐसी ही ‘अंधेर नगरी चोपट राजाओं’ के समय से, आर्यवर्त (भारत) के गुजरात प्रान्त के मोरवी रियासत के पास के एक गाँव टंकारा में महान आत्मा ने सन् १८२४ में जन्म लिया। जिनका बचपन का नाम मूल शंकर रखा गया था। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात इनका नाम ‘स्वामी दयानन्द सरस्वती’ विश्वविख्यात नाम से जाना गया। तत्पश्चात इनको महर्षि नाम से सम्मानित भी किया गया। प्रतिवर्ष जैसे हिन्दू लोग शिवरात्रि को पाखण्ड पूर्वक मनाते हैं, वैसे ही विक्रम सम्वत् १८९४ में टंकारा गाँव में मनाया जा रहा था। तो....

कवि श्री सत्यपाल पथिक के शब्दों में-

यही साल था विक्रमी सम्वत अठारह सौ चौरानवे।
शिव रात्रि का महा पर्व जब आया उनके जीवन में।।
कहा पिता ने व्रत रखो और धीरज भी रखना होगा।
पूरे दिन का निराहार उपवास तुम्हें करना होगा।।
बिना अन्न जल ग्रहण किये जब दिवस गया और रात आई।
मन्दिर में जाकर जब शिव पिण्डी की पूजा की बात आई।।
बोले पिता सारी रात प्रेम से आज तुम्हें जगना होगा।
यो घबरा के नींद से तुमको कभी नहीं भागना होगा।।
पूजा करते हुए जो खुद को सारी रात जगाएगा।
साक्षात् महादेव के दर्शन वह इसी रात में पायेगा।।
लगे मूलजी बड़ी लगन से भोले नाथ रिझाने को।
तरस रही है उनकी आँखें शिव दर्शन के पाने को।।
एक एक कर सभी सो गए सिर्फ मूल ही जाग रहे।

शिव पिण्डी के सम्मुख बैठे शिव दर्शन को माँग रहे।।

तभी अचानक जरा गौर से शिव पिण्डी पर ध्यान गया।

एक दृश्य ऐसा देखा जो कर उनको हैरान गया।।

शिव पिण्डी के ऊपर चूहे उछल-कूद कर आने लगे।

फूल बतासा भोग चढ़ावा खूब मजे से खाने लगे।।

जिसे देखते ही कुछ ऐसी हलचल उठी विचारों में।

जैसे टूट पड़े हो तारे लग गई आग बहारों में।।

जैसे तोड़ मिटादे आंधी बड़ी बड़ी दीवारों को।

बड़े वेग से तोड़ के निकले नदी किनारों को।।

महादेव के लिए यहाँ पर हम फल और फूल चढ़ाते हैं।

लेकिन उस महादेव के बदले ये चूहे क्यों खा जाते हैं।।

कथा में तो यह सुना है कि वह पारब्रह्म वर दाता है।

वाहन उसका ऋषभ है और कैलाश पति कहलाता है।।

उसी के सिर पर चूहे नाचे इनको दूर हटाए ना।

तुच्छ जीव अपमान करे और वह हरकत में आये ना।।

देखे सुने न बोले कुछ भी लगा दाग नहीं धो सकता।

शिव पिण्डी एक पत्थर है यह सच्चा शिव नहीं हो सकता।।

सच्चे शिव के बिना गैर की भक्ति पूजा करना क्या।

जो खुद बंधा रहे बंधन में उससे मुक्ति की आशा करना क्या।।

उपरोक्त घटनाक्रम को देखकर मूल शंकर ने व्रत तोड़ दिया और घर आकर माँ से भोजन लेकर ग्रहण किया और कुछ समय पश्चात् अवसर देखकर गृह त्याग कर दिया। जंगल-जंगल, बस्ती-बस्ती घूमते-घूमते सच्चे शिव की खोज में निकल पड़े। इस भ्रमण काल में भले, बुरे, धूर्त, पाखण्डी भी मिले। जीवन का अनुभव ग्रहण करते-करते, मथुरा नगर में दण्डी स्वामी बृजानन्द सरस्वतीजी की निश्रा में बैठकर स्वामी दयानन्दजी ने व्याकरण और वेदों का ज्ञान प्राप्त कर, गुरु दक्षिणा में वेद प्रचार और सत्यज्ञान का प्रसार और प्रचार के लिए गुरु चरणों में अपना जीवन अर्पण

कर पाखण्ड का नाश और सत्य की विजय का नारा देते हुए, अनेकानेक ढोंगी, पाखण्डियों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित करते हुए, वेद ज्ञान की ज्योति जलाते हुए स्वयं का जीवन दीप दीपावली की अमावस्या के दिन बुझा दिया। यह ज्ञान ज्योति कैसे बुझी यह बात सभी जानते हैं।

परमात्मा क्या है, कैसा है, क्या करता है आदि का चित्रण स्वामीजी ने अपने आर्य समाज के दूसरे नियम में किया है। जो ढोंगी पाखण्डियों की समझ के बाहर है। यदि ये पाखण्डी पढ़ समझकर समाज को सही ज्ञान देने का प्रयास करेंगे तो इनका शूद्र स्वार्थ कैसे पूर्ण होगा। स्वामीजी ने मानव समाज की ज्ञान की आँखें खोलने का कार्य किया। फिर भी भारतवासियों की आँखों में ज्ञान का प्रकाश नहीं हुआ। जो सबका रक्षक परमात्मा है, उसकी रक्षा मनुष्यों को करनी पड़े यह कैसी विडम्बना है।

स्वामी दयानन्दजी ने परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभावों का वर्णन आर्य समाज के दूसरे नियम में निम्न प्रकार से किया है।

- (१) ईश्वर सच्चिदानन्द है अर्थात् सत्य, चेतन और आनन्द स्वरूप है।
- (२) ईश्वर निराकार है अर्थात् परमात्मा का कोई रूप, रंग, आकार नहीं होता। जो कण कण में व्याप्त है, ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ पर परमात्मा न हो।
- (३) ईश्वर सर्वशक्तिमान है अर्थात् परमात्मा से कोई शक्तिशाली नहीं है, न कोई उससे बड़ा है और नहीं उससे कोई छोटा है। यानी वह सबसे बलवान और एक ही है, जो संसार का नियंत्रण करता है।
- (४) ईश्वर न्यायकारी है अर्थात् ईश्वर का न्यायालय सबसे ऊपर है। परमात्मा के न्यायालय में "रत्ती भर न घटता है और न तिल भर बढ़ता है।" जो जीव जैसा भला-बुरा कर्म करता है, उसी के अनुसार उसे फल मिलता है। पृथ्वी के न्यायालयों में तो कभी-कभी छिद्र नजर आ जाते हैं।
- (५) ईश्वर दयालु है अर्थात् परमात्मा की जो सर्व उपकारी शक्तियाँ

वेद ज्ञान ही ईश्वरीय वाणी है

इंदौर। आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज में साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग के अवसर पर कानपुर से पधारी डॉ. आशा रानी राय (संस्कृत विभाग, कानपुर विश्वविद्यालय, उत्तरप्रदेश) ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेद ज्ञान ही ईश्वरीय वाणी है। सृष्टि के आदि में ईश्वर ने मानव मात्र के कल्याणार्थ चार ऋषियों के अन्तःकरण में वेद का ज्ञान प्रकट किया तथा उन चार ऋषियों अग्नि, आयु, आदित्य और अंगिरा ने सुना, इसलिए वेद के मन्त्रों को श्रुति भी कहा जाता है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आज भी गुरु-शिष्य परम्परानुसार वेद मन्त्रों को सुनकर, स्मरण कर, संजोने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वेद ज्ञान ईश्वरीय वाणी क्यों है? क्योंकि वेद का ज्ञान सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक है। वेद का ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता, ना ही इसे कोई नष्ट कर सकता है। क्योंकि जब सृष्टि की प्रलय अवस्था होती है तब वेद का ज्ञान बीज रूप में परमेश्वर के गर्भ में विद्यमान रहता है। जब पुनः सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है, तब पुनः ऋषियों के अन्तःकरण में वेद का ज्ञान प्रकट होता है। वेद का ज्ञान जितना प्राचीन काल में प्रासंगिक था उतना आज भी है। वेद का ज्ञान किसी वर्ग जाति विशेष के लिए नहीं वरन् मनुष्य मात्र के लिए उपदिष्ट है। उन्होंने वेद के ही मन्त्र द्वारा वेदों की महत्ता को दर्शाते हुए कहा 'यथेमां कल्याणी मां वदानी जनेभ्यः' अर्थात् वेद का ज्ञान ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र सभी मनुष्यों के लिए है। वेद हमारी पहचान है, संस्कृति है, धरोहर है। अतः वेद के पावन ज्ञान को जीवन में धारण करें और अच्छे विचारों से युक्त हो और वेद ज्ञान को सुन उससे विरुद्धाचरण न करें। डॉ. अखिलेश शर्मा, प्रधान डॉ. दक्षदेव गौड़, अरुण त्रिवेदी, सुश्री मनोरमा साहू, श्रीमती विमला गौड़, रानी भावसार, श्रीमती यामिनी उपाध्याय उपस्थित रहे।

हैं, उनका लाभ सभी को समान रूप से मिलता है। जैसे- हवा, पानी, अन्न, सूर्य का प्रकाश सभी भले-बुरे जीवों को समान रूप से मिलता है। इसलिए परमात्मा दयालु है।

- (६) **ईश्वर अजन्मा** है अर्थात् परमात्मा कभी भी जन्म नहीं लेता। क्योंकि परमात्मा इतना सूक्ष्म है कि वह कण-कण में व्याप्त है और इतना विशाल यानी इतना बड़ा है कि समस्त ब्रह्माण्ड उसमें समाया हुआ है। तो यह सम्भव ही नहीं है कि वह किसी भी माता के गर्भ में स्थान ग्रहण कर सके।
- (७) **ईश्वर अनन्त** है अर्थात् परमात्मा की कोई सीमा रेखा नहीं है। न कोई उसका आदि है और न कोई अन्त ही है। उसकी सत्ता समस्त ब्रह्माण्ड में है, वह सब में है और सब उसमें हैं। इस रहस्य को जो कोई भी समझ लेगा वही परमात्मा को जान लेगा।
- (८) **ईश्वर निर्विकार** है अर्थात् परमात्मा में कोई विकार यानी कोई बुराई नहीं है। जैसे हम जीवात्माओं में काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, राग, द्वेष, छल, कपट आदि दूषण होते हैं ऐसे दूषण परमात्मा में नहीं होते। इसलिए परमात्मा को निर्विकार कहते हैं।
- (९) **ईश्वर अनादि** है अर्थात् परमात्मा का कोई आदि नहीं है अर्थात् कोई उसकी शुरुआत नहीं है जो कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा।
- (१०) **ईश्वर अनुपम** है अर्थात् परमात्मा को मानने समझने के लिए किसी की तुलना नहीं दी जा सकती है। जैसे कहावत है कि उसका मुखड़ा तो चन्द्रमा के समान है। इस प्रकार की तुलना परमात्मा की किसी से भी नहीं की जा सकती, यानी परमात्मा उपमा रहित है।
- (११) **ईश्वर सर्वाधार** है यानी किसी भी पदार्थ को स्थिर रखने के लिए किसी आधार की आवश्यकता होती है, मगर परमात्मा को किसी के आधार की जरूरत नहीं है, मगर वह ही सभी का आधार है।
- (१२) **ईश्वर सर्वोपरि** है। संसार में जितना भी धन, ऐश्वर्य, सुख सामग्री हैं उसका मालिक केवल एक ही परमात्मा है। उसमें से जो थोड़ा बहुत हमें मिल जाता है तो हम अपने आपको उस साधन सामग्री का स्वामी मान बैठते हैं। यह हमारा भ्रम है। जब समस्त ब्रह्माण्ड को रचने वाला, स्थिर रखने वाला, पालन करने वाला वह एक ही परमात्मा है तो सभी पदार्थ भी तो उसी के ही हुए।
- (१३) **ईश्वर सर्वव्यापक** है। इसका भाव यह है कि परमात्मा दृश्य, अदृश्य, जड़, चेतन आदि सभी पदार्थों में समान रूप से व्याप्त है। ऐसा कोई भी स्थान और वस्तु नहीं जहाँ पर परमात्मा न हो।
- (१४) **ईश्वर सर्व अन्तर्यामी** है। परमात्मा सब घट-घट की बात जानता है। जब वह सर्वव्यापक है तो अन्तर्यामी तो होगा ही। जब अन्तर्यामी होगा तब ही तो न्याय कर पाएगा। यदि अन्तर्यामी नहीं होगा तो न्याय कैसे कर पाएगा।
- (१५) **ईश्वर अजर** है अर्थात् जर कहते हैं वृद्धावस्था को तो परमात्मा हर काल में एक समान ही रहता है। उसे कभी भी बुढ़ापा नहीं आता, बुढ़ापा तो हम जीवात्माओं के शरीरों को आता है। जो जन्म-मरण के चक्कर में फंसे रहते हैं। जो जीव जिस शरीर में

रहता है, उस शरीर को बुढ़ापा आता है। जीवात्मा को भी बुढ़ापा नहीं आता है क्योंकि वह भी जन्म-मरण रहित है। परमात्मा तो एक रस, अखण्ड, अविनाशी और अपरिवर्तनीय है।

- (१६) **ईश्वर अमर** है अर्थात् जब परमात्मा का जन्म ही नहीं होता यानी अजन्मा है तो मृत्यु कैसे होगी? इस कारण वह अमर है।
- (१७) **ईश्वर अभय** है। परमात्मा को कभी किसी से भय यानी डर नहीं लगता। भय तो वहाँ होता है जहाँ छल, कपट, बेईमानी होती है। जहाँ किसी के द्वारा किसी को पकड़े जाने का डर रहता हो।
- (१८) **ईश्वर नित्य** है। इसका भाव यह है कि परमात्मा आदि और अन्त रहित है। जो सृष्टि के आदि में भी था, वर्तमान में भी है और प्रलय के पश्चात भी रहेगा अर्थात् हमेशा रहेगा।
- (१९) **ईश्वर पवित्र** है। परमात्मा में कोई अवगुण बुराई न होने से वह सदैव पवित्र ही रहता है। अपवित्र तो हम मानव होते हैं, जो काम, क्रोध, मोह, छल, कपट से भरे पड़े हैं।
- (२०) **ईश्वर सृष्टिकर्ता** है। परमात्मा ने सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अरबों-खरबों नक्षत्र, तारे, नदी, नाले, पहाड़, वनस्पति आदि का निर्माण किया है और गति प्रदान किए हुए हैं। हम सब जीव, जन्तुओं के शरीरों का निर्माण भी किया इसलिए वह परमात्मा सृष्टिकर्ता कहलाता है। मन्दिरों में बैठे तथाकथित देवी-देवता तो सृष्टि का निर्माण नहीं कर सकते, क्योंकि यथार्थ में इनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। ये एक ऐतिहासिक महापुरुष हो सकते हैं, जिनका समय अनुसार शरीरान्त हो गया अब वर्तमान में उनका कोई अस्तित्व नहीं है।

उपरोक्त प्रकार से स्वामीजी ने परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभावों का क्या सुन्दर वर्णन किया जो सर्वमान्य होना चाहिए। मगर हाय रे भारतवासियों तुम्हारी समझ में कुछ भी नहीं आया। तुमने अपनी बुद्धि रूपी कसौटी का उपयोग बिल्कुल भी नहीं किया। शिक्षा का प्रसार हुआ मगर धार्मिक बुद्धि का विकास बिल्कुल भी नहीं हुआ। हम वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, नेता, अभिनेता, प्रशासक बन गए मगर बुद्धि रूपी कसौटी का प्रयोग फिर भी नहीं किया। हम इन ढोंगी-पाखण्डियों द्वारा बनाई गई लकीर के फकीर ही बने रहे। जैसे ही पुराणी, वैसे ही किरानी और वैसे ही इरानी।

कुछ दिन पूर्व भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई जी ने स्वच्छता अभियान के ऊपर कहा था कि चाहे एक हजार गांधी पैदा हो जाएँ, या एक लाख नरेन्द्र मोदी पैदा हो जाएँ फिर भी भारत स्वच्छ नहीं होगा, भारत तभी स्वच्छ होगा जब हम सभी भारतवासी मिलकर इस अभियान पर काम करेंगे। इसी प्रकार के लाख स्वामी दयानन्द और करोड़ों लेखक तथा विचारक पैदा हो जाएँ। मगर भारतवासियों का आत्म ज्ञान तो तभी बढ़ेगा जब हम इन ढोंगी, पाखण्डियों, स्वार्थियों के मकड़जाल को तोड़ फेंकेँगे।

बड़े ही खेद की बात है कि गणित तथा विज्ञान के नियम तथा सिद्धान्तों पर तो पूरा विश्व एकमत है। जैसे कि $2+2=4$ ही होते हैं। इसी प्रकार से H_2O पानी बनता है। अर्थात् हाइड्रोजन के दो परमाणु तथा ऑक्सीजन का एक परमाणु मिलकर पानी बनाते हैं। उपरोक्त नियम सिद्धान्त सर्वमान्य है मगर धर्म कर्म के विषय में हम सब परिवार वाले भी एकमत नहीं हैं तो समस्त विश्व की बात तो जाने ही दीजिए। ■

आपातकालीन हृदयगति रुकने पर प्रथम उपचार



हृदय- फुफ्फुसीय पुनः जीवन (CPR)

यदि हृदय फुफ्फुसीय (फेफड़ों) पुनर्जीवन की सरल पद्धति का थोड़ा भी ज्ञान हो तो वह व्यक्ति को आपातकालीन स्थिति में प्राण बचा सकता है।

हृदय व श्वसन क्रिया में अवरोध साधारण, हृदयाघात, विद्युत आघात, डूबने या किसी दवा की प्रतिक्रिया के कारण उत्पन्न हो सकता है उक्त परिस्थितियों में यदि शुद्ध रक्त के संचार को २-३ मिनट में पुनः प्रारम्भ करने में सफलता नहीं मिल पाती है तो मस्तिष्क को अपूरणीय क्षति होती है और मानव की जीवन लीला समाप्त हो जाती है, ऐसी स्थिति में प्रत्येकक्षण महत्वपूर्ण होते हैं, हृदय की धड़कन बन्द होने की स्थिति में २-३ मिनट के अन्दर की गई प्राथमिक उपचार सहायता से लगभग ३० से ५० प्रतिशत मरणासन्न व्यक्तियों को जीवनदान दिया जा सकता है।

हृदय पुनर्जीवन प्रक्रिया क्या है :

हृदय फुफ्फुसीय प्रक्रिया हृदय की बाह्यमालीश के साथ मुँह से मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में फूँक मारकर, हृदय को सक्रिय कर शुद्ध रक्त का संचार शरीर के महत्वपूर्ण अंगों तक हृदय के द्वारा पहुँचाया जाता है। यह मस्तिष्क को पुनः प्रारम्भ करने की एक प्रक्रिया है।

हृदय फुफ्फुसीय पुनर्जीवन प्रक्रिया का ज्ञान किसे होना चाहिए :

समाज के प्रत्येक जिम्मेदार व्यक्ति को इस प्रक्रिया की जानकारी होनी चाहिए क्योंकि यह एक जीवन रक्षक प्रक्रिया है, और इसमें किसी ज्यादा विशेष तकनीकी ज्ञान की भी आवश्यकता नहीं है। उक्त प्रक्रिया से निम्न व्यक्तियों को तो आवश्यक रूप से परिचित होना चाहिए :

१. चिकित्सा संचालन से जुड़े हर व्यक्ति को, २. एम्युलेंस चालक, ३. ट्रैफिक पुलिस, ४. विद्यालय अध्यापक, ५. अग्निशमन कर्मी, ६. सामाजिक कार्यकर्ता, ७. राज्य सरकार के कर्मचारियों को

हृदय फुफ्फुसीय पुनर्जीवन प्रक्रिया कब किस व्यक्ति को :
आकस्मिक अचेतन, नब्ज के बन्द होने की स्थिति में यह प्रक्रिया अपनाई जाती है। प्रारम्भ में रोगी की बांयी ओर की पसलियों पर हाथ या मुट्ठी से एक सशक्त प्रहार (मुक्का) करना चाहिए। दोनों पैरों को ९० डिग्री का कोण बनाते हुए सीधा ऊपर कर देना चाहिए और गर्दन को एक ओर घुमा देना चाहिए जिससे रोगी को वमन करे तो उसके फेफड़ों में न जाए। हृदय-फुफ्फुसीय पुनर्जीवन प्रक्रिया कैसे सम्पन्न करनी चाहिए यह प्रक्रिया सम्भव हो तो दो

● डॉ. प्रेमनारायण शर्मा, साभार : बन्धुत्व सन्देश, जयपुर

व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न की जाती है, आपातकाल में अकेला व्यक्ति भी इसे कर सकता है।

१. रोगी को फर्श या कठोर बिछावन पर पीठ के बल लिटा दें।
२. रोगी के वस्त्र सीने एवं गर्दन में ढीले कर दें।
३. रोगी के सिर को ऊपर की ओर कर ठोड़ी को उठा दें।
४. इस प्रक्रिया को अन्जाम देने वाला व्यक्ति एक हाथ रोगी की निचली छाती और दूसरा हाथ पहले हाथ के ऊपर रख दें फिर प्रति ६० बार की गति से छाती को दबावे।
५. सिर को पीछे की ओर कर के जबड़ों को खोलकर अपने मुँह से रोगी के मुँह या नाक में फूँक मारनी चाहिए। तीन-चार बार बायीं पसली पर दबाव देने के उपरान्त फेफड़ों से वायु संचरित करने का प्रयास बार-बार करते रहना चाहिए।
६. इसी समय मेडिकल सहायता एवं ऑक्सीजन की तुरन्त व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

अपने विशेष ज्ञान एवं सूझ-बूझ से यदि जीवन में एक भी व्यक्ति के जीवन को मौत के मुँह से निकालने में सफल होते हैं तो उस व्यक्ति को जीवन में आत्मिक सन्तोष प्रदान करने के लिए पर्याप्त है। ■

अमरूद (अमृत फल)

आयुर्वेदिक मत : कसैला, मीठा, वीर्यवर्धक, कफनाशक, अत्यन्त शीतल, स्वादिष्ट, मधुर ग्राह्यी, कुछ खट्टा- कुछ कसैला, अत्यन्त तीक्ष्ण गुरु, उन्मादनाशक, त्रिदोष नाशक, शक्तिदायक, सुखगुणी, बुद्धिवर्धक।

वैज्ञानिक विश्लेषण : विटामिन सी, कैल्शियम, फास्फोरस, लोह, ग्लूकोज, टेनिन एसिड और आक्टेलोट के कारक हैं। विटामिन सी से भरपूर, दाँतों के रोगों, पाचन तंत्र को बलदायक, उच्च रक्तचाप नाशक।

यूनानी मत : यूनानी हकीम उन्माद, पागलपन वालों को अमरूद विशेष रूप से खिलाते हैं।

अमरूद खाने का समय दोपहर के भोजन उपरांत।

उपयोग :

१. अमरूद का सेवन नियमित करने से मल शुद्धि होती है।
२. अमरूद का साग बनाकर खाने से कब्जियत मिटती है।
३. जिनकी पाचन शक्ति कमजोर हो वह कम अमरूद खायें।
४. सूखी खांसी में खूब चबा- चबाकर खायें।
५. खाने के लिए पके अमरूद का ही सेवन करें।
६. अमरूद के पत्तों की पुलटीस बनाकर फोड़े पर बाँधी जाती है। देश के अनेक भागों में इसे जामफल के नाम से भी जाना जाता है।

● हरिश्चन्द्र आर्य

अधिष्ठाता उपदेश विभाग, अमरोहा- उत्तरप्रदेश

भारत विभाजन व कश्मीर समस्या का सत्य

भारत करीब एक हजार साल तक गुलामी का दंश झेल चुका है। ८०० साल मुगलों ने और २०० साल अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया है। जो आज देश को आजाद हुए ७१ साल बीत जाने के बाद भी लोगों की मानसिकता पूर्ण रूप से बदली नहीं है। इस देश का वैदिक काल से नाम आर्यावर्त और बाद में भरत का शासन होने से भारत वर्ष और मुगलों के शासन होने पर हिन्दुस्तान और अंग्रेजों का शासन होने पर इंडिया नाम हुआ। अब आप ही चिन्तन कर लीजिए कि किस नाम में देश का स्वाभिमान छिपा है। अगर आप में हिम्मत है तो देश का एक नाम चुनकर प्रचारित करने में गौरव अनुभव कीजिए।

देश अंग्रेजों की चालों का शिकार हुआ। उन्होंने फूट डालो और राज करो के सिद्धान्त पर राज किया। और जाते-जाते धर्म के आधार पर देश के दो टुकड़े कर गये। कश्मीर- हैदराबाद, दक्षिण और राजस्थान के देशी रजवाड़ों को उनकी इच्छा पर छोड़ दिया। हमारे लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता ने देशी रजवाड़ों को और हैदराबाद को देश की सार्वभौम सत्ता के साथ शामिल कर लिया। कश्मीर का शासन महाराज हरीसिंहजी के पास था। उस समय तक उन्होंने कोई निर्णय नहीं लिया था। फिर जब कश्मीर पर कबाइलियों और पाकिस्तानी सेना ने हमला कर दिया। तब उन्होंने भारत से सहायता की अपील की और कश्मीर के शासन की बागडोर भारत को सौंप दी। उस समय गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल थे। उनकी देखरेख में सेना भेजी गई और युद्ध हुआ। हम जीत में थे। लेकिन उस समय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यह कहकर युद्ध विराम कर दिया कि इस मसले को सुरक्षा परिषद ले जाएँगे। जो आज तक नहीं सुलझा है। देश के हजारों वीर अपनी जान गंवा चुके हैं और वहाँ के बाशिंदे कश्मीरी पंडितों को जबरदस्ती खदेड़ा जा चुका है। जो आज दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं। करोड़ों रुपयों की सहायता देने के बावजूद भी वहाँ पर अमन-चैन नहीं हो रहा है। यह है अदूरदर्शिता का परिणाम। वल्लभभाई पटेल का कहा न मानने का नतीजा। आधे से ज्यादा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है। बाकी हिस्से को भी वह लेने की पुरजोर कोशिश करता रहा है। ये है कश्मीर का सच। अब आप ही बताएँ कि कश्मीर की सत्ता का अधिकारी कौन है? जिसको महाराजा हरीसिंहजी ने सौंपा है वह या जबरदस्ती कब्जा करके बैठा पाकिस्तान। यह कोई विवादित मसला नहीं है। पूरा कश्मीर भारत का है और भारत का ही रहेगा। मसला है पाक के कब्जे का कश्मीर खाली करवाने का और कश्मीरी पंडितों को फिर से वहाँ बसाने का।

कई मौके आए कश्मीर की समस्या को हल करने के। लेकिन हमारे नेताओं ने सब मौके गंवा दिए। सन् १९६४ के युद्ध में हम लाहौर तक चले गए थे। हम विजय पर थे, इस कश्मीर की समस्या पर विजय प्राप्त कर सकते थे। लेकिन हम जागरूक नहीं हुए और युद्ध बंद करके देश के महान नेता लाल बहादुर शास्त्री को गंवा दिया। फिर सन् १९७१ में इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में बंगला देश का निर्माण हुआ और पाक सैनिक एक लाख के करीब हमारी कैद में थे। हम चाहते तो उस वक्त भी कश्मीर की समस्या का ठोस हल हो जाता। हमने तीन-तीन मौके गंवा दिए। अब पछताने के अलावा कुछ होते नहीं बन रहा है।

अब देश की सबसे बड़ी घटना पर भी चिन्तन किया जाए। आजादी से पहले जिनको हम महात्मा गाँधी कहते थे- वे कहा करते थे कि मेरे शरीर के दो टुकड़े हो सकते हैं पर भारत माता के (देश के) दो टुकड़े कभी मंजूर नहीं करेंगे और आजादी के बाद गौ हत्या बन्द कर देश में रामराज की स्थापना करेंगे। उनके

● नरसिंह सोनी आर्य

डागा सेठिया, मोहल्ला, बीकानेर

चलभाष : ९२५२६१८२६४



कहे पर- उनकी सोच पर पानी फिर गया। उनके शरीर के दो टुकड़े नहीं हुए, लेकिन देश के दो टुकड़े उन्होंने सत्ता के लोभ में आकर मंजूर कर लिए। जिसका दंश आज तक देशवासी भुगत रहे हैं। देश के दो टुकड़े राजी-खुशी नहीं हुए हैं। लाखों आदमियों को इस बंटवारे में अपने प्राणों की आहुति बड़े ही दर्दनाक ढंग से देनी पड़ी है। यह है हमारे देश के सबसे बड़े नेताओं की जबान की कीमत। आजादी की लड़ाई में हिन्दुओं और मुसलमानों व सब देशवासियों ने मिलकर लड़ाई लड़ी और विजय प्राप्त की।

लेकिन आजादी मिलने का वक्त आया तो धर्म आड़े आ गया और पाकिस्तान की अलग माँग कर दी। इसमें भी अंग्रेजों की चाल थी। धर्म के नाम पर पाकिस्तान बना तो यहाँ के देशवासियों पर धर्मनिरपेक्षता को थोप दिया गया। जो अदूरदर्शिता का परिचायक रहा। जिसका खामियाजा आज तक हिन्दू व अन्य देशवासी भुगत रहे हैं। अगर धर्मनिरपेक्ष रखता था तो देश के दो टुकड़े धर्म के नाम पर क्यों किए गए? किए तो इस टुकड़े को हिन्दू राष्ट्र घोषित क्यों नहीं किया गया? पाकिस्तान में जो अधिकार हिन्दू को है, वही अधिकार मुसलमानों को यहाँ पर देना चाहिए था। यह सब अपनी मनमानी करके देश के स्वाभिमान को कलंकित किया है तथा कमजोर मुल्क बना दिया गया है।

देश १५ अगस्त सन् १९४७ को आजाद हुआ। यह दिन देशवासियों के लिए खुशी का दिन जरूर है, लेकिन जिन्होंने देश के विभाजन का दुःख झेला है मारकाट, हत्या, बलात्कार, जन-धन की अपार हानि उठाई है, परिवार के परिवार डर के मारे इधर-उधर भटकते हुए अपने प्राणों को किसी तरह बचाया है। उनके दिलों से पूछिए जो अभी तक इस गम से उबर नहीं पाए हैं। इस आजादी ने उनको बर्बाद करके रख दिया है। आज देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाले सभी मत-पन्थ एवं जाति के लोगों की आत्मा देश के आज के हालात को देखकर तड़प रही है कि क्या ऐसी ही आजादी के लिए बलिदानियों ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया था? आज भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, अपहरण, हत्या, झूठ, कपट, मिलावट, बेईमानी का बोलबाला चारों ओर बढ़ा हुआ है। सुराज्य नहीं है। ऐसे में उनकी आत्मा धिक्कारती है। जिसका परिणाम असमय में बारिश, तूफान, ओले पड़ना, बाढ़ आना, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि देवी संताप होते हैं जो आप देख ही रहे हैं। यह इसी का परिणाम है। झूठ बारम्बार बोलते-बोलते सच हो जाता है और सच नहीं बोलने पर झूठ हो जाता है। यही बात कश्मीर पर लागू हो रही है। कश्मीर के लिए देश की नीति साफ नहीं है। इसीलिए तो वे चुप रह जाते हैं और देश व दुनिया के सामने कश्मीर की स्थिति साफ नहीं करते हैं। पाकिस्तान हमारा दुश्मन पड़ोसी देश है। उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह भी देश के नेताओं के सामने स्थिति साफ नहीं है। जिसके कारण हमारे स्वाभिमान को हमेशा ठेस पहुँचती रहती है। क्या हमारे देश के नेता लोग इन कमियों को दूर कर कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने में सफल हो सकेंगे? ■

सुख का आधार : गृहस्थ आश्रम

विवाह

विवाह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'वि+वाह'। वि विशेषता का द्योतक है और वाह का अर्थ है दान। विवाह एक ऐसा रथ है जिसमें स्त्री और पुरुष दो पहियों के समान हैं जिनमें पूर्ण मेल मिलाप और सम विचारों का होना आवश्यक है।

पाणिग्रहण संस्कार : पाणिग्रहण संस्कार विवाह संस्कार को ही कहते हैं क्योंकि इसमें वर वधू का हाथ पकड़कर सबके सम्मुख कुछ प्रतिज्ञाएँ करता है।

पहली प्रतिज्ञा : हम दोनों प्रतिज्ञा करते हैं कि जिस ब्रह्मचर्य से और जिस विद्या से हम दोनों स्त्री पुरुष कृतकृत्य होते हैं उस ब्रह्मचर्य व विद्या का पुरुषार्थ से धनादि बचाकर प्रचार करेंगे।

दूसरी प्रतिज्ञा : जैसे अपने हित के लिए आचरण करेंगे वैसे ही अपने माता-पिता, आचार्य और अतिथियों के सुख के लिए भी निरन्तर बर्ताव करेंगे। पिताओं द्वारा पाणिग्रहण की प्रतिज्ञा कराते हैं। 'गृही व गृहिणी' पद को पाते हैं और गृहस्थी (Family) कहलाते हैं। गृहस्थ और गृह शब्द की सार्थकता गृह से उस गृह की सार्थकता गृहिणी से है जिसे अंग्रेजी में HOME कहते हैं। अर्थात् जिस घर में होम (हवन) होता हो। ईंट व सीमेंट से बने घर का नाम गृह नहीं है। वह तो HOUSE है जिसमें कोई भी रह सकता है।

इस पाणिग्रहण के साथ ही कोई भी पुत्र व कन्या गृही व गृहिणी (Wife & Husband) बन जाते हैं वर न केवल हाथ ग्रहण करता है अपितु पत्नी के हृदय चित्त और मन को भी ग्रहण करता है।

मण्डप के नीचे बैठकर बांधी गई दो पल्लुओं की गाँठ केवल कपड़े की गाँठ नहीं है वह तो दो हृदयों का ग्रन्थिबन्धन है जो सूर्य और पृथ्वी

● डॉ. अशोककुमार आर्य

फन्दपुरी, जनपद : सहारनपुर (उ.प्र.)

चलभाष : ९६२७४२३३५४



के गठबन्धन की भाँति दृढ़ रहेगा।

'सत्य' : सत्य व्यवहार ही वह गुण है जो पति-पत्नी को परस्पर आकर्षित और आबद्ध रखता है विश्वास बढ़ाता है। शंका हटाता है।

'सत्संग' : सत्संग का मतलब होता है अच्छे पुरुषों का संग जहाँ सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्त बताए जाते हैं।

सत्संग का प्रभाव : सत्संग में एक बालक जाता था। उसने एक भजन सुना था कड़वे बोल न बोल रे भाई, एक वकील की बात सुनाता हूँ आपको, वकील साहब कभी-कभी सत्संग में जाते थे। उनका सात वर्ष का एक बेटा भी साथ जाता था। वहाँ एक बार एक आदमी ने गाना गाया। **कड़वे बोल न बोल रे भाई।** बच्चे को यह गाना अच्छा लगा। उसने यह याद कर लिया। एक दिन वकील साहब व उनकी धर्मपत्नी में खट-पट हो गई एक-दूसरे से बोलना बंद। पति के मन में बार-बार आया कि पत्नी मान जाए। पत्नी के मन में भी आया कि पति मान जाए। परन्तु दोनों की इच्छा थी कि पहल दूसरा करे। एक दिन वकील साहब दफ्तर से आए अपने कमरे में चले गए। नन्हे बच्चे ने गाना गाना शुरू कर दिया **कड़वे बोल न बोल रे भाई।** उसके पिता ने कहा- बेटा यह गीत अपनी माँ के कमरे में जाकर गाया। बच्चा माँ के कमरे में गया। वहाँ जाकर गाने लगा **कड़वे बोल न बोल रे भाई,** माँ ने कहा यहाँ क्या गाता है जा अपने पिताजी के कमरे में जाकर गा। बच्चा फिर पिताजी के कमरे में पहुँचा और

निःशुल्क परीक्षण एवं परामर्श शिविर सम्पन्न

इंदौर। आर्य समाज मन्दिर, मल्हारगंज में अपोलो हॉस्पिटल विजय नगर, इंदौर एवं आर्य समाज मल्हारगंज के संयुक्त तत्वावधान में विश्व प्रसिद्ध जोड़ प्रत्यारोपण सर्जन डॉ. सुनील राजन अपोलो हॉस्पिटल इंदौर (इंडो-जर्मन फाउण्डेशन गोल्ड मेडलिस्ट) की उपस्थिति में घुटनों के दर्द से सम्बन्धित सभी मरीजों का निःशुल्क परीक्षण एवं परामर्श शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। शिविर में लगभग १५० से अधिक मरीजों का परीक्षण किया गया। सर्वप्रथम शिविर से पूर्व मरीजों को टीम द्वारा प्रोजेक्टर के द्वारा मानव शरीर के अन्दर कैल्शियम की कमी कैसे होती है तथा उसकी पूर्ति कैसे की जाये, इसके बारे में जानकारी दी गई।

शिविर में डॉ. आशीष गोयल, डॉ. श्रद्धा चौहान, डॉ. दीपक जैन, डॉ. मनीष कुन्दवानी भी उपस्थित रहे। संस्था के प्रधान डॉ. दक्षदेव गौड़ ने सभी डॉक्टरों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

आर्यों से निवेदन

वैदिक ज्ञान एवं आर्य समाज के मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करने के लिए आर्य लेखक ओमप्रकाश आर्य ने ५० प्रकार के शिक्षण-सामग्री कैलेण्डर बनाए हैं। इनके फ्लैक्स बनवाकर अथवा कागज पर प्रिंट करवाकर वैदिक ज्ञान को सरलता से समझाया जा सकता है। अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०१८ दिल्ली में इन कैलेण्डरों की प्रदर्शनी लगी थी। इन्हें घरों, आर्य समाजों, आर्य विद्यालयों, आर्य गुरुकुलों व अन्य उचित जगहों पर लगाए जा सकते हैं। आर्य विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इच्छुक महानुभाव मंत्री, आर्य समाज रावतभाटा-९४६२३१३७९७ पर अपना ई-मेल पता एसएमएस करके प्राप्त कर सकते हैं। ये कैलेण्डर बड़े ही आकर्षक, ज्ञानवर्द्धक एवं सुरुचिपूर्ण भावों वाले हैं।

निवेदक : नरदेव आर्य

प्रधान आर्य समाज, रावतभाटा (राजस्थान)

गाने लगा। पिताजी ने कहा अरे तुझे माँ के कमरे में जाकर गाने को कहा था। वहीं जाकर गा। बच्चा फिर माँ के कमरे में गया और गाने लगा। माँ ने फिर बच्चे को कहा कि तुझे पिताजी के कमरे में जाकर गाने को कहा था। बच्चे ने दोनों कमरों के बीच में आकर कहा तुम दोनों तो मुझे गाने नहीं देते। अब मैं यहाँ खड़ा होकर गाऊँगा। वह गाने लगा **कड़वे बोल न बोल रे भाई**। पिता और माता ने बच्चे की भोली बोली को सुना। दोनों हँस पड़े। हँसी के इस फव्वारे में क्रोध की दीवार टूट गई। दोनों बच्चे के पास आए एक-दूसरे की आँखों में देखकर हँसते हुए बोले **“कड़वे बोल न बोल”** घर में मुस्कराहटें चमक उठीं। क्रोध के बादल टुकड़े-टुकड़े हो गए। रोशनी जाग उठी यह है सत्संग का चमत्कार कहा भी है—

**तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण यह मन्त्र है, तज देहुँ वचन कठोर।।
कोयल काको देत है, कौआ का से लेत।
मीठे वचन सुनाये के, जग अपना कर लेत।
ऐसी वाणी बोलिए जो मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होय।।**

एक सास अपनी बहु को बहुत उत्पीड़न (Torture) करती थी। प्रतिदिन किसी न किसी बात पर ताने मारती थी और पड़ोस की नारियाँ उसमें रस लेती थीं। एक दिन तो प्रताड़ना की सीमा ही पार हो गई। गृहयुद्ध सा छिड़ गया। बात हाथापाई तक पहुँच गई। पड़ोसी भी आ गए और बहु को सीख देने लगे हमारे साथ पुलिस थाने में चलो बहुत हो गया। आज ही आपकी सास को ठीक करवाते हैं बहु ने उत्तर दिया जो प्रेरणादायक है। बहनजी हमें माफ करें यह हमारी आपसी घर की समस्या है। सासू माँ मुझे धैर्यवान व ज्ञानवान बनाने के लिए मुझे पक्का कर रही हैं। मैं उनकी ऋणी हूँ कि भविष्य में आपत्ति आने पर दुःखी नहीं होऊँगी। इस उत्तर को सुनकर सभी पड़ोसी चले गए और सास ने भी शर्मिदा होकर उत्पीड़न छोड़ दिया।

(पृष्ठ ९ का शेष भाग)

जीवन की अवधि का पता नहीं होता, पर हमें करने के लिए जो काम मिला है, उसका हमें पता होना चाहिए। उसे हमने पूरा करना है। जीवन काल में यदि पूरा न भी हो तो भी संतोष होना ही चाहिए कि हमने श्रम और लगन में कोई कसर नहीं छोड़ी। चुनौतियों का सामना उनसे भागकर नहीं जागकर करना चाहिए। महात्मा हंसराज जी के जीवन में अनेक कष्ट आए, विपत्तियाँ आईं परन्तु वे विचलित नहीं हुए। हमें भी चाहिए कि उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। संध्या, सेवा, स्वाध्याय, संस्कार, सत्संग, सत्य को अतमसात करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के देहावसान के बाद महात्मा हंसराज जी ने सोचा कि आर्य समाज की विचारधारा से पूर्ण युवक ही ऋषि के कार्य व स्वप्न को पूरा कर सकता है। उन्होंने ऋषि के कार्य को पूरा करने के लिए डी.ए.बी. स्कूल की स्थापना की। वेद प्रचार मण्डल द्वारा वेदों का प्रचार किया एवं यज्ञ, समाज सुधार के कार्यों द्वारा आर्य समाज फला-फूला। आज फिर ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता है जो समाज के लिए महात्मा हंसराज जी की तरह तन-मन और धन अर्पण कर सकें। आइए महात्मा हंसराजजी के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए अज्ञान,

एक अन्य बहू ने तो सास के उत्पीड़न के कारण विद्रोह की योजना बनाते हुए अपने मायके जाकर अपने घरेलु डॉक्टर से प्रार्थना की कि मुझे ऐसी पुड़िया दो कि मेरी सास स्वर्ग पहुँच जाए। डॉक्टर ने पहले तो उसे समझाया किन्तु वह अपनी बात पर अडिग रही तब डॉक्टर ने कुछ शर्तों के साथ दवाई की पुड़िया दी और कहा कि इसमें धीमीगति का मीठा जहर है। जो धीरे-धीरे प्रभाव डालेगा। अतः किसी को शंका भी ना हो तुम्हें रोज एक पुड़िया दूध में एक माह तक खिलानी है। जो धीरे-धीरे प्रभाव दिखाएगी उनकी पूरी सेवा व सुविधा का पूरा ध्यान भी रखना होगा ताकि किसी को शक भी ना हो। उपरोक्त योजना के अनुसार बहू ने ससुराल आकर सास की पुड़िया के साथ-साथ पूरी सुख-सुविधा सेवा, सत्कार व सम्मान का पूरा नाटक किया। सास कुछ भी ताना मारती हँसकर टाल देती। सास कभी कहती किस नीच कुल की दरिद्र परिवार की हमारे पल्ले बंध गई। बहू बिना उत्तेजित हुए बिना द्वेष भाव रखते हुए शान्त भाव से कह देती माँ जी अब तो मैं जैसी भी हूँ, हूँ तो आपकी ही और सास निरुत्तर हो जाती। इस प्रकार के नाटक को करते-करते बहू के चित्त पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता गया। बहू की ओर से बेटीवत होने लगा व सास का स्वभाव भी प्रीति लाड-दुलार, आशीर्वाद स्नेह बेटीवत होने लगा व जहर की पुड़िया खिलाने का एक माह भी होने को आ गया। बहू का तो स्वभाव ही रूपान्तरित हो चुका था। अपनी योजना पर ग्लानि व पश्चाताप अनुभव होने लगा। बहू अपने घर जाकर सीधे डॉक्टर से मिली कि ऐसा उपाय करें कि मेरी सासू माँ जहर के प्रभाव से बच जाएँ। डॉक्टर बहुत अनुभवी और समझदार था। उन्होंने बताया कि मैंने तो उस पुड़िया में कोई जहर दिया ही नहीं था। यह सुनकर बहू को बहुत ही प्रसन्नता हुई और अपने फैमेली डॉक्टर को हृदय से धन्यवाद दिया और अपने कृत्य पर पश्चाताप किया और ससुराल को स्वर्गधाम बना दिया। यह है पोजीटीव थिंकिंग का परिणाम है। ■ (शेष भाग आगामी अंक में)

अन्याय, अभाव को दूर करने के लिए कटिबद्ध हैं।

इक न इक शम्मा, अंधेरे में जलाये रखिये।

सुबह होने को है, माहौल बनाये रखिये।।

जपत जपत नित्यं मन्त्रवत् तस्य नाम

पठत पठत पुण्य भ्रातरस्तच्चरित्रम्।

भवत भवत योग्यास्तस्य शिष्यत्वमाप्नुम्

जयतु भुवि यथाऽसौ हंसराजो महात्मा।

उस महात्मा के गुणों को धारण करो, उसके चरित्र को बार-बार पढ़ो और करो प्रयास उसके नाम लेवा बने रहने की पात्रता प्राप्त करने के लिए जिससे वह महापुरुष संसार में जयी हो- उसका नाम अमर रहे। ■

शर्मनाक : जाति-धर्म के आधार पर स्कूल में कक्षाएँ

वैशाली (बिहार)। बिहार के वैशाली जिले के लालगंज सरकारी स्कूल में वर्षों से छात्रों के साथ धर्म व जातिगत आधार पर भेदभाव का मामला सामने आया है। आरोप है कि स्कूल में ऊँची जाति के छात्रों व दलित छात्रों को अलग-अलग कक्षाओं में बैठाया जाता है। ऐसे ही हिन्दू और मुस्लिम छात्रों के लिए भी अलग-अलग कक्षाएँ हैं। मामला उस वक्त सामने आया जब जिला शिक्षा अधिकारी ने एक टीम स्कूल में निरीक्षण हेतु भेजी थी।

गतांक पृष्ठ २४ से आगे

सैद्धान्तिक चर्चा (भाग-३)

निश्चित समय पर श्री महाशय 'मनीषी' जी के यहाँ पर पहुँचकर श्री 'जिज्ञासु' जी बोले- गत दो दिनों की हमारी 'सैद्धान्तिक-चर्चा' से सम्बन्धित जानकारी मैंने अपने साथियों को दी तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने आपके वैदिक विचारों को युक्ति युक्त तथा बुद्धिसंगत बताया। जिसके फलस्वरूप विशेष उत्साहित होकर आज मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

मनीषी- अब आप क्या जानना चाहते हैं? अर्थात् आज की चर्चा का आरम्भ कहाँ से किया जाए?

जिज्ञासु- आज आप मुझे धर्म और मत-पन्थों का अन्तर बताइए? क्योंकि आपकी मान्यतानुसार मत-पन्थ और धर्म अलग-अलग हैं।

मनीषी- आपने यह जिज्ञासा प्रकट करके अपनी सर्वहितकारी सद्भावना का परिचय दिया है। अर्थात् हमारी इस चर्चा की जानकारी जिन-जिन महानुभावों को होगी, वे धर्म और मत-पन्थों के अन्तर को भलीभाँति समझ लेंगे। अतः आप ध्यान से सुनिये!

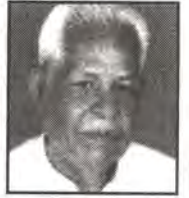
धर्म और मत-पन्थों का अन्तर

(१) धर्म एक है, और मत-पन्थ अनेक होते हैं। (२) धर्म सार्वकालिक, सर्वमान्य और सार्वभौम है, जबकि मत-पन्थ किसी समय,

● पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री

सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल
पुष्कर बंगलोज, कर्णावती (गुजरात)

चलभाष : ९७२४७०७१२६



समुदाय, क्षेत्र विशेष तक सीमित रहते हैं। (३) धर्म का आधार सत्य है, और मत-पन्थ मनमानी कल्पनाओं पर आधारित हुआ करते हैं। अर्थात् धर्म का सम्बन्ध ईश्वरीयज्ञान 'वेद' से और मत-पन्थों का सम्बन्ध मानव मन में उत्पन्न स्वतन्त्र विचारों के साथ होता है। (४) धर्म लोक और परलोक की सिद्धि में सहायक माना जाता है, जबकि मत-पन्थ बाधक बनते हैं। (५) धर्म मनुष्यों को परस्पर मिलाता है, और मत-पन्थ अलग-अलग करते हैं। इत्यादि...

जिज्ञासु- मैं सुनता रहता हूँ- भारतवर्ष विभिन्न धर्मों का देश है, तो क्या यह मान्यता उचित नहीं है?

मनीषी- वर्तमान में हमारा भारतवर्ष विभिन्न मत-पन्थों का घर बना हुआ है। दुर्भाग्य से धर्म के नाम पर प्रचलित हुए संसार के अधिकांश

शुभाशीर्वाद

भाई सुखदेवजी शर्मा- सप्रेम नमस्ते। अभिवादन।

पत्रिका के मुख पृष्ठ पर बिटिया के विवाह का चित्र देखकर ऐसा अनुभव हुआ। शायद मैं भी इस महोत्सव का प्रत्यक्ष सदस्य रहा हूँ। कमजोरी की वजह से ऐसे अवसर पर उपस्थित न हो पाना पश्चाताप व मजबूरी ही है। क्षमा करेंगे।

संस्कारों का वैदिक पद्धति (यज्ञ-सत्संग) से निर्वहन करना चमत्कारिक परिणाम देता है जैसे व्यापार में अकस्मात् भारी मुनाफा। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैंने किया है। वैदिक संस्कारों से विवाह आदि कर्म अपनाने से ही मेरी दोनों बेटियाँ सुशील सेवाभावी और सभ्यता को लेकर अगली पीढ़ी पर हैं। वैसे गर्भाधान पूर्व से लेकर अन्त्येष्टी तक वैदिक संस्कृति का वातावरण सच्चा स्वर्गमय जीवन होता है। अन्धकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमरत्व की ओर।

बिटिया सौ. भाग्यश्री संग श्री अर्जुनजी का पाणिग्रहण शुभ-सफल और भाग्यशाली हो। ईश्वर उन्हें जीवन में दीर्घायु, सुख, शान्ति व आनन्द से सराबोर रखे, इन्हीं शुभकामना के साथ हार्दिक बधाई व आशीर्वाद।

मैंने बेटी भाग्यश्री की विदाई की कविता लिखी यदि मैं उपस्थित हो पाता तो विदाई के समय गा देता परन्तु कमजोरी व ठंड ने मुझे रोक दिया। हो सके तो हम सबका आशीर्वाद बेटी तक पहुँचा देना।

● मोहनलाल दशोरा 'आर्य', नारायणगढ़, चलभाष : ९५७५७९८४१२



गीत- तर्ज : बाबुल की दुआएँ लेती जा

हम सबकी दुआएँ लेती जा, जा तुझे सुखी संसार मिले।

चाहे याद हमारी आये तुझे, ससुराल में भरपूर प्यार मिले॥

है नाम तेरा जो भाग्यश्री, तू सबका भाग्य जगायेगी।

तू सास ससुर की प्यारी हो, परिवार का मान बढ़ायेगी॥

तुम पढ़ी लिखी और सुन्दर हो, हमसे जो संस्कार मिले।

सब आर्यजनों की बेटी हो, वैसे ही घर में फूल खिले॥

हम सबकी दुआएँ लेती जा, जा तुझे सुखी संसार मिले।

चाहे याद हमारी आये तुझे, ससुराल में भरपूर प्यार मिले॥

आडम्बर पाखण्डों से बचना, परिवार को साथ बचाना है।

धन साधन के साथ तुझे, वैदिक धर्म भी चलाना है॥

नित यज्ञ हवन सत्संग करें, तुझे ऐसा ही सौभाग्य मिले।

सत्कर्म में सदा लगी रहो, तुझे जीवन का आनन्द मिले॥

हम सबकी दुआएँ लेती जा, जा तुझे सुखी संसार मिले।

चाहे याद हमारी आये तुझे, ससुराल में भरपूर प्यार मिले॥

मत-पन्थ, ऋषियों की इस पावन भूमि में पल और फल रहे हैं। आपको ज्ञात होना चाहिए- ईश्वर, आकाश, सत्य और धर्म अनेक नहीं हुआ करते, इसीलिए विभिन्न धर्मों वाली मान्यता निराधार है।

जिज्ञासु- आप लोभ धर्म किसे मानते हैं?

मनीषी- आदिसृष्टि से 'स्वामी दयानन्द' पर्यन्त इस भूमण्डल पर जितने ऋषि-मुनि हुए उन सभी ने जिसे धर्म माना, मैं संक्षेप से उसका मर्म बता रहा हूँ, आप मन लगाकर सुनते जाइए।

धर्म का मर्म

प्रथम दिवस की 'सैद्धान्तिक-चर्चा' में मैंने आपको आर्षग्रन्थों के नाम बताए थे उनमें से- वैशेषिक दर्शन के रचयिता महर्षि कणाद के अनुसार जो लोक और परलोक की सिद्धि में सहायक है, उसे धर्म कहते हैं। महर्षि वेदव्यास के शब्दों में जो धारण करने योग्य है और जिसके द्वारा सच्चा संरक्षण मिले वह धर्म है। मानव धर्मशास्त्र प्रणेता महर्षि मनु बताते हैं- जो वेद तथा स्मृतियों से समर्थित, महापुरुषों द्वारा आचरित हो, और अपने आत्मा को प्रिय लगे उसका नाम धर्म है।

जिज्ञासु- कृपया आप अपने 'धर्म का मर्म' और स्पष्ट कीजिए, क्योंकि हम जिसे धर्म मानते हैं वह आपके बताए धर्म से मेल खाता है अथवा नहीं? मैं यह जानना चाहता हूँ। जैसे कि हमारी दृष्टि में भूखों को भोजन, प्यासों को जल, नंगों को वस्त्र, रोगियों को औषधि देना, अर्थात् दीन-दुःखियों की सहायता करना धर्म है। हम तुलसी नामक पौधे का विवाह रचाना धर्म मानते हैं। साधु-महात्माओं को मधुर व्यञ्जन खिलाने से हमें धर्म की प्राप्ति होती है। मन्दिर बनवाना, रामलीला, रासलीला करवाना हमारे यहाँ धार्मिक कृत्य माने जाते हैं। इत्यादि... वैसे आप भी अपने मान्य धर्म की मुझे जानकारी दीजिए।

मनीषी- आप अपने विश्वास के अनुसार धर्म का सञ्चय तब ही कर सकते हैं, जब संसार में लोग भूखे, प्यासे, नंगे, रोगी, दीन-दुःखी हों। यदि कोई अभावग्रस्त, दुःखी न हो तो आप धर्म से वञ्चित रह जाएँगे। यह आपका कैसा धर्म है, जिसकी प्राप्ति के लिए भूखे, प्यासे, नंगे, रोगी, दीन-दुःखी व्यक्तियों का होना अनिवार्य हो।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना करने वाले हमारे पूर्वज किसी को भूखा, प्यासा, दीन-दुःखी नहीं देखना चाहते थे। धर्मप्रेमी तो ऐसा प्रयास और पुरुषार्थ करते हैं, जिससे कोई अभाव ग्रस्त नहीं रहता। मुझे आश्चर्य होता है आप लोग पौधों का विवाह करते और इस कृत्य को धर्म मानते हैं। भगवान् ने बुद्धि दी इसका सदुपयोग करना चाहिए।

जो सच्चे साधु-महात्मा हम गृहस्थियों को आतिथ्य का अवसर प्रदान करें, उन्हें हमारे भोजनालय में बना शुद्ध-सात्विक भोजन देना हमारा कर्तव्य है, किन्तु जो निकम्मे, निठल्ले, कर्महीन, दुर्व्यसनी, आलसी साधु वेशधारी व्यक्ति धरती पर भार बने रहते हैं, वे तो वाणीमात्र से भी सत्कार के योग्य नहीं हैं।

तथाकथित मन्दिर अन्धविश्वास में वृद्धि करने, भक्त को भगवान् से नहीं मिलने देते, अर्थात् ईश्वर के आनन्द की अनुभूति में बाधक बनते हैं और रामलीलाओं, रासलीलाओं के नाम पर हमारे महापुरुषों को

मनो-विनोद का साधन बनाना धर्म नहीं धर्म का उपहास है, इसे धर्म नहीं कहते, धर्म कोई और ही है।

जिज्ञासु- क्या किसी दीन-दुःखी की सहायता करना धर्म नहीं है?

मनीषी- आप समझने का प्रयास कीजिए- यह बताइए, जो तैरना नहीं जानते उनको डूबने से बचाने अथवा तैरने का प्रशिक्षण देने, इन दोनों कार्यों में आप किसे प्राथमिकता देंगे?

जिज्ञासु- यदि तैरना सिखा दिया जाए तो फिर डूबने से बचाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

मनीषी- अब आप समझे, अर्थात् ऐसा प्रयास करने का नाम धर्म है, जिसके फलस्वरूप आवश्यकताएँ पूरी करना सभी सम्पन्न व्यक्तियों का नैतिक दायित्व है, इसके लिए तो कोई भी मना नहीं कर सकता, किन्तु पहले गरीबों का शोषण करके फिर उन्हें सहयोग देने को धर्म मानना उचित नहीं है। किसी ने ठीक ही कहा है-

एरन की चोरी करे, करते सूई दान।

बोलो उनका किस तरह, भला करे भगवान्।।

छल-कपट, बेईमानी से धन बटोर कर निर्धनों को सहयोग देना जब से धर्म माना जाने लगा है, तब से संसार में अधिकांश व्यक्ति अभावग्रस्त-दुःखी हो गए, मैं ऐसा मानता हूँ। आप विश्वास कीजिए- अज्ञानतावश अथवा अपने नाम के लिए अनेक व्यक्ति मन्दिर बनवाते, पेड़-पौधों का विवाह रचाते, रामलीलाएँ- रासलीलाएँ करवाते और तथाकथित साधुओं को अनुचित प्रोत्साहन देते हैं। इन कार्यों का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। अब सुनिए धर्म किसे कहते हैं? अर्थात् मैं आपको वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्वधर्म की संक्षिप्त जानकारी दे रहा हूँ, जो 'मानवीय कर्तव्य' कहलाते हैं।

वैयक्तिकधर्म

'वैयक्तिकधर्म' का पालन करने वालों के जीवन में कोई दुरित-दुर्व्यसन नहीं होते, वे अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण संयम रखते हैं, पर स्त्री को माता-बहिन-पुत्री की भावना से देखते, पराए धन को मिट्टी के समान समझते, किसी के साथ विश्वासघात नहीं करते, ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, अग्निहोत्र, परोपकार, सेवा आदि सत्कर्मों का सम्पादन आवश्यक मानते और परिश्रम से जी नहीं चुराते, उनका मन शुभ संकल्पी होता है, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, क्रोध, अभिमान, कृतधनतादि दोष उनमें दिखाई नहीं देते। आदि आदि...

जिज्ञासु- आपका यह धर्म तो मनुष्य को देवता और संसार को स्वर्ग बना सकता है। धर्म सम्बन्धी प्राप्ति इस यथार्थ जानकारी के लिए मैं आपका आभारी हूँ। आपने जो बताया उसके अनुसार कोई आचरण करे तो निःसंदेह वह धर्मात्मा कहलाने योग्य है।

मनीषी- यह तो धर्म का एक भाग है, केवल इसका पालन करने से ही कोई धर्मात्मा नहीं हो जाता। इसके लिए जिस दूसरे भाग को भी कर्तव्य-भावना से स्वीकारना अति आवश्यक है, वह है-

(क्रमशः...)

केन्द्रीय विद्यालयों में परमात्मा की प्रार्थना पर रोक लगाने की माँग अनुचित है

मध्यप्रदेश के वकील विनायक शाह द्वारा सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करके केन्द्रीय विद्यालय में होने वाली प्रार्थना **दयाकर दान विद्या का हमें परमात्मा देना** और ज्ञान मार्ग प्रकाश पर चलने हेतु **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय** बोलने पर रोक लगाने की माँग की गई है, विनायक शाह ने इसे हिन्दू धर्म को बढ़ावा देना एवं बच्चों के वैज्ञानिक सोच में बाधक बतलाया है। उपरोक्त सम्बन्ध में कुछ प्रश्न पैदा होते हैं-

१. क्या धर्म अनेक होते हैं? सच्चाई यह है कि धर्म एक ही होता है। मानव का धर्म है मानवता। हिन्दू धर्म, मुसलमान धर्म, कहना गलत है इसे मत या पन्थ कहना उचित है। जैसे हिन्दू मत, ईसाई मत, मुस्लिम मत आदि कहना सही है।

२. क्या परमात्मा खुदा या गॉड अलग-अलग सत्ता है? सच्चाई यह है कि एक ही संसार का मालिक है। विभिन्न मत वालों ने अलग-अलग नाम से सम्बोधित किया है। कोई परमात्मा, कोई खुदा, कोई गॉड आदि।

३. किसी प्रार्थना या विचार को इस आधार पर विरोध करना कि यह एक विशेष समुदाय के धर्म ग्रन्थ से लिया गया है या एक विशेष भाषा में बोला गया है, उचित नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि प्रार्थना का भावार्थ क्या है क्या प्रार्थना मानवता के ऊपर आधारित है। क्या प्रार्थना से बच्चों के हृदय में अच्छे विचार आते हैं।

४. क्या प्रार्थना में किसी मत मजहब की निन्दा की गई है? अगर ऐसा नहीं है तो प्रार्थना का विरोध क्यों?

प्रार्थना का आंशिक स्वरूप

दयाकर दान विद्या का हमें परमात्मा देना दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना। हमारा धर्म हो सेवा हमारा कर्म हो सेवा। हमें आपस में मिलजुलकर रहना प्रभु सिखा देना...

- प्रार्थना में कहा गया है हमें आपस में मिलजुलकर रहना सिखा देना अर्थात् एकता की भावना पैदा करने की बात कही गई है।
- प्रार्थना में कहा गया है कि हमारा धर्म हो सेवा, हमारा कर्म हो सेवा अर्थात् त्याग और सेवा की भावना पैदा करने की बात कही गई है।
- प्रार्थना में कहा गया है कि बहा दो प्रेम की गंगा दिलों में, प्रेम का सागर अर्थात् आपसी प्रेम एवं सौहार्द की भावना पैदा करने की बात कही है।

इसी प्रकार वेद के विचार **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय** (यजुर्वेद १९/९) में अन्धकार से प्रकाश की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर चलने की बात कही गई है। क्या किसी भी मत या सम्प्रदाय वाला व्यक्ति प्रकाश मार्ग या ज्ञान मार्ग पर चलना नहीं चाहेगा?

किसी धर्म ग्रन्थ का विचार अगर मानवता के ऊपर आधारित है तो उसे किसी भी मत मजहब वाले व्यक्ति को अपनाने में संकोच नहीं करना चाहिए।

उपरोक्त प्रार्थना के भाव एवं विचार वेद पर आधारित हैं, वेद संसार

● आचार्य श्रुति भास्कर

धार्मिक प्रवक्ता एवं साम गायनाचार्य
संगीतायन स्वतन्त्र नगरी, सहारनपुर (उ.प्र.)

चलभाष : ९४१२७४२५५७



का सबसे प्राचीन एवं प्रथम धार्मिक ग्रन्थ है। वेद ने कहा **मनुर्भवः** अर्थात् मनुष्य बनो वेद ने नहीं कहा कि तुम मुसलमान बनो, हिन्दू बनो या ईसाई बनो।

वेद ने कहा **सर्वे भवन्ति सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया** अर्थात् सभी सुखी रहें, सभी निरोग रहें। वेद ने यह नहीं कहा कि केवल हिन्दू सुखी रहें, मुसलमान, ईसाई तथा अन्य दुःखी रहें। वेद में किसी वर्ग विशेष या सम्प्रदाय के सुखी रहने की बात नहीं कही गई है अपितु मानव मात्र के सुख की कामना की गई है।

यह प्रेक्टीकल अनुभव करने की बात है कि परम प्रार्थनीय परमात्मा की प्रार्थना से अनुशासन, मानसिक शान्ति, आत्मिक बल एवं बुद्धि का विकास होता है। याचिकाकर्ता द्वारा प्रार्थना को वैज्ञानिक सोच में बाधक मानना अत्यन्त हास्यापद लगता है।

याचिका दाखिलकर्ता एक अधिवक्ता है। अधिवक्तागण शिक्षित, सुतर्क पूर्ण, विचारों एवं बुद्धिजीवी की श्रेणी में आते हैं। अतः याचिकाकर्ता विनायक शाह से भी हम इसी प्रकार की उम्मीद करते हैं। ■

सुपुत्री हेतु जीवन साथी की आवश्यकता है

मेरी सुपुत्री डॉ. पूनम विश्वकर्मा (तलाकशुदा), जिसका जन्म दिनांक १५.१२.१९८६ तथा जन्म स्थान : तिलावद, जनपद : शाजापुर (म.प्र.) है। जिसकी शैक्षणिक योग्यता बी.एच.एम.एस. तथा पी.जी.डी. ई.एम.एस. है। वर्तमान में आरोग्यम चिकित्सालय, नवलखा, इन्दौर में सेवारत है। परिवार में मेरी धर्मपत्नी श्रीमती अनिता विश्वकर्मा तथा बेटा से छोटा एक पुत्र (अविवाहित) है। मेरा गौत्र भेसरोदिया, मेरी माँ का लुणावदिया, धर्मपत्नी का पिपलोदिया तथा मेरी सासू माँ का गौत्र सिंगोरिया है। कद : ५ फुट १ इंच हेतु सुयोग्य, शाकाहारी, संस्कारवान, उच्च शिक्षित, नौकरी अथवा व्यवसायरत, दुर्व्यसनमुक्त युवक के अभिभावक सम्पर्क करें।

राधेश्याम विश्वकर्मा

शा. आवास गृह, शा.क.उ.मा.वि. परिसर

सेन्धवा, जनपद : बड़वानी (म.प्र.)

चलभाष : ९८२७८४०२०४

यात्रा वृत्तान्त

परमपिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा है...

जो भी कुछ घटित हो रहा है अथवा कुछ कर पा रहा हूँ वह सब परमपिता परमात्मा की असीम तथा महती कृपा का प्रसाद है अन्यथा मुझे अल्पज्ञ एवं अल्पशक्तिमान जीव का सामर्थ्य कहाँ!

जनवरी मास में सम्पादित कार्यों तथा यात्रादि का उल्लेख फरवरी मास के अंक में प्रस्तुत किया गया था, प्रस्तुत है फरवरी मास का लेखा-जोखा...

जनवरी मास का अंक विलम्ब से प्रकाशित होने के कारण न्यून डाक शुल्क सुविधा पर प्रेषण सम्भव नहीं हो सका अतः सामान्य डाक शुल्क पर जनवरी माह का अंक २ फरवरी को प्रेषित किया जा सका।

२ फरवरी को सायंकाल बिटिया जयश्री आ गईं, उसे शिक्षक पात्रता परीक्षा वर्ग-१ की परीक्षा ३ फरवरी को ग्राम- बरखेड़ा (महू) में देना थी। प्रातः शीघ्र जाने तथा राऊ से निकटस्थ होने के कारण मैं और जयश्री रात्रि १० बजे रेल द्वारा सुपुत्र नितिन के निवास स्थान राऊ चले गए, वहीं शयन किया।

३ फरवरी को प्रातः बिटिया जयश्री को उसके परीक्षा केंद्र पर छोड़ा तथा सुपुत्र नितिन तथा उसका श्यालः विकास व मैंने आर्य समाज राऊ के सत्संग में उपस्थिति दी, मेरा संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। राऊ से प्रस्थान कर महू गाँव होते हुए आर्य समाज महू पहुँचे, उस समय महिलाओं द्वारा प्रतिमाह के एक रविवार को महिलाओं द्वारा संचालित साप्ताहिक सत्संग का समापन हुआ ही था तथा सत्संग समापन के पश्चात सहभोज होने वाला था, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य तथा श्री श्रीधरजी आर्य, श्री ओमप्रकाशजी आर्य व अन्य आर्यजनों से भेंट वार्ता हुई। आप बन्धुओं के आग्रह पर भोजन ग्रहण किया। आर्य समाज महू से प्रस्थान कर बेटी जयश्री को लेकर राऊ आए, भोजन ग्रहण उपरान्त इन्दौर आए, बेटी जायश्री ने देवास के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक ४ फरवरी को पार्सल से भेजी जाने वाली पत्रिकाओं का प्रेषण कार्य पूर्ण किया।

दिनांक ४ से ७ फरवरी तक फरवरी माह की पत्रिका का कार्य पूर्ण कर मुद्रित होने हेतु भेजा।

दिनांक ७ फरवरी को इन्दौर-दिल्ली इण्टरसिटी लौहपथ गामिनी से सायं ४.३० पर शामगढ़ के लिए प्रस्थान किया। सुपुत्र निलेश के यहाँ पहुँचकर भोजन-शयन किया।

दिनांक ८ फरवरी को दिनचर्या से निवृत्त हो सुपुत्र निलेश के साथ दैनिक अग्निहोत्र सम्पन्न किया। बान्द्रा-जयपुर से शामगढ़ से प्रस्थान कर सवाई माधोपुर पहुँचा, सवाई माधोपुर से कोटा-आगरा सवारी गाड़ी से श्री महावीरजी व श्री महावीरजी से बस द्वारा सायंकाल नादौती पहुँचा। नादौती निवासी श्री देवीसहायजी जांगिड जो वरिष्ठ समाजसेवी तथा मेरे अभिन्न मित्र हैं। आपकी कनिष्ठ सुपुत्री सौ.कां. नीलम का विवाह ८ फरवरी को चि. हिमांशुजी के साथ था, बिटिया को उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं के साथ सत्यार्थ प्रकाश की प्रति प्रदान की। श्री कान्तिप्रसादजी शर्मा पूर्व प्रदेशाध्यक्ष जांगिड प्रदेश सभा, राजस्थान जिनकी ख्याति सामाजिक कार्यों में तन-मन-धन से अग्रणी रहने के कारण 'टाइगर' के रूप में हैं। आपका व्यवसाय तथा निवास दिल्ली में है तथा पैतृक निवास ग्राम कैमरी है जो नादौती के समीप ही है, भोजन ग्रहण

करने के उपरान्त श्री कान्तिप्रसादजी आत्मियतापूर्वक अपने साथ कैमरी ले गए, जलपान करवाया तथा मेरे विश्राम का प्रबन्ध किया। मध्य रात्रि में हल्दीघाटी द्रुतगति लौहपथ गामिनी में श्री महावीरजी से आगरा का मेरा यात्रा टिकिट आरक्षित था। कान्तिप्रसादजी ने अपने वाहन चालक को मुझे रेल समय पर रेल स्थानक छोड़ने हेतु निर्देशित किया। समाचार प्राप्त हुआ कि गुर्जर आरक्षण आंदोलन के कारण रेल मार्ग बाधित हो गया है और मेरी रेल निरस्त कर दी गई है। अतः रात्रि शयन कैमरी में ही किया। दिनांक ९ फरवरी को प्रातः काल स्नानादि-प्रातराशः से निवृत्त हो कान्तिप्रसादजी ने मुझे नादौती बस स्थानक पर छोड़ दिया जहाँ से सिकन्दरा, महू आ होते हुए सड़क मार्ग से आगरा पहुँचा। आगरा में शाहगंज के समीप पृथ्वीराज रेल द्वार के समीप निवासरत श्री सूरजप्रसादजी शर्मा पूर्व निर्धारित योजनानुसार प्रतिक्षारत मिले। आपके यहाँ देवयज्ञ उपरान्त भोजन ग्रहण किया। आपके सुपुत्र श्री राहुल अग्निहोत्री के द्वारा मुझे शमशाबाद रोड पर स्थित भोला की डेयरी के समीप छोड़ दिया गया। जहाँ श्री ओमप्रकाशजी शर्मा के ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ. प्रमोदजी शर्मा प्रतिक्षारत मिले। आपके साथ आपके छोटे भाई श्री मनोजजी शर्मा के निवास मारुति विहार पर पहुँचे, जहाँ श्री ओमप्रकाशजी से भेंट-वार्ता हुई। आप सुपुत्री भाग्यश्री के विवाह में पधारने वाले थे किन्तु हृदय रोग की समस्या के कारण नहीं आ सके थे। मेरे आगरा आने का मुख्य प्रयोजन आपका कुशलक्षेम जानना था। श्री मनोज जी शर्मा सेना से सेवानिवृत्त के यहाँ से डॉ. प्रमोदजी शर्मा के निवास स्थान जयपुरिया सनराइज पर गए। डॉ. प्रमोदजी शर्मा एम.एस.जे. महाविद्यालय भरतपुर (राज.) से सेवानिवृत्त हैं। आपने वनस्पति शास्त्र के प्राध्यापक के रूप में अध्यापन का सेवा कार्य किया। वर्तमान में आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्त सम्पर्क प्रमुख के रूप में समर्पित रूप से सेवा दे रहे हैं। आप अत्यंत विनयशील, स्वाध्यायशील तथा सेवाभावी, उदार व्यक्ति हैं। आपसे वैदिक सिद्धान्त विषयक गहन वार्ता हुई। आपने शाल तथा सम्मान राशि द्वारा सम्मान किया। मेरे द्वारा आपको सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट की गई।

आपने सर्द रात्रि में लगभग दस बजे मेरे द्वारा मना करने के उपरान्त भी आयु अवस्था के इस पड़ाव में एक युवा की तरह पूर्ण ओज-तेज के साथ लगभग ९-१० किलोमीटर मोटरसाइकिल से मुझे आगरा किला रेल स्थानक पहुँचा कर अपनी सहृदयता का परिचय दिया। जहाँ से मैंने हावड़ा-जोधपुर लौह पथ गामिनी से जोधपुर के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक १० फरवरी को प्रातः श्री नरेन्द्रजी शर्मा स्मृति शेष के निवास पर पहुँचा। दिनचर्या से निवृत्त हो भाभीजी श्रीमती निर्मलाजी शर्मा के साथ देवयज्ञ किया। भोजन ग्रहण करने के उपरान्त आपके सुपुत्र नवनिधिन्द्र (भानू) ने मुझे होटल इम्पीरियल प्लाजा, डी.पी.एस. बायपास, जोधपुर छोड़ दिया। जहाँ श्री नरेशजी दम्मीवाल के सुपुत्र चि. आकाश के विवाह अवसर पर नवदम्पति का आशीर्वाद समारोह आयोजित था। अनेक गणमान्य महानुभावों से भेंट वार्ता हुई। नवदम्पति को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। श्री नरेन्द्रजी के निवास पर शयन किया।

दिनांक ११ फरवरी को जोधपुर-इन्दौर लौहपथ गामिनी से प्रातः ७.१० बजे पिपलिया मण्डी के लिए प्रस्थान किया। परमपिता की महती कृपा से रेल

के अनारक्षित यान में ऊपर वाली बर्थ पर स्थान मिल गया। जहाँ सम्पूर्ण यात्रा में किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ तथा अन्य यात्रियों की गहमा-गहमी की ओर भी ध्यान नहीं गया और प्रातःकाल से सायंकाल तक अन्तरमन में प्रभु प्रेरणा से उत्प्रेरित विचारों को लेखनीबद्ध किया। एक सर्वथा भिन्न आनन्द की अनुभूति अनुभूत की गई। इस हेतु उस परमपिता परमात्मा को कोटिशः वन्दन-नमन्। सायंकाल लगभग ७ बजे पिपलिया मण्डी रेल

स्थानक पर उतरा जहाँ पर बंशीलालजी आर्य बरखेड़ा पंथ वालों ने मुझे लेने के लिए श्री प्रदीपजी विश्वकर्मा को भेज दिया था, आप प्रतिक्षारत मिले। आपके साथ बरखेड़ा पन्थ पहुँचा। भोजन, शयन किया।

दिनांक १२ फरवरी को श्री बंशीलालजी आर्य, उपप्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ देवयज्ञ किया। आर्य मुसाफिर श्री हीरालालजी आर्य स्मृति शेष के निवास पर पहुँचा। आपकी सुपुत्री बहन शान्तिदेवीजी से

संरक्षक सदस्य श्री ओमप्रकाशजी शर्मा

सरल, सहृदयी, सेवाभावी, मिलनसार, स्वाध्याशील गुणों के धनी, जिनकी रंग-रंग में आध्यात्मिकता का वास है, ऐसे प्रेरणादायी व्यक्तित्व की धरोहर के स्वामी, वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी तथा संरक्षक महानुभाव श्री ओ३म् प्रकाशजी शर्मा (सेवानिवृत्त सूबेदार, मेजर) सुपुत्र स्मृति शेष श्री अशर्फीलालजी शर्मा, निवासी : ग्राम बसई, तहसील व पत्रालय : फतेहाबाद, जनपद : आगरा (उ.प्र.) आपका जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण ३० (अमावस्या) विक्रमी संवत् १९९३ (सन् १९३६) को हुआ। आषाढ़ कृष्ण सप्तमी विक्रमी संवत् २०१० (सन् १९५३) को श्रीमती पुष्पादेवी पुत्री पं. बृजलालजी शर्मा 'वकील', निवासी : मोहल्ला मिश्रान, फतेहाबाद (आगरा) के साथ परिणय सूत्र में बन्धकर गृहस्थ आश्रम में आपका प्रवेश हुआ। चार सुपुत्र- डॉ. प्रमोद शर्मा (प्रोफेसर), अशोक शर्मा, प्रदीप शर्मा तथा सूबेदार मनोज शर्मा (भारतीय थलसेना से अवकाश प्राप्त) तथा तीन सुपुत्रियाँ क्रमशः श्रीमती मधु शर्मा, प्रधानाचार्या इण्टर कॉलेज, श्रीमती सुनीता शर्मा (परास्नातक) एवं श्रीमती प्रतिभा उपाध्याय (परास्नातक) हैं।



संक्षिप्त जीवन परिचय : माध्यमिक शिक्षा उपरांत भारतीय थलसेना में प्रवेश तथा सन् १९८९ में सेवानिवृत्त। सैन्य सेवा के दौरान भारतीय छाताधारी सैनिक (इंडियन पैराट्रूपर) के विशेष प्रशिक्षणोपरान्त सन् १९६५ एवं १९७१ में भारत-पाकिस्तान युद्धों में सक्रिय सहभागिता का अवसर आपको प्राप्त हुआ।

आपके ज्येष्ठ सुपुत्र प्रो. डॉ. प्रमोदजी शर्मा, राजस्थान में सेवारत रहे तथा सेवानिवृत्त होकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, बृज प्रदेश में प्रांतीय स्तर के कार्यकर्ता हैं। बड़ी पुत्री मधु, राष्ट्र सेविका समिति में कार्यकर्ता तथा छोटी पुत्री प्रतिभा उपाध्याय सेवा भारती (आर.एस.एस.) में होकर अहर्निष समाज सेवा में निरत हैं।

आप सन् १९५३ में पूज्य सरसंघ चालंक एम.एस. गोलवलकर, पं. दीनदयाल उपाध्याय, श्री विश्वनाथ लिमये, श्री ओमकारनाथ भावे आदि वरिष्ठ प्रचारकों के सानिध्य से प्रभावित होकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयंसेवक बने।

सैन्य सेवा के दौरान आर्य समाज के विद्वान संन्यासियों यथा शास्त्रार्थ महारथी ठा. अमरसिंह (अमर स्वामी), भजनोपदेशक कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, आर्य क्रान्तिकारी संन्यासी नारायण स्वामी आदि से वैदिक धर्म (आर्य समाज) के प्रति झुकाव हुआ। सेवानिवृत्ति के बाद आर्य मनीषियों यथा पं. सुखदेव शर्मा, प्रकाशक : वैदिक संस्कार, आचार्य हरिशंकरजी अग्निहोत्री, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका आचार्या मिथिलेश शास्त्री आदि का

समय-समय पर मार्गदर्शन मिलने से आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता रहता है। स्वाध्याय हेतु कुछ पत्रिकाएँ यथा वैदिक संसार, आर्य जगत्, आर्य संदेश, आर्य मित्र, तपोभूमि मासिक, युग निर्माण योजना, परोपकारी, आर्यावर्त केसरी, पवमान (मासिक), जनज्ञान, सत्यार्थ सौरभ (मासिक), वैदिक सार्वदेशिक आदि पत्रिकाओं के आप आजीवन सदस्य हैं। स्वाध्याय पश्चात् स्वाध्याशील बन्धुओं को साहित्य वितरण का विलक्षण कार्य भी आप कर रहे हैं।

आर्य समाज के प्रति दृढ़ आस्था होते हुए भी आर्य संस्थाओं, सार्वदेशिक, प्रादेशिक जिला एवं स्थानीय स्तर पर गुटबन्दी, धड़ेबन्दी के कारण कभी-कभी आपका मन व्यथित हो जाता है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवीजी का बैसाख शुक्ल १२ (द्वादशी) वि.सं. २०७१ तदनुसार ११ मई सन् २०१४ को देहावसान हो चुका है। आपके पुत्र-पुत्रियों के द्वारा अपनी माँ की स्मृति में एक अल्पराशि वैदिक विद्वान आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री की प्रेरणा से रु. ५,००,००० पाँच लाख पर अर्जित ब्याज के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु संकल्प लिया है तथा तदनुसार कार्यरत है।

आपका अपने जन्म स्थान ग्राम बसई, फतेहाबाद (आगरा) पर अपने पूर्वजों की स्मृति में कुछ और धनराशि परोपकारार्थ व्यय करने का मानस है। इस पर आर्य मनीषियों के दिशा-दिग्दर्शन की आवश्यकता है। ईश्वर कृपा से भरा-पूरा परिवार है परन्तु धर्मपत्नी पुष्पादेवी का बिछोह आपको सालता रहता है। उपरोक्त टीस को पाटने का कार्य आर्य विद्वान, मनीषी एवं वैदिक पत्र-पत्रिकाओं से प्राप्त ऊर्जा मिलने से बना रहता है तथा मानसिक और आत्मिक बल में असीम वृद्धि होती है।

८३ वर्ष की आयु अवस्था व हृदयरोग से पीड़ित होने के उपरान्त भी आप में सराहनीय शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक बल है। स्वाध्याय और उपदेश श्रवण आपके जीवन के अभिन्न अंग हैं। परिवारजनों के मना करने के उपरान्त भी आप देश के सुदूर स्थानों पर होने वाले वैदिक आयोजनों में भाग लेने पहुँच जाते हैं तथा मुक्त हस्त से सहयोग करते रहते हैं। आपने वैदिक संसार की प्रेरणा से अप्रैल-२०१८ में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का भी लाभ लिया था। आप अपने गृहग्राम में वैदिक सत्संग का आयोजन भी कर चुके हैं। आगे भी आपका प्रयास बना हुआ है।

वैदिक संसार को आपने प्रसन्नतापूर्वक संरक्षक सदस्यता राशि का सहयोग किया है। वैदिक संसार परिवार आपके स्वस्थ, शतायु जीवन की कामना करते हुए आपके सम्पूर्ण परिवार की सुख-शान्ति, समृद्धि की शुभकामना परम पिता परमेश्वर से करता है। ■

भेंट वार्ता हुई तथा श्री सुरेशजी कारपेण्टर, श्री अम्बालालजी विश्वकर्मा, पं. सत्येन्द्रजी आर्य से भी भेंट वार्ता हुई। पिपलिया मण्डी जाकर श्री बंशीलालजी शर्मा के निवास पर परिजनों से भेंट वार्ता हुई। श्री बंशीलालजी के सुपौत्र चि. डॉ. जसवन्त का शुभविवाह सौ.कां. वन्दना के संग सम्पन्न होने पर नवदम्पति के आशीर्वाद समारोह प्रसंग पर मैं यहाँ आया था। नवदम्पति को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ प्रदान कर इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। श्री प्रदीपजी विश्वकर्मा ने ससम्मान मुझे पिपलिया मण्डी रेल स्थानक पर छोड़ा, जहाँ से जोधपुर-इन्दौर लौहपथ गामिनी से आरक्षित टिकट से रात्रि ग्यारह बजे इन्दौर पहुँचा।

दिनांक १३ फरवरी को दोपहर एक बजे बहन श्रीमती प्रमिला शर्मा तथा धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा के साथ वैदिक साहित्य लेकर पेंचवेली द्रुतगति सवारी गाड़ी से होशंगाबाद रात्रि ९ बजे पहुँचा। होशंगाबाद से लगभग २०-२५ किलोमीटर की दूरी पर ग्राम डोलरिया में आचार्य सोमदेवजी आर्य, रोजड़ के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ तथा वैदिक सत्संग दिनांक १३ से १७ फरवरी तक प्रारम्भ हो चुका था। भजन उपदेश हेतु अमृतसर से श्री दिनेशजी पथिक पथारे थे। चलभाष पर सूचित करने पर श्री नरेन्द्रजी आर्य डोलरिया से अपने चार पहिया वाहन से लेने आ गए। अतिथियों के विश्राम-भोजन की उत्कृष्ट व्यवस्था श्री नरेन्द्रजी के नवनिर्मित आवास पर की गई। श्री नरेन्द्रजी तथा आपके सहयोगियों का वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु यह प्रयास सराहनीय था। मेरे द्वारा साहित्य विक्रय कर वैदिक साहित्य उपस्थितों को सुलभ करवाया गया।

दिनांक १४ फरवरी को पुलवामा में घटित आतंकवादी घटना से अन्तरमन अशान्त, क्लान्त था। प्रभु प्रेरणा से उपरोक्त घटना क्रम को केन्द्र में रखकर सम्पादकीय लिखा। दिनांक १६ फरवरी को सायंकालीन भोजन उपरान्त हम सभी ने इटारसी के लिए प्रस्थान किया। श्री नरेन्द्रजी ने अपने चार पहिया वाहन से हमें इटारसी जंक्शन पहुँचाया। हजरत निजामुद्दीन-विशाखापट्टनम, समता द्रुतगति लौहपथ गामिनी में खड़ियार रोड़ (ओडिशा) का हमारा टिकट आरक्षित था।

दिनांक १७ फरवरी को प्रातः ९ बजे खड़ियार रोड़ रेल स्थानक पर उतरे। रेल स्थानक के समीप अग्रसेन भवन पर दिनचर्या से निवृत्त हुए। लगभग १२ बजे हमें लेने श्री दयानन्दजी शर्मा, दक्षिण अफ्रीका वाले, संरक्षक गुरुकुल नवप्रभात आश्रम आ पहुँचे। आपके साथ श्री चौथमलजी जांगिड विश्वकर्मा होटल, रींगस, जिला सीकर (राज.) भी थे। हम सभी समीपस्थ गुरुकुल आमसेना, जनपद : नुआपाड़ा (ओडिशा) पहुँचे। गुरुकुल आमसेना का वार्षिकोत्सव १७-१८ फरवरी चल रहा था। गुरुकुल आमसेन के पदाधिकारियों द्वारा श्री दयानन्दजी शर्मा का अभिनन्दन किया गया। गुरुकुल आमसेना से प्रस्थान कर नरसिंगधाम (पौराणिक तीर्थ स्थल) तथा वहाँ पर्वत पर अत्यन्त ऊँचाई पर बहने वाले जल स्रोत कपिल धारा का भ्रमण-अवलोकन करते हुए लगभग १०० किलोमीटर की दूरी तय कर सायंकाल गुरुकुल नवप्रभात आश्रम जनपद : बरगढ़ (ओडिशा) पहुँचे। आश्रम की यज्ञशाला में हो रहे यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ३७वें अध्याय के देवयज्ञ में अपनी आहुति प्रदान की, भोजन-शयन किया।

दिनांक १८ से १९ फरवरी तक स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति १०१ कुण्डीय देवयत्र द्वारा तथा गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में अपनी उपस्थिति प्रदान की। वैदिक साहित्य के विक्रय केन्द्र द्वारा उपस्थित आर्यजनों को वैदिक साहित्य सुलभ करवाया। दिनांक १८ को सायंकालीन यज्ञ गुरुकुल से लगभग ३-४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित

नवप्रभात वैदिक कन्या गुरुकुल पर किया गया तथा यज्ञशाला तथा पाकशाला के निर्माण का शिलान्यास किया गया। लगभग ३५ एकड़ भूमि पर लगभग ७ फीट ऊँची दीवार चारों ओर से बनाई जा चुकी है। आवास-विद्यालय, कार्यालय व सुरक्षाकर्मी आवास निर्माण कार्य निर्माणाधीन है। सम्पूर्ण आयोजन गमिरमायी तथा भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक २० फरवरी को गुरुकुल नवप्रभात आश्रम के आचार्य भगवान देव जी ने हमें छोड़ने हेतु टाटा सफारी चार पहिया वाहन खड़ियार रोड़ भेजा। हमारे साथ में भुवनेश्वर के भी अमूल्य चरणदासजी तथा गुरुकुल कांगड़ी से शोध कर रहे ब्रह्मचारी भी हो लिए।

दिनांक २१ फरवरी को प्रातः ७ बजे निर्धारित समय से दो घण्टा विलम्ब से भोपाल रेल स्थानक पर उतरे। रेल मार्ग बाधित होने से भोपाल- इन्दौर की २०० किलोमीटर की दूरी में लगभग सम्पूर्ण दिवस व्यतीत हो गया। रात्रि ८ बजे इन्दौर पहुँचे। दिनांक २४ फरवरी को पुत्रवधु श्रीमती प्रियंका तथा उसके छोटे भाई श्री विकासजी का जन्मदिवस होने से सुपुत्र नितिन के निवास पर राऊ गए। वृहद देवयज्ञ के साथ जन्मदिवस की विशेष आहुतियों के साथ देवयज्ञ सम्पन्न किया तथा मानव जीवन और जन्म दिवस विषयक आवश्यक उपदेश प्रदान किया। दोपहर को निवास पर लौटकर पत्रिका प्रेषित की जाने वाली सूची का कार्य सम्पादित किया।

दिनांक २३ फरवरी को प्रातः ४.३० पर इन्दौर से जोधपुर जाने वाली लौहपथ गामिनी में श्यालः जगदीश शर्मा तथा साली श्रीमती नर्मदा शर्मा एवं धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा के साथ अजमेर के लिए प्रस्थान किया। मध्याह्न दो बजे अजमेर पहुँचकर बस द्वारा कुचामन सीटी तथा वहाँ से ग्राम प्रेमपुरा पहुँचे। देवयज्ञ पश्चात भोजन-शयन किया।

दिनांक २४ फरवरी को प्रातः हम सभी ने मिलकर मेरे ताऊ श्वसुर श्री मोहनलालजी आमेरिया की उपस्थिति में देवयज्ञ किया। ग्राम प्रेमपुरा मेरी धर्मपत्नी का पैतृक निवास स्थान है। मेरे ताऊ श्वसुर श्री गोविन्दजी आमेरिया की धर्मपत्नी श्रीमती जानकी देवी के निधन पर पौराणिक पद्धति से आयोजित कार्यक्रम में उपस्थिति हेतु हम लोगों का प्रेमपुरा आगमन हुआ था। जोधपुर से पधारे आमेरिया परिवार के जवाई श्री नरेशजी, श्री मुकेशजी तथा लादड़िया से पधारे मेरे बुआ सास के सुपुत्र श्री दामोदरलालजी, रूपगढ़ वाले मास्टर सा. श्री दुर्गाप्रसादजी व अनेक उपस्थित महानुभावों से वैदिक सिद्धान्त विषयक विस्तार से वार्ता हुई। आप लोगों को वैदिक साहित्य स्वाध्याय कर वैदिक धर्म सिद्धान्तों को जानने-समझने तथा आत्मसात करने की प्रेरणा दी। इस हेतु आपको आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेने हेतु भी प्रेरित किया। उपस्थित अधिकांश महानुभावों को वैदिक संसार की प्रति भेंट की। प्रेमपुरा से प्रस्थान कर फूलें जंक्शन रेल स्थानक पहुँचे। वहाँ से बीकानेर- इन्दौर लौहपथ गामिनी में यात्रा टिकट आरक्षित था।

दिनांक २५ फरवरी को प्रातः १० बजे इन्दौर पहुँचे। श्यालः जगदीश शर्मा तथा साली नर्मदा शर्मा भोजनोपरान्त बड़वानी हेतु प्रस्थान कर गए। वैदिक संसार के सम्पादक गजेश शास्त्री द्वारा फरवरी मास की पत्रिका प्रेषण कार्य पूर्ण कर लिया गया था। अतः गजेश शास्त्री के सहयोग से पत्रिकाएँ प्रेषित की तथा पार्सल से भेजी जाने वाली पत्रिकाओं का कार्य प्रारम्भ किया। दिनांक २६ व २७ को पार्सल से भेजी जाने वाली पत्रिका प्रेषित की।

दिनांक २७ व २८ को यात्रा संस्मरण लिखा तथा मार्च माह की पत्रिका हेतु प्रकाशन सामग्री का चयन कर संगणक को दिया। आगे जैसी प्रभु इच्छा व मार्च माह का यात्रा वृत्तांत सम्भवतः अप्रैल माह में आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। इत्योम् ।

कराची तो, भारत को मिलनी थी किन्तु...

पश्चिमी उत्तरी भारत के ४ राज्यों में, ५१ या अधिक प्रतिशत वाले मुस्लिम जिले/नगर ही प्रस्तावित पश्चिमी पाकिस्तान को दिए जाने थे। कराची में मुस्लिमों का प्रतिशत ४९ था। अतः वह तो पाकिस्तान को मिलनी ही नहीं चाहिए थी। जिन्ना कराची को राजधानी बनाना चाहते थे। सीमा निर्धारण आयोग के अध्यक्ष लन्दन में जिन्ना के जूनियर वकील रहे थे अतः उन्होंने जिन्ना का हर स्तर पर लिहाज किया और नेहरू-जयरामदास दौलतराम- राम जेठमलानी- आचार्य कृपलानी आदि सक्रिय नहीं हुए बल्कि मूकदर्शक की भूमिका में रहकर सिन्धी हिन्दुओं का कोई ध्यान नहीं रखा। यदि ५३ प्रतिशत मुस्लिम आबादी के कारण लाहौर पाकिस्तान को दिया गया तो ५१ प्रतिशत हिन्दू आबादी के कारण कराची भारत को देने का संकेत अध्यक्ष ने दे दिया होता तो जिन्ना स्वयं कहते कि कराची हमें दे दो और लाहौर भारत को दे दो किन्तु नेहरू की जल्दी प्रधानमंत्री बनने की चाहत में नेहरू ने कह दिया कि आयोग का निर्णय भारत स्वीकार करेगा तब अध्यक्ष ने पक्षपात करते हुए कराची भी पाकिस्तान को देकर जिन्ना को खुश कर दिया। फिर भी मुर्दा हिन्दू अभी तक नेहरू जयंती जोर-शोर से बाल दिवस के रूप में मनाता है। शर्म की बात है।

चटगाँव क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान को क्यों दिया गया?

इस क्षेत्र में बौद्धों की संख्या ९८ प्रतिशत थी। बौद्ध नेताओं को पूरी आशा थी कि गाँधी-नेहरू की कांग्रेस उनका पूरा ख्याल रखेगी इसलिए वे बेफिक्र थे। यह क्षेत्र समुद्र से लगा हुआ है इसलिए आयोग इसे भारत को देना नहीं चाहता था। उसने पक्षपात करते हुए सारा क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान को यह लिखकर दे दिया कि पाकिस्तान इस क्षेत्र को स्वशासन का दर्जा देगा ताकि बौद्धों का बहुमत बना रहे। यह निश्चय गलत था। बौद्धों को हिंसक- निर्दयी, आक्रामक सोच वाले पाकिस्तानी नेताओं के हवाले कर दिया। पाकिस्तान ने उन्हें स्वशासन नहीं दिया। अब वहाँ बौद्ध ९८ प्रतिशत से घटकर ५० प्रतिशत रह गए हैं। आयोग को १० मील (१५ किलोमीटर) की जमीन पूर्वी पाकिस्तान को देनी चाहिए थी ताकि समुद्र उसी के पास रहे और शेष जमीन भारत को देकर निष्पक्षता से काम करना चाहिए था लेकिन उसने यहाँ भी जिन्ना का लिहाज किया। कांग्रेस को मजबूत करने से दोनों स्थानों में हिन्दू नुकसान में रहा फिर भी मुर्दा हिन्दू अभी भी गाँधी-नेहरू को महान मानता है। यह देखकर आश्चर्य होता है।

मुँहतोड़ जवाब देना है हमको, पाजी पापीस्तान को

मुँहतोड़ जवाब देना है हम को, पाजी पाकिस्तान को,
क्या समझ रखा है उसने, हमारे हिन्दुस्तान को।

फौजी शासन में चलता है, लोकतंत्र का खेल वहाँ,
ऐसी हालत में बोलो कोई, होगा हमसे मेल कहाँ?

ऊपर-ऊपर मीठी बातें, भीतर घात लगाता है,
अमन-चैन की बात करे वह, पर तलवार चलाता है।

पाकिस्तान और कोई नहीं, रिश्ते में लगता भाई है।
सोये में गर्दन काटे सचमुच वह बड़ा कसाई है।

हिन्दुस्तान का अंग-भंगकर, पाकिस्तान एक देश बना,
भारत का जानी दुश्मन वह, आज हमारा क्लेश बना।

जब भी हुई लड़ाई, जंग में हमने उसे पछाड़ा है,
राजनीति की दुनिया में भी, हमने उसे लताड़ा है।

लेकिन है निर्लज पाक, उस पर नहीं भरोसा है,
हम जानते हैं उसको, जिसने हथियार परोसा है।

बना आतंकी पाक अपाहिज, आतंकी कहलाता है,
आतंकियों का शरणगाह वह, अब उससे ही घबड़ाता है।

जिन साँपों को पाला उसने, आज वही अब काट रहे,
दुनियाँ देख रही पाक को, किसके जूते वह चाट रहे।

भारत का बच्चा-बच्चा सब, वीर व्रती सेनानी है,
शंकर-प्रलयंकर हैं हम, हर नारी शिवानी है।

दुश्मन से क्या, कभी मौत से, कहीं नहीं हम डरते हैं,
जो चाहे लड़ना हमसे, हम जंग में उनसे लड़ते हैं।

राणा की तलवार हमी हैं, हमीं कुँवर का भाला है,
धूल चटा देते हैं उसको, जिससे पड़ता पाला है।

बढ़ो जवानो! हटो न पीछे, वन्दे मातरम् नारा है,
भारत के वीर सपूत सुनो, यह प्यारा देश तुम्हारा है।

● डॉ. लक्ष्मी निधि

न्यूबाराद्वारी, साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)

चलभाष : ९९३४५२१९५४



कर्नाटक में शिव भक्त लिंगायत १७ प्रतिशत हैं किन्तु...

नवम्बर-दिसम्बर २०१८ के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की ओर से लिंगायत समुदाय को यह आश्वासन भी दिया गया था कि उसकी सरकार बनती है तो वह उन्हें अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाएगी ताकि अल्पसंख्यकों को मिलने वाली विशेष सुविधाएँ उन्हें भी मिलें। स्मरण रहे कि शिव भक्त हिन्दू होते हुए भी लिंगायत समाज अपने शवों को बैठाकर गाड़ते हैं अन्य समुदायों की भाँति जलाते नहीं हैं।

प्रतिक्रिया : ● कांग्रेस सदैव हिन्दू विरोधी कार्य करती है अतः उसने गलत आश्वासन दिया जिसकी निन्दा की जाती है। ● हिन्दू संगठनों के नेताओं को, लिंगायत धर्म सभा के नेताओं से, वार्ता करके, उन्हें समझाना चाहिए कि शिव दाह सर्वश्रेष्ठ अन्तिम संस्कार है। अतः वे भी बैठाकर शिव गाड़ना धीरे-धीरे बन्द करें और श्मशान भूमि पर दाह संस्कार आरम्भ करें। ● लिंगायत धर्मसभा के नेताओं को, प्रयागराज के कुम्भ मेले में, विशेष रूप से बुलाकर शिव दाह करने की उपयोगिता और उसके लाभ, विभिन्न धार्मिक पण्डितों द्वारा बताए जाने चाहिए। ● अब राहुल गाँधी द्वारा उन्हें बताना चाहिए कि उसके पापा-दादा- दादी-नाना का भी शिव दाह हुआ था अतः शिव भक्तों में समानता होनी चाहिए।

● इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक ● सतीशचन्द्र गोयल, अध्यक्ष सावरकर वाद प्रचार सभा, १८/१८६, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सार्थकता

पिछला अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०१८ दिल्ली में सम्पन्न हुआ। यह एक अनूठा महासम्मेलन था जिसकी प्रशंसा चन्द शब्दों में नहीं की जा सकती। यह जितना भव्य था उतना ही सार्थक था। इसके पीछे आयोजकों और कार्यकर्ताओं की दूरदर्शिता, सुव्यवस्था की बीरीकियों पर पैनी दृष्टि, स्वच्छता, आवास, आहार, अल्पाहार से लेकर विभिन्न पाण्डालों में विभिन्न विषयों को प्रदर्शित करने वाले आयोजन उत्कृष्ट कोटि के थे। हम इस महासम्मेलन की सार्थकता पर विचार करेंगे।

इन दृष्टिकोणों से अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्थक रहा- आर्य एकता, आर्य मिलन, आर्य सत्संग, आर्य परिचय, आर्य तीर्थ महाकुंभ, आर्य प्रेरणा, आर्य सामग्री प्राप्ति, आर्यजनों का विदेशों से आगमन, आर्य विश्वबुन्धुत्व भावना, आर्य विश्वशान्ति का अप्रतिम उदाहरण, आर्य वीर दल का सांगठनिक प्रदर्शन, आर्य विद्वानों का संगम, आर्य पुस्तक सम्प्राप्ति, आर्य भविष्य योजना, आर्य मैत्री भावना का उद्भाव, आर्य सम्बन्धों का सूत्रीकरण, आर्य विचारों का विश्वस्तर पर प्रचार-प्रसार, कृण्वन्तो विश्वमार्म्य का सार्थक प्रयोगशालावत मंथन, आर्य विचार सम्प्रेषण का विशालतम मंचस्थल, आर्य दिव्य भावनाओं का उदयन, आर्य संन्यासियों-मनीषियों का दर्शन-मिलन आदि।

ऐसे महासम्मेलन रूपी संगम में हम अपने अन्तःकरण का परिष्कार कर सकते हैं। मन को ज्ञान जल से धो सकते हैं। आत्मा को आनन्द से आप्लावित कर सकते हैं। यह पावन, प्रेरक स्मृतियाँ लेकर आता है जिसकी यादगारी आजीवन बनी रहती है। अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में बहुत सी नई बातों की जानकारी प्राप्त होती है और आर्यजन एक-दूसरे के निकट आते हैं। भावनात्मक सम्बन्धों की कड़ी जुड़ी रहती है। यही वह तीर्थ है जिसकी सार्वभौमिक आर्य विचार क्रान्ति के तट पर आर्यजन एकत्र होते हैं। हम सम्मेलन में कुछ प्राप्त करने, जानने, मिलन की दृष्टि से जाते हैं। यही सब प्रेरक बातें महासम्मेलन को सार्थक बनाती है। ऐसे महासम्मेलन आगे भी होते रहना चाहिए।

ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राज.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयन्ति मनाई गई

राष्ट्र के पितामह थे स्वामी दयानन्द सरस्वती : लाम्बा

झुंझनू। १२ फरवरी को स्वामी दयानन्द सरस्वती की १२३वीं जयन्ति लाम्बा कोचिंग कॉलेज झुंझनू में उत्सव के तौर पर मनाई गई। संस्था निदेशक शुभकरण लाम्बा, शिक्षाविद टेकचंद शर्मा, प्रोफेसर रमेश, प्रोफेसर अनिल, सुरेन्द्र सोहू, प्रमोद पुनिया व संस्था के सैकड़ों सेना भर्ती अभ्यर्थियों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किए और उन्हें नमन किया। निदेशक लाम्बा ने अपने सम्बोधन में कहा कि जहाँ महात्मा गाँधी राष्ट्र के

राष्ट्रपिता थे। वहाँ स्वामी दयानन्द सरस्वती राष्ट्रपितामह थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान स्वतंत्रता आन्दोलन में सर्वाधिक था। वे पराधीन भारत के प्रथम व्यक्ति थे। जिन्होंने १८५७ के स्वतंत्रता आन्दोलन में जोर देकर कहा था कि भारत भारतीयों का है और अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही होगा। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वराज्य का जो संदेश दिया था। उसको बाल गंगाधर तिलक ने अपनाया और 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया। वे भारत की स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव रखने वाले प्रथम भारतीय थे। इसलिए वे भारत के पितामह थे और शिक्षाविद टेकचंद शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना कर मानव जाति की सेवा की। सुरेन्द्र साहु ने अपने सम्बोधन में कहा स्वामीजी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्धविश्वासों और सामाजिक बुराइयों पर करारा प्रहार किया और अपने सद्कर्म और श्रेष्ठ ज्ञान से समाज में राष्ट्रीय चेतना जागृत की। कार्यक्रम में सैकड़ों सेना भर्ती अभ्यर्थी थे।

आचार्यजी का वेद पर हुआ विख्यान

रामगढ़ शेखावटी। भारत वर्ष के विख्यात मनीषी एवं प्रखर समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रत्यक्ष शिष्य महात्मा कालूरामजी के आश्रम 'वेद मन्दिर' के परिसर में मौनी अमावस्या के दिन ४ फरवरी को आर्य समाज रामगढ़ शेखावटी का अर्द्धवार्षिक उत्सव हुआ।

इस अवसर पर व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं आर्य समाजी विद्वान आचार्य रामगोपाल सैनी ने विद्वानों द्वारा अनछुए-विषय पर व्याख्यान में बताया कि चारों वेदों के मंत्रों की रचना केवल पुरुष ऋषियों ने ही नहीं की है अपितु नारी ऋषिकाओं ने भी की है। अन्धविश्वासी लोग महिलाओं द्वारा वेद पढ़ने और वेद मंत्रों को उच्चारण करने का विरोध करते हैं जबकि महिला ऋषिकाओं ने वेद मंत्रों की रचनाएँ की हैं।

आचार्यजी ने लोपामुद्रा, अपाला, यमी, वैवस्वति, घोषा, कृतयशा, विश्ववारा आत्रेयी आदि ३३ ऋषिकाओं के नाम लेकर उनके द्वारा रचित अध्यायों, सूक्तों एवं ऋचाओं का विवरण प्रस्तुत किया। बीकानेर से पधारे विद्वान आचार्य शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि आचार्यजी को यह शोध विश्वविद्यालय के शोध छात्रों तक पहुँचाना चाहिए।

गुरुकुल प्रवेश सूचना

देवयोग गुरुकुल संस्थान द्वारा संचालित- वेदयोग महाविद्यालय जो शास्त्री (बी.ए.) से आचार्य (एम.ए.) पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, रोहतक हरियाणा से सम्बद्ध है। कक्षा तीसरी से लेकर बारहवीं पर्यन्त म.प्र. बोर्ड भोपाल से सम्बद्धता प्राप्त है। प्रवेश १ मई से ३० जून तक। विद्यार्थी स्वस्थ, आज्ञाकारी, अनुशासनप्रिय होना चाहिए। कम विकलांग छात्र भी प्रवेश ले सकते हैं। यह गुरुकुल खण्डवा जिले से जावर-मून्दी-पुनासा मार्ग पर २० कि.मी. दूर केहलारी ग्राम के निकट हरे-भरे वृक्षों एवं शान्त क्षेत्र में स्थित है।

सम्पर्क : आचार्य सर्वेश

चलभाष : ९१७९१८३८३३, ९१६५१६८१५८

आर्य समाज स्थापना दिवस महोत्सव

दिनांक : ४ से ६ अप्रैल २०१९ तक

आर्य समाज बूढ़ा, जनपद मन्दसौर (म.प्र.) के तत्वावधान में प्रतिवर्ष जनपद स्तर पर क्षेत्र के स्थान- स्थान पर आयोजित किए जाने वाला आर्य समाज स्थापना दिवस महोत्सव वर्ष २०१९ में दिनांक ४ से ६ अप्रैल तक ग्राम- बूढ़ा में सम्पन्न किया जाना निश्चित है। इस अवसर पर समस्त धर्मानुरागी बन्धुगण सादर आमन्त्रित हैं।

आमंत्रित महानुभाव

स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती, पलवल (हरियाणा)

डॉ. वेदप्रकाशजी शर्मा, भोपाल,

सेवानिवृत्त पुलिस महानिरीक्षक एवं योग से व्यसन मुक्ति विशेषज्ञ

पं. कुलदीप जी, भजनोपदेशक, बिजनौर (उ.प्र.)

सम्पर्क : रामभजन पाटीदार- ९५८४८३५०४७

पं. सत्येन्द्र आर्य- ९४०६६७५४२३

वेदकथा

दिनांक : १८ से २१ अप्रैल २०१९ तक

आर्य समाज धामनोद, जनपद रतलाम (म.प्र.) के तत्वावधान में प्रभावशाली सुरुचिपूर्ण एवं आकर्षक शैली में वेदकथा का आयोजन किया जा रहा है। वेदानुरागी समस्त धार्मिकजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

दर्शनाचार्य प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरनगर (रोहतक)

पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया (म.प्र.) भजनोपदेशक

सम्पर्क : विकास आर्य- ९१७९७८४८०८

शान्तिलाल पटेल- ९००९७२१३९०

शेखर आर्य (सैलाना)- ९५८४२२६५५०

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान, जनपद : सहारनपुर (उ.प्र.) के निर्वाचन ३ फरवरी २०१९ को सम्पन्न होकर नवीन कार्यकारिणी का गठन निम्नानुसार किया गया। **संरक्षक** : वेद मुनिजी, शशिप्रभा गुप्ता, **प्रधान** : राजेश आर्य, **उप प्रधान** : कैवरपाल आर्य, **मन्त्री** : अमित कुमार आर्य, **उपमन्त्री** : श्रवण सैनी, **कोषाध्यक्ष** : शशिकान्त गुप्ता, **आय-व्यय निरीक्षक** : संजय गुप्ता, **पुस्तकाध्यक्ष** : यशपाल गुप्ता, **प्रचार मन्त्री** : डॉ. प्रमोद गुप्ता, **प्रतिनिधि आर्य सभा** : कैवरपाल, वेदभूषण गुप्त, अमित आर्य, **अन्तरंग सदस्य** : शशिप्रभा गुप्ता, वेदभूषण गुप्त, **आर्य सभासद** : सुरेन्द्र कुमार, पूनम गुप्ता, सोनू कुमार, सुमित कुमार गुप्ता, सतीश कुमार अधिवक्ता, वेदांश आर्य, प्रियंका आर्य, अनिल गुप्ता, प्रफुल्ल गुप्ता, दीपेश गुप्ता, ब्रह्मसिंह, चरणसिंह, राजपाल का मनोनयन किया गया।

आर्षबोध भाग- ११

१. आयुवेदाचार्यों के मतानुसार मानव तन की आयु कम से कम सौ वर्ष और अधिक से अधिक चार सौ वर्ष हुआ करती है। स्वास्थ्य के नियमों का पूर्णतया पालन करके आयु बढ़ाई जा सकती है।

२. जन्म से पहले जीव किन-किन योनियों में कब तक कहाँ-कहाँ रहा और मृत्यु के बाद किन-किन योगियों में उसे कहाँ-कहाँ कब तक रहना है यह किसी भी जीव को मालूम नहीं, जबकि पुनर्जन्म होता है।

३. देह त्याग कर जाने वाले जीव की सद्गति अथवा दुर्गति उसके कर्मों के अनुसार होती है। उसके वंशज मृत शरीर की अन्त्येष्टि के अतिरिक्त दिवंगत जीवात्मा के लिए कुछ भी नहीं कर सकते।

यदि आप हवन प्रवचन (सत्संग) करवाना चाहें तो सम्पर्क कीजिए।

—पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री, करणावती (गुजरात)

श्री शर्माजी, सादर नमस्ते।

आप ईश कृपा से सानन्द में होंगे। आपकी पुत्री सौ. भाग्यश्री का विवाह सानन्द सम्पन्न हुआ। आपने आज के युग में सात्विक, वैदिक परम्परा के साथ इस मांगलिक कार्य को सम्पन्न किया। आपने दहेज एवं आडम्बर को दूर से ही नमस्ते की। ऐसा सुअवसर दोनों परिवार के लिए आदर्श है। आज के भौतिकवाद के चकाचौंध में अधिकांश परिवार लोभ के सागर में डूबे रहते हैं इससे आपसी सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता। परिवार टूट जाते हैं। आपने इस शुभावसर पर वैदिक भजन संध्या का आयोजन किया जो अनूठा उदाहरण है। आपने समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया है। मैं हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूँ एवं अनेकानेक साधुवाद देता हूँ। **सौ. भाग्यश्री एवं स्नेही अर्जुनजी का दाम्पत्य जीवन सानन्द सम्पन्न हो।** उत्तरोत्तर उन्नति के पथ की ओर अग्रसर हो तथा दोनों परिवारों की मर्यादा सदैव संजोये रहें रही ईश्वर से मनोकामना है। आप सभी शतायु हों। धन्यवाद। **देवमुनि- अजमेर (राज.)**

वैदिक संसार के प्रकाशन के सम्बन्ध में

घोषणा फार्म-४ (नियम ८ देखिए)

- | | |
|--|--|
| १. प्रकाशन का स्थान | १२/३, संविद नगर, इन्दौर (मप्र) |
| २. पत्र का नाम | वैदिक संसार |
| ३. प्रकाशन अवधि | प्रतिमाह |
| ४. मुद्रक का नाम | इन्दौर ग्राफिक्स,
२४, कुँअर मंडली, इन्दौर |
| क्या भारतीय नागरिक हैं? | हाँ |
| ५. सम्पादक का नाम | गजेश शास्त्री |
| क्या भारतीय नागरिक हैं? | हाँ |
| ६. प्रकाशक का नाम | सुखदेव शर्मा |
| क्या भारतीय नागरिक हैं? | हाँ |
| ७. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक | सुखदेव शर्मा
१२/३, संविद नगर, इन्दौर |
| के साझेदार या हिस्सेदार हों | |

सुखदेव शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : मार्च, २०१९

सुखदेव शर्मा (प्रकाशक)

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

विगत नवम्बर अंक का शेष भाग तथा २१ नवम्बर २०१८ से १५ मार्च २०१९ तक

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि



श्री गोविन्द राम जी आर्य सुपुत्र श्री

अम्बारामजी यादव, निवासी देपालपुर, जनपद-इन्दौर (म.प्र.) सम्भागीय उपप्रधान- मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल एवं इन्दौर संसदीय क्षेत्र से सांसद माननीय श्रीमती सुमित्रा महाजन (लोकसभा अध्यक्ष) के जिला पंचायत प्रतिनिधि हैं। ७५ वर्ष की आयु अवस्था के उपरान्त भी आप एक युवा से अधिक सक्रिय और आर्य समाज के

सेवा कार्यों के प्रति समर्पित रहते हैं। गाय को राष्ट्रीय शाकाहारी पशु घोषित करवाना तथा वेदों की स्थापना संसद कक्ष में हो आपके जीवन की महती आकांक्षा है इसके लिए आपने पुरजोर प्रयास किया है और कर रहे हैं। आपके द्वारा देपालपुर तहसील के अनेक ग्रामों के मन्दिरों में वेदों की स्थापना की गई। गाँव-गाँव में मांसाहार एवं नशा मुक्ति के अभियान चलाए गए। वर्तमान में आप गाँव-गाँव जाकर युवाओं को एकत्रित कर उन्हें यज्ञ करना सिखा रहे हैं तथा आर्य समाज स्थापना की प्रेरणा दे रहे हैं। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि मध्यप्रदेश ही नहीं सम्पूर्ण भारत भर में आर्यजगत् में कोई पदाधिकारी वर्तमान में आपके समकक्ष दिखाई नहीं देता जिसका जीवन पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त होकर निष्पक्ष, निःस्वार्थ भाव से आर्य समाज की चिन्ता के साथ सोते हैं और आँख खुलते ही आपका चिन्तन और मोबाइल आर्यसमाज के कार्यों के लिए प्रारम्भ हो जाता है। आज किस गाँव में जाना है, कहाँ हवन करवाना है, किस गाँव में हवन कुण्ड नहीं है, किस गाँव में सामग्री नहीं है, कहाँ साहित्य पहुँचाना है आदि- आदि आपका विस्तृत जीवन परिचय अप्रैल २०१८ के अंक में पृष्ठ-३९ पर प्रकाशित किया गया था। आपका सम्पर्क क्रमांक ९४२४०१२४७१ है। वैदिक संसार परिवार आपके स्वस्थ दीर्घायु यशस्वी जीवन तथा समस्त परिवारजनों की सुख शान्ति की कामनाएँ करता है। आपके द्वारा पुनः वैदिक संसार के त्रैवार्षिक बनाए गए सदस्य निम्नानुसार हैं :

मध्यप्रदेश, जनपद- इन्दौर : श्री इन्द्रसिंह बालाजी यादव- अटावदा, श्री सचिन कैलाश जी 'झुण्डावाले'- अटावदा, श्री जीतेन्द्र राधेश्याम जी पंवार- खड़ी, श्री मनोहरसिंह कन्हैयालाल जी- खड़ी, श्री राम भीमसिंह जी वर्मा- खड़ी, श्री महेश शंकरसिंह जी- खड़ी, द रियल जीनियस एकेडमी विद्यालय- अटावदा, श्री विष्णु सुरेश सिंह- खड़ी, श्री भारतसिंह हीरासिंहजी- खड़ी, श्री दिनेश मोतीरामजी- कटकोदा, श्री कृष्ण सीतारामजी भारती- चान्देर, श्री कंचनसिंह साहेबसिंह दरबार- कर्की, श्री ईश्वर गिरवरसिंहजी- कर्की, श्री रायसिंह दयाराम जी 'झुण्डावाले' अटावदा, श्री मांगीलाल कैलारामजी- अटावदा, श्री अभिषेक लीलाधरजी यादव- अटावदा, श्री लक्ष्मीचन्द मांगीलाल जी जांगिड- गोकलपुर, श्री बदीलाल अम्बाराम जी- हातोद, श्री आनन्दसिंह अम्बाराम जी ठाकोर-

उमरिया खुर्द (दुधिया), श्री सोहनसिंह हरिराम जी- खड़ी, श्री सत्यनारायण रंगलाल जी विजयवर्गीय- अटावदा, श्री राहुल दिलीपजी यादव- कराड़िया, श्री रामेश्वर मंशाराम जी- गोहान, श्री दिनेश घनश्याम जी यादव- गोहान, नी विशाल जगदीश जी मकवाना- चान्देर, श्री रोहन शंकरसिंह जी मकवाना- चान्देर, सेठ श्री ऊंकारजी- देपालपुर, श्री हेमराज कनीरामजी- देपालपुर, श्री कान्तिरामजी जाट देपालपुर, डॉ. भवानीशंकर फकीरचन्दजी व्यास- देपालपुर, श्री चन्द्रशेखर इन्द्रसिंह जी यादव- देपालपुर, श्री राजेन्द्र जी जैन- देपालपुर (वार्षिक), श्री प्रेमसिंह भंवरसिंहजी यादव- देपालपुर (वार्षिक), श्री दीपक कस्तूरी जी सुदामा नगर (डी) इन्दौर (वार्षिक), श्री हरिशंकर जगन्नाथजी यादव- गोहान (वार्षिक)।

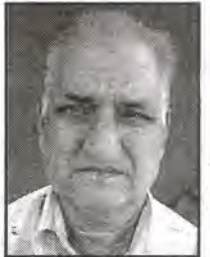
जनपद- उज्जैन : श्री कान्हिसिंह जी राठौर पूर्व अध्यक्ष जिला पंचायत उज्जैन, बड़नगर (वार्षिक)।

जनपद- भिण्ड : श्री मानसिंह जी यादव, उपप्रधान- मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल- गोरमी, श्री अरुण कुमार जी उपाध्याय- गोरमी, श्री सुभाषचन्द्र जी स्वर्णकार- गोरमी, श्री नरेश जी ओझा- गोरमी (वार्षिक), श्री सन्तोषकुमार जी नामदेव- गोरमी (वार्षिक)।

श्री मोहनलालजी दशोरा 'आर्य', सुपुत्र श्री कचरूमल जी दशोरा, निवासी :

नारायणगढ़, जनपद- मन्दसौर (म.प्र.) आप वैदिक संसार के ७८ वर्षीय वो युवा हैं जिनको शारीरिक अक्षमता तथा स्वास्थ्य समस्याएँ आड़े नहीं आती। कलम रूपी तलवार से आप अज्ञानता के तिमिर का नाश कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रकाश फैलाने में हर क्षण तत्पर रहते हैं। आप वैदिक संसार के ओज-तेज से भरे वो खिलाड़ी हैं जो किसी को वैदिक संसार का सदस्य बनने का कहने में संकोच नहीं करते। वैदिक संसार की रसीद बुक रूपी बल्ला हाथ में लेकर आपने वर्ष २०१८ में मात्र एक वर्ष में शतक लगाकर अन्यो के लिए एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। आपके द्वारा बनाए गए सदस्यों का विवरण मई तथा अक्टूबर २०१८ के अंकों में आपके विस्तृत जीवन परिचय के साथ प्रकाशित किया जा चुका है। वैदिक संसार परिवार आपके स्वस्थ, दीर्घायुष्य जीवन तथा समस्त परिवारजनों की सुख-शान्ति की कामनाएँ व्यक्त करता है। आपका चलभाष क्र. ९५७५७९८४१२ है। आपकी प्रेरणा से बने वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं।

मध्यप्रदेश, जनपद- मन्दसौर : श्री दीनदयाल अमरदास जी बैरागी- मन्दसौर, श्री दिनेश जी दक 'पत्रकार'- नारायणगढ़, श्री मुकेश नारायणजी आशर्मा- नारायणगढ़, श्री जगदीश जी सोनी- नारायणगढ़, श्री नन्दकिशोर जी इन्दौरा- नारायणगढ़, श्री राजेश कुमार ओमप्रकाश जी



इलोरिया- नारायणगढ़, श्री सूर्यप्रकाश राजमलजी इलोरिया- नारायणगढ़, श्री हिमांशु बालारामजी पोरवाल- मेलखेड़ा, डॉ. मुकेश जी पाटीदार- नारायणगढ़, श्री शिशिर विजयवर्गीय 'प्रधानाध्यापक'- मल्हारगढ़, श्री शिवनारायण जी पाटीदार- नारायणगढ़, श्री भगताराम रामगोपाल जी आर्य- नारायणगढ़, श्री विष्णुदत्त जी भट्ट- बरखेड़ा वीरपुरिया, श्री राजेन्द्र बसन्तिलाल जी टेलर- मल्हारगढ़, श्री एस.के. बलदार 'दन्त चिकित्सक'- नारायणगढ़, श्री बंशीलाल जी आर्य- नारायणगढ़, ठा. मोहनसिंह जी पंवार- नारायणगढ़, श्री सुरेश जी रूपरा- नारायणगढ़, श्री अशोक हुक्मीचन्द जी बोराना- नारायणगढ़, श्री रामचन्द्र जी करूण- नारायणगढ़, श्री मथुरालाल जी भगत पाटीदार- नारायणगढ़, श्री विजयकुमार नाथुलाल जी बरवरिया- नारायणगढ़, श्री विनोद कन्हैयालाल जी इलोरिया- नारायणगढ़।

जनपद- नीमच : श्री भारतसिंह जी चौहान- विकास नगर नीमच।

श्री भारतेन्द्र जी आर्य, सुपुत्र श्री फूलचन्द जी पाटीदार (स्मृति शेष), निवासी : खरसौदकलां, जनपद- : उज्जैन (म.प्र.)। आप गहन स्वाध्यायशील आर्य समाजी व्यक्ति हैं। आप वैदिक धर्म सिद्धान्तों तथा महापुरुषों व ऐतिहासिक घटनाओं पर काव्य शैली में सुन्दर रचनाओं का सृजन भी करते हैं। वैदिक संसार के प्रारम्भ दिनों में आपकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं तथा आपने वैदिक संसार के सदस्य बनाकर सराहनीय सहयोग किया है। आपकी प्रेरणा से बनाए गए वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं-

मध्यप्रदेश, जनपद- उज्जैन : श्री जानकीलाल काशीराम जी चौहान- खरसौदकलां (आजीवन सदस्य), श्री अरुण कुमार भेरूलाल जी पाण्डे- खरसौदकलां, श्री गजानन्दजी रामी सम्पादक 'वनमाली'- उज्जैन, श्री लालजी गिरधारीलाल जी पाटीदार- खरसौदकलां, श्री खेमराज शंकरलालजी परमार- खरसौदकलां (त्रैवार्षिक), श्री महादेव रामचन्द्र जी पाटीदार- खरसौदकलां (द्विवार्षिक)।

जनपद- रतलाम : श्री लीलाशंकर हीरालालजी पाटीदार- बिलपांक (द्विवार्षिक)।

जनपद- धार : श्री गिरधारीलाल गोवर्धनलालजी पाटीदार- बालोदा माजी

जनपद- मन्दसौर : श्री देवीलाल भंवरलाल जी पाटीदार- देहरी।



श्री नन्दलालजी निर्भय 'पत्रकार एवं भजनोपदेशक' - बहीन (आप सुविज्ञ साहित्यकार हैं आपकी उत्कृष्ट रचनाओं से वैदिक संसार अलंकृत होता है। आपकी प्रेरणा से वार्षिक सदस्यों की वृद्धि वैदिक संसार परिवार में हुई है। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा आपके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना करता है- सम्पादक

जनपद- पलवल : श्री जगदीश चन्द्र जी शर्मा- बहीन, श्री भीमसिंह गिराज जी जांगिड़- बहीन, श्री केशवदेव जी भारद्वाज 'अधिवक्ता'- पलवल, श्री मुनीष जी भारद्वाज 'अधिवक्ता'- मोहल्ला कानगोयान, श्री

विजय कुमार देवेन्द्र कुमार जी आर्य- अलीमेवा। श्री जगताराम मंगलजी- बहीन।

जनपद- नूँह (मेवात) : श्री सुभाषचन्द्र जी आर्य- पुन्हाना, श्री दुलीचन्द जी वाजपेयी- पुन्हाना, श्री रामअवतार जी आर्य-पुन्हाना, श्री शमसेर जी गोस्वामी- पुन्हाना, श्री प्रकाशचन्द जी जांगिड़ भूतपूर्व जिलाध्यक्ष- पुन्हाना, श्री शेरसिंह जी सैनी- पुन्हाना।

जनपद- फरीदाबाद : श्री वीरेन्द्र रामकिशन जी शर्मा- हरफला।

वेद विद्या मन्दिर धर्मपुरी, जनपद- इन्दौर के प्रमुख श्री मोहनलालजी शर्मा की प्रेरणा से-

जनपद- इन्दौर : श्री कैलाशचन्द्र माँगीलाल जी शर्मा- मुण्डला श्रीराम, श्री हरिसिंह जी- प्रेमनगर (धर्मपुरी), श्री कैलाश भंवरलालजी चौधरी- जेतपुरा।

जनपद- धार : श्री बद्रीलाल नन्दराम जी पाटीदार- तिलगारा, श्री नारायण नन्दरामजी पाटीदार- तिलगारा, श्री मोहनलाल नन्दरामजी पाटीदार- तिलगारा।



महाराष्ट्र, जनपद- परभणी : श्री विजय कुमार मदनलालजी अग्रवाल- परभणी तथा आपकी प्रेरणा से श्री मधुकर वामनराव जी पांचाल- परभणी, श्री शिवगिर भगवानगिर जी गीरी-परभणी, श्री रमेश जी माण्डे- परभणी, श्री दत्तात्रय चन्द्रशेखर जी बुलबुले- परभणी, श्री गौरीशंकर देवकीनन्दन जी अग्रवाल- परभणी, श्री दयानन्द बाबूराव जी आर्य- परभणी, डॉ. धनंजय शंकर राव जी अवठेकर- परभणी, श्री कमल किशोर भागीरथजी अग्रवाल- परभणी, श्री बालकिशन राधाशिन जी बिरला- परभणी।

जनपद- कोल्हापुर : श्री प्रीतम बाबूराव जी भोसले- कप सांगावा।

अन्य महानुभावों द्वारा किया गया विविध सहयोग

स्वैच्छिक अनुदान

मध्यप्रदेश, जनपद- होशंगाबाद : आर्य गुरुकुल महाविद्यालय- नर्मदापुरम।

गुजरात, जनपद- आणंद : मेजर कन्हैयालाल जी (कनुकाका)- आणंद।

जनपद- बड़ौदा : श्री शंकरलाल नागूजी शर्मा- बड़ौदा।

हिमाचलप्रदेश, जनपद- मण्डी : महात्मा चैतन्य मुनिजी- सुन्दरनगर।

राजस्थान, जनपद- जयपुर : श्री पुरुषोत्तम जी गोठवाल- जयपुर।

हरियाणा, जनपद- सोनीपत : श्री अतरसिंह मामनसिंह जी जांगिड़- गोहाना।

जनपद- रेवाड़ी : श्री सत्यपाल दातारामजी आर्य- नैचाना।

जनपद- गुरुग्राम : श्री लक्ष्मीनारायण जी शर्मा- हीरानगर, गुरुग्राम।

जनपद- रोहतक : श्री वजीरसिंह रामकला जी आर्य, मे. रामकला एण्ड सन्स- काठमण्डी रोहतक।

राजस्थान, जनपद- बाड़मेर : श्री तेजाराम गणेशरामजी सुथार-

उमरलाई।

गुजरात, जनपद- राजकोट : श्री प्रधान/मन्त्री जी, आर्य समाज मायाणी नगर- राजकोट।

मध्यप्रदेश, जनपद- इन्दौर : श्री प्रधान/मन्त्री जी, आर्य समाज, महू, श्री अशोक नानूरामजी शर्मा (रोड़वाल)- सुदामा नगर, इन्दौर, श्री पुष्कर बिरदीचन्द जी शर्मा- स्वस्तिक नगर, इन्दौर।

जनपद- मन्दसौर : श्री प्रधान/मन्त्रीजी, आर्य समाज- गरोट, श्री मोहनलाल छीतरमल जी शर्मा- गरोट।

जनपद- भोपाल : महात्मा आर्य मुनिजी- ललरिया, श्री आर्य जीवन सिंह मुंशीलालजी परमार- रतनपुर सड़क (भिमरौद)।

जनपद- उज्जैन :

पंचवर्षीय

राजस्थान, जनपद- बाड़मेर : श्री बुदाराम सुखजी सुथार- जेठन्तरी (पारलू)।

त्रैवार्षिक

मध्यप्रदेश, जनपद- इन्दौर : डॉ. विनोदजी आहलुवालिया- इन्दौर-१२, श्री शक्तिनाथ इन्द्रदेवजी गुप्ता- इन्दौर-०२, श्री कन्हैयालाल शिवजी भाई ठक्कर- इन्दौर-०२।

जनपद- रतलाम : श्री माँगीलाल बगदीराम जी परमार- धामनोद, श्री माँगीलाल वेणीरामजी काजी- धामनोद।

जनपद- मन्दसौर : श्री सुभाषचन्द्र जी पाटीदार- टकरावद।

जनपद- बड़वानी : श्री प्रहलाद शंकरलालजी शर्मा- बड़वानी।

जनपद- नीमच : श्री राजेन्द्र मोहनलाल जी पाटीदार- जावी, श्री शम्भूलाल नानालाल जी जालरिया।

जनपद- भिण्ड : श्री कल्याणसिंह जी परमार- गोरमी।

जनपद- शाजापुर : श्री रामचन्द्र घासीराम जी शर्मा- पगरावदकलां, श्री बृजकिशोर प्रेमनारायण जी जावरिया- अवन्तिपुर बड़ोदिया।

जनपद- सीहोर : श्री रमेशकुमार भगवतसिंह जी वर्मा- मुहाली।

जनपद- धार : श्री रामचन्द्र कस्तूरचन्द जी शर्मा- धारसीखेड़ा।

जनपद- उज्जैन : श्री राजेन्द्र जी शर्मा- उज्जैन, श्रीमती मंजूलता ओमप्रकाश जी अग्रवाल- उज्जैन।

जनपद- रायसेन : श्री आकाश जी रघुवंशी- मण्डीदीपा।

जनपद- आगर : श्री अन्तरसिंह जी आर्य- पिपलिया नानकर।

राजस्थान, जनपद- अजमेर : डॉ. नरेन्द्रसिंह हेमसिंह जी चौहान- ब्यावर, श्री हेमन्त कुमार ईश्वरलाल जी आर्य- अजमेर, श्री मंगलसिंह जी अनाकर- ब्यावर, श्री बाबूलाल सूरजमल जी जांगिड़- अजमेर।

जनपद- कोटा : श्री देवेन्द्र जी सक्सेना- भीमगंज मण्डी।

जनपद- जोधपुर : श्री चेतनप्रकाश जी आर्य- जोधपुर।

जनपद- नागौर : श्री नानूराम डाराराम जी आर्य- निम्बीजोधा।

जनपद- जयपुर : श्री अशोक कुमार रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा- जयपुर।

महाराष्ट्र, जनपद- रायगढ़ : डॉ. ओमनाथ चण्डीप्रसाद जी मिश्रा, खोपोली।

जनपद- आकोला : श्रीमान मन्त्री जी, आर्य समाज- आकोट।

जनपद- कोल्हापुर : डॉ. पद्मजा राव साहब जी दरूरे- इच्छलकरंजी।

जनपद- नागपुर : श्री जयन्त बापूराव जी आर्य- नागपुर-२४।

पश्चिम बंगाल, जनपद- सिलीगुड़ी : श्री भगवानदासजी गोयल- खालपाड़ा।

(शेष भाग आगामी अंक में)

शोक-सूचनाएँ

समाज सेवा की धरोहर पर, कर्तव्यों का होता हमेशा गान
समर्पित सेवा भावना से, आपने किये वो सारे काम
याद रहेगा सदैव समाज सेवा में आपका नाम।

स्मृति शेष श्री माँगीलालजी विश्वकर्मा

सुपुत्र श्री देवीलालजी विश्वकर्मा, शासन

डांगरा, निवासी- बैसरापुर, जनपद- शाजापुर

(म.प्र.) का देहावसान दिनांक ३ मार्च २०१९

को ७४ वर्ष की आयु में हो गया। आप

सेवानिवृत्त शिक्षक थे। आपका जीवन सामाजिक

मूल्यों को समर्पित रहा। आप सरल, सहृदयी,

स्वाध्यायशील, सेवा भावी व्यक्ति थे। आप भारतीय किसान संघ तथा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली से सक्रिय रूप से जुड़े

रहे। आप वैदिक संसार के प्रारम्भ से आजीवन सदस्य होकर गहन

स्वाध्याय करते थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती राजूबाई, दो सुपुत्र

प्रवीण कुमार तथा महेन्द्र कुमार का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। आपके

पगड़ी रस्म पर वृहद संख्या में स्नेहीजनों ने उपस्थित होकर अपने

श्रद्धासुमन अर्पित किये। आपके परिवारजनों ने विश्वकर्मा मंदिर उज्जैन

में एक कमरा निर्माण, वैदिक संसार को ११०० रु. तथा अन्य

सामाजिक कार्यों हेतु दान राशि प्रदान की।



स्मृति शेष श्री परसरामजी शर्मा, सुपुत्र

स्मृति शेष छोगालालजी शर्मा (जोपालिया),

पूर्व उप प्रधान अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण

महासभा, दिल्ली, श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज

सेवा समिति पाली (राज.) के संस्थापक तथा

भारतीय रिजर्व बैंक के डीजीएम पद से

सेवानिवृत्त निवासी : मीरा रोड, मुम्बई, मूल

निवासी : बिलाड़ा, जनपद : जोधपुर का निधन ८ मार्च २०१९ को

८६ वर्ष की आयु में हो गया। आप सरल, सहृदयी, मिलनसार,

सेवाभावी, आध्यात्मिक प्रवृत्ति के समर्पित व्यक्ति थे। आप वैदिक संसार

के आजीवन सदस्य थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती विमलादेवीजी

तथा चार सुपुत्र श्री अशोक, श्री रविन्द्र कुमार, श्री राजेश, श्री राकेश

व एक सुपुत्री श्रीमती सीता नागर (जोधपुर) का भरापूरा परिवार छोड़

गए हैं।

वैदिक संसार परिवार समस्त ज्ञात-अज्ञात दिवंगत

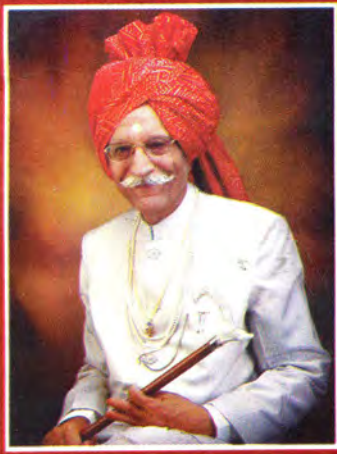
आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।



डॉ. जसवंत संग वंदना : शुभ विवाह सम्पन्न

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान तथा रतलाम सम्भाग के प्रभारी विश्वकर्मा कुल गौरव, वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि, वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार को समर्पित महर्षि दयानन्द के जुझारू सिपाही श्री बंशीलालजी आर्य, निवासी : बरखेड़ा पन्थ, जनपद : मन्दसौर के सुपौत्र डॉ. जसवन्त (सुपुत्र : स्व. किशोर कुमार) का शुभ विवाह दिनांक १०.२.२०१९ को सौ.कां. वन्दना सुपुत्री श्री नन्दकिशोरजी विश्वकर्मा निवासी थड़ौली, जनपद : नीमच (म.प्र.) के संग हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। दिनांक १२ फरवरी को बरखेड़ा पन्थ में आयोजित नव दम्पति को शुभाशीर्वाद समारोह में वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा, आर्य समाज पिपलियामण्डी प्रमुख पं. सत्येन्द्रजी आर्य, श्री रामविलास जी कारपेन्टर-भाटखेड़ी, श्री हेमन्तजी पितलिया- पिपलिया मण्डी, वैदिक साहित्यकार श्री अम्बालालजी विश्वकर्मा, प्रांतीय प्रतिनिधि श्री बाबूलालजी आर्य-टकरावद, श्री रामेश्वरजी आर्य- नैनोरा तथा अन्य गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर वर-वधु को शुभाशीर्वाद प्रदान किया।





महाशय धर्मपालजी

आर्य जगत् हुआ गौरवान्वित

महाशय धर्मपालजी, दिल्ली
आर्य भामाशाह, एम.डी.एच. मसाले वाले

पद्मविभूषण सम्मान से दिनांक १६ मार्च को भारत के
महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द
के हाथों हुए सम्मानित।
वैदिक संसार परिवार हर्षानुभूति के साथ
महाशयजी को बधाई प्रेषित करता है तथा उनके
स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना करता है।



महामहिम से सम्मान ग्रहण करते हुए

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव



ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली



श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)



श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)



श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)



अधि. रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)



श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)



आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)



श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)



श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)



श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रैक्टर
भरतपुर (राज.)



श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)



श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)



श्री गजानन्द जी जांगिड
जा. ब्रा. जिलाध्यक्ष
जालना (महाराष्ट्र)



श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)



श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सार्वदेशिक सभा
अहमदाबाद (गुजरात)



आचार्य सोमदेवजी आर्य
वैदिक धर्मोपदेशक
आर्यवन (गुजरात)



सुश्री अंजलि जी आर्य
वैदिक भजनोपदेशिका
छरौंदा (हरियाणा)



श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)



श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
आगरा (उ.प्र.)



श्री महेंद्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)



श्री किशन जी रडे
वरिष्ठ समाजसेवी
भुसावल (महाराष्ट्र)



श्री सांवरमल जी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
वास्को डीगामा, गोवा



श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)



आ.सर्वेशजी सिद्धान्ताचार्य
वैदिक शिक्षाविद
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)



श्री गोविन्दराम जी आर्य
वैदिक धर्म प्रचारक
देपालपुर (इन्दौर)



श्री मोहनलाल जी वशोरा
चिन्तनशील साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)



श्री बंशीलाल जी आर्य
आर्य नेता
बरखेड़ापन्थ (म.प्र.)



श्री ज्ञानकुमार जी आर्य
वैदिक मनीषी
लातूर (महाराष्ट्र)